राजस्थानी विवाह

राधेश्याम त्रिपाठी

भूमिका

डा. सत्येन्द्र

अर्चना प्रकाशन, अजमेर

अर्चना प्रकाशन का उन्नीसवाँ पुष्प

*

राजस्थानी विवाह

*

रचनाकार :
प्रो० राधेश्याम त्रिपाठी
हिन्दी विभागाध्यक्ष
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

*

प्रथम संस्करण १९७२

*

मूल्य–तीन रुपये पचास पैसे मात्र

*

प्रकाशक :
अर्चना प्रकाशन
१, मेहराहाउस कालाबाग, अजमेर (राज.)

*

अक्षरसंधान :
अर्चना प्रकाशन, अजमेर

*

मुद्रक :
जॉब प्रिण्टिंग प्रेस, अजमेर

भूमिका

—डॉ० सत्येन्द्र

लोक-साहित्य का अत्यन्त महत्वपूर्ण अश है, आनुष्ठानिक वाणी-विलास। प्रत्येक लोकानुष्ठान का जीवन की गहराइयो से सबध है क्योकि अनुष्ठान की समस्त प्रक्रिया एक टोने के रूप मे प्रस्तुत होती है। इसकी सविधि सम्पन्नता से जीवन की सफलता लोक-मानस मे फलती है। अनुष्ठानो के तत्वो मे मूल आदिम मानस व्याप्त रहता है, अत नृतत्व-विज्ञान की दृष्टि मे भी उनका बहुत महत्व हो जाता है। यह आनुष्ठानिक क्षेत्र लोक-जीवन का अत्यन्त विस्तृत क्षेत्र है। इसमे यथा सभव किसी बाहरी हस्तक्षेप को स्थान नही मिल पाता। यही कारण है कि लोक के मूलस्वरूप को हृदयगम करने के लिये जितना आनुष्ठानिक वार्ता पर निर्भर किया जा सकता है उतना किसी अन्य वार्ता पर नही। अत ऐसा प्रत्येक प्रयत्न अभिनदनीय माना जायगा जो उस साहित्य या वाणी-विलास को सग्रह करके प्रकाश मे लाता है। जिसमे आनुष्ठानिक पक्ष की प्रधानता है। प्रो० राधेश्याम त्रिपाठी का यह प्रस्तुत उद्योग इसीलिए श्लाघनीय है।

विवाह मानव-जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। यह एक नही, अनेकानेक अनुष्ठानो से बुना गया सस्कार है। इस सस्कार के लिए जीवन-धारा के लोक-वेद परक दोनो ही किनारे व्यग्र दिखायी पडते हैं। धर्मशास्त्र तथा वैदिक प्रणाली मे भी विवाह सस्कार एक अनोखा स्थान रखता है। लोक का मेधावी पक्ष इसे धर्म तथा अध्यात्म और

नैतिक आदर्श तथा सामाजिक सौकर्य की दृष्टि से यज्ञादिक अनुष्ठानो से सम्पन्न कराता है, और समस्त व्यापार एक उच्च मनीपिता और और दार्शनिकता से सप्रेरित रहता है; किन्तु लोक-पक्ष उन तत्त्वो की स्थापना और सपादना मे व्यस्त रहता है, जिनका कोई शास्त्र नही होता, केवल परम्परा रहती है, वह परम्परा ही उनका शास्त्र है, उसका पालन अत्यन्त तत्परता से ऐसे किया जाता है, मानो जीवन की नीव के मजबूत पत्थर रखे जा रहे हैं। इस दृष्टि से इस सस्कार के ये लोक पक्ष विषयक आनुष्ठानिक कृत्यो को भी देखना होता है, और उसके साथ वाणी-पक्ष को भी। यह वाणी-पक्ष वैवाहिक गीतो का रूप ग्रहण कर लेता है। ये गीत क्या हैं, वस्तुत. विवाह विषयक लोक-मत्र हैं।

श्री प्रो० त्रिपाठीजी ने ऐसे ही राजस्थान के विवाह-गीतो का यह सकलन प्रस्तुत किया है, और उसके साथ एक तद्विषयक ज्ञानवर्द्धक शास्त्रीय व लौकिक विवेचन युक्त भूमिका भी साथ मे दी है। यह उन्होंने अभिनदनीय कार्य किया है। हिन्दी मे इसी प्रकार के प्रत्येक क्षेत्र के सकलनो की आवश्यकता है। ऐसे सकलनो की समस्त भारत व्यापी सामग्री से ही विवाह-सस्कार विपयक भारतीय लोकतत्व प्रकाश मे आ सकते हैं और उनसे हमे अनेक सास्कृतिक और सामाजिक समस्याओ के स्वरूप और मूल का पता चल सकता है।

लोक-साहित्य यो भी अत्यन्त आकर्षक, जीवन्त और शक्ति सम्पन्न होता है। प्रो० त्रिपाठी जी के इस सकलन का मैं समझता हूँ अवश्य ही स्वागत होगा।

५ दिसम्बर १९५९

अपनी बात

लोकगीत देश की आत्मा के परिचायक होते हैं। लोक गीतों में मानव अपने हृदय की निश्छल अनुभूति को वाणी देता है। लोकगीतों की रचना स्वतः होती है, इसके लिए साहित्यिक गीतों की भांति कलात्मक-साधना नहीं करनी पडती। इन गीतों में जीवन की विविधतायें परिलक्षित होती हैं। लोकगीतों का भण्डार अक्षय है और इनकी परम्परा भी उतनी ही प्राचीन है जितनी मानव की सस्कृति और सभ्यता। लोकगीतों मे जीवन की सरसता परिव्याप्त रहती है जिसके द्वारा मनुष्य अपने हृदय के रागात्मक भावों को मूर्त रूप देने मे समर्थ होता है।

राजस्थान मे गाये जाने वाले लोक-गीत भी मानव हृदय की रागात्मक अनुभूति के सजीव चित्र हैं। राजस्थानी लोक गीतों की विविधता, उसके विभिन्न सस्कारों, पर्वों त्योहारों, ऋतुओं एव व्रतों के के माध्यम से दृष्टिगत होती है। मनुष्य उत्पन्न होने से लेकर मृत्यु पर्यन्त इन लोक-गीतों की भाव-रेखाओं से बधा रहता है। ये गीत जन-मानस के समवेत स्वर को वायुमडल मे गु जाने मे समर्थ होते हैं। इनमे लोक-गगा के हृदय का कलकल निनाद मुखरित रहता है। यही कारण है कि पीढी दर पीढी मौखिक परम्परा से जीवित रहते हुए भी इन लोक गीतों की आत्मा अजर अमर है और रहेगी, भले ही इनका वाह्य आवरण भाषा एव युग के वदलते परिवेश के कारण भिन्न प्रतीत होता हो। इसी से इन गीतों मे सर्व सामान्य के स्फूर्तिमय उद्‌गारों की चेतना विद्यमान है।

लोक-गीतों मे भारतीय सस्कृति की एकरूपता दिखाई देती है। भारतीय सस्कृति वैदिक अनुष्ठानों की पोषिका रही है। वैदिक कर्म काण्ड और अनुष्ठानों के प्रयोग द्वारा अमगलजनक प्रभावों के दूर करने और मांगलिक विधान रचने का प्रयत्न चलता रहा। मानव जीवन के

विभिन्न अवसरों पर इनका प्रभाव आज भी परम्परा के रूप मे शास्त्र सम्मत व लोक सम्मत स्वरूप लिए विद्यमान है।

सस्कार मनुष्य जीवन के परिष्कार और शुद्धीकरण के मध्यम बने। धार्मिक विधि-विधानों से युक्त सस्कार शास्त्रीय एव लौकिक पक्षों को उजागर करने मे सक्षम रहे हैं। सस्कारजन्य शास्त्रीय विधान के साथ लोक-विधान भी कम महत्वपूर्ण नहीं रहा है। उनका विशेष पक्ष विविध सस्कारों पर विविध प्रकार के लोक-गीतों द्वारा प्रतिफलित हुआ है। भारतीय धर्म शास्त्रों मे वैसे शोडष सस्कारों को मान्यता दी गई है किन्तु लोक-जीवन प्रमुख रूप से तीन सस्कारो को ही सर्वोपरि मानने लगा--१. जन्म २. विवाह ३. मृत्यु। मनुष्य जीवन मे विवाह संस्कार सर्वोपरि व मगलमय सस्कार माना गया है। विवाह सस्कार मे जहाँ शास्त्रीय प्रणाली मान्य है, वहीं लोक-रीति भी सर्वमान्य है। लोक सस्कार और शास्त्रीय सस्कार दोनों का सम्मिलन आज की विवाह प्रणाली मे देखा जा सकता है। लोक सस्कारों का प्राण-तत्व लोक-गीत ही होते हैं। विवाह के अवसर पर विविध प्रकार के रीति-रिवाजों को पूर्णता प्रदान करने मे लोक-गीतों का प्रमुख हाथ रहता है। भूत, भविष्य और वर्तमान की मगल कामनाओं का स्तवन इन्हीं गीतों मे समाहित है।

राजस्थान की धरतो लोक-गीतों की धरती है। राजस्थानी लोक-गीत अपने वैविध्य और व्यापकता के लिए प्रसिद्ध हैं। पारिवारिक परम्पराएँ और रीति-रिवाज इन लोक-गीतों मे साकार हो उठे हैं।

विवाह के लोक-गीत एक प्रकार से हमारे सामाजिक जीवन के सस्कारगीत हैं। ये सस्कार-गीत हमारी सस्कृति की आधार-शिला हैं। अत इन गीतों का महत्व किसी भी प्रकार से कम नहीं है। राजस्थान की सस्कृति के दर्शन विवाह के सस्कारगीतों मे होते हैं। वस्तुत इन गीतों की उपयोगिता मानवीय सवेदनाओं से जुडी हुई है।

विवाहगीतों मे देवी देवताओं के गीत, पीठी के गीत, बन्ना-बन्नी, सेवरो, घोडी, भात, मायरा, तोरण, सप्तपदी, गाल्या-गीत, बधावा, जवाई, विदागीत आदि सम्मिलित हैं।

राजस्थान के लोक-गीतों की इस निधि को एकत्र करने का कार्य मैंने सन् १९५० मे प्रारम्भ किया था। अनेक परिचित व अपरिचित महिलाओं से सम्पर्क साधकर लोक-गीतों को एकत्र करना पडा। सन् १९५५ मे 'राजस्थानी विवाह-गीत एक अध्ययन' शोर्षक से इस कृति का निर्माण हुआ। वर्षो बाद आज यह कृति पुस्तकाकार मे आपके हाथों मे है। सन् १९५८ मे भी इसके प्रकाशन की व्यवस्था की गई थी, किन्तु किसी कारण यह कार्य अपूर्ण ही रहा और अन्त मे भाई डा० बद्रीप्रसाद पचोली के सतत प्रयासों से यह पुस्तक आज प्रकाश मे आई है।

विवाह-गीतों और तत्सबधी लोक-प्रथाओं के अध्ययन की दिशा मुझे मेरी माताजी की अनुकम्पा और आशीर्वाद से मिली है। बाल्यावस्था से ही मैं अपनी माताजी द्वारा गाये जाने वाले भक्ति सबधी लोकगीतों को सुनता रहा हूँ और उससे प्रेरणा पाता रहा हूँ। अतएव यह कृति माताश्री को ही समर्पित करता हूँ। उनके आशीर्वाद की आकाक्षा रखना मेरे लिए स्वाभाविक ही है। इन गीतों के सकलन मे जिन महिलाओं ने व मित्रों की पत्नियों ने सहयोग दिया है, उनके प्रति मे हृदय से आभारी हूँ। मुझे आशा है कि यह पुस्तक राजस्थान की जनता तथा दूसरे प्रान्तों के लोक-गीत प्रेमी भाई-बहिनों के लिए उपयोगी प्रमाणित होगी।

—राधेश्याम त्रिपाठी

शारदी पूर्णिमा स० २०२९

अनुक्रमणी

समर्पण

ममतामयी माँ को सादर साभार

—राधे

विषय प्रवेश

विवाह : शास्त्रीय दृष्टिकोण

आज जब विवाह की बात कहने बैठा हूँ तो लगता है कि जीवन की उल्लासमयी घड़ियो की अनेक रंगीन रेखाएँ अपने वैभव विलास को लेकर जैसे निखर उठी है। हृदय की यह आतुरता अपनी मौन भाषा की अनबूझ कहानी का भाव लेकर बिखरने लगी है। जीवन के वे मधुर क्षण अपनी कामनाओ की लहरियो से मुखरित होकर पलभर के लिये एक नवीन लोक का सृजन करने को आतुर है। सुनता आया हूँ कि विवाह के द्वारा मानव अपने जीवन के एक शुष्क नीरस-पक्ष का परित्याग करके सरस भावभूमि पर पदार्पण करता है। मरुस्थल का शुष्क प्रभजन हरित् वसुन्धरा की तरलता और स्निग्धता को धारण करता हुआ मलय-मारुत के वेश मे शोभित एव सज्जित होकर जीवन को पुलकित करने की क्षमता रखता है। किशोर युग के अल्हड चरण यौवनागमन पर विवाह के पथ पर से गांभीर्य और दायित्व की गति लेकर अग्रसर होते है जिनमे समाज के भावो का विकास और निर्माण का सकल्प निहित रहता है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था

भारतीय आचार्य ससार को एक विचित्र रगस्थली मानते आये है। इस रगस्थली मे मानव एक निर्दिष्ट समय तक अपने अभिनय की पूर्ति हेतु अवतरित होता रहता है। मानव अपने सासारिक जीवन प्रवाह

मे नित नवीन कर्म-लहरियो से किलोले करता है। भविष्य के सुख की मनोहारी कल्पनाओ की रगीन रेखाएँ विश्व-पटल पर अकित करता हुआ वह समाज की बहुमुखी चेतना की ओर क्रियाशील होता है। समाज को मैं व्यक्तियो के समूह का एक पक्षीय रूप ही नही, मानव मस्तिष्क के विकास और उसकी चेतना का एक सबल साधन भी मानता हूँ। समाज मानव को सशक्त बनाता है। सामाजिक-जीवन व्यक्तिगत उच्छृखलताओ के विरुद्ध प्रतिक्रिया का वह रूप है जिसमे स्वार्थ को परमार्थ के लिये उत्सर्ग करना होता है। यो भी कहा जा सकता है कि जन-हित की निर्मल राका-रजनी मे श्याम मेघ की लहराती घटाओ का दमन करके ज्योत्स्ना के सौंदर्य को जन जीवन के लिये समर्पित करने की उत्कट भाव-धारा को संबल देना होता है। समाज मे दूसरे के सुख-दु ख मे अपने सुख-दु'ख का तथा अन्यान्य आत्माओ मे अपनी आत्मा का अनुभव करना सीखा जाता है। इस प्रकार समाज मे प्रविष्ट होकर मानव, जीवन के वास्तविक उद्देश्य 'आत्मिक-विकास' की उपलब्धि की ओर अग्रसर होता है। व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के विकास के लिये समाज की बहुमुखी चेतना का अध्ययन करना होता है। सामाजिक अध्येता को समष्टि के हितार्थ जीवन की क्रियाओ को समरूप देकर उसके सत्त्व की कामना करना आवश्यक होता है। समाज और व्यक्ति, व्यक्ति और समाज दोनो का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध माना गया है। साधारणंत समाज व्यवस्था के मूल मे एक उच्च आदर्श, पवित्र मगल भावना, सुखकारी कल्पना तथा भव्य-जीवन-निर्माण की निष्ठा का सन्निवेश है। भारतीय समाज व्यवस्था अपने मूल मे इसी प्रकार के उद्देश्य की शीलता से सजीवित रही है, इसमे सदेह नही है।

वर्ण व्यवस्था

जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति की आशा रखने वाले मानव-मस्तिष्क को अपने चरम विकास के लिये कुछ उपयोगी नियमो को निर्मित करना आवश्यक होता है। निर्धारित किये हुए नियम जीवन को निर्दिष्ट पथ पर पहुँचाने के लिये विशेष सहायक होते हैं। उदधि की उत्ताल तरगावलियो से जूझने के लिये नाविक को नाव और पतवार के साथ ही दिशासूचक यन्त्रज्ञान की आवश्यकता अनुभव होती है। लगता है हमारे पूर्वाचार्यो ने समाज की आध्यात्मिक, नैतिक एव व्यवहारिक उन्नति के लिये जिन उपयोगी नियमो की रचना की थी उनमे वर्ण-व्यवस्था का अपना विशिष्ट एव एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। हो सकता है कि आज के अत्यधिक 'सभ्य-जन' इसको तुच्छ दृष्टि से देखकर हास्य की कथावस्तु बनाते हो किन्तु फिर भी निर्विवाद रूप से यह तो स्वीकार करना ही होगा कि इसी की भित्ति पर हिन्दू समाज का वह उच्च प्रासाद अवस्थित है जो युग के कठिन क्रूर शिकजो के, थपेडो को झेलता हुआ भी अब तक अपनी बुलन्दी का दावा कर रहा है। वस्तुत वर्ण-व्यवस्था ने एक दीर्घकाल तक सामाजिक विकास को अक्षुण्ण बनाये रखने की चेष्टा की है।

चार आश्रम

हमारे प्राचीन मनीषियो ने समाज को सुदृढ बनाये रखने के हेतु जीवन को चार आश्रमो मे विभक्त किया. ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। मानव की आयु को सौ वर्षों की परिधि मे समेटकर प्रत्येक आश्रम को क्रमश पच्चीस-पच्चीस वर्षो की सीमाओ मे आबद्ध किया गया है। अत चारो आश्रमो के विशद विश्लेषण की ओर न जाकर सक्षेप में इनकी रूपरेखाओ से परिचित होना ही अपेक्षित है।

ब्रह्मचर्याश्रम किशोरावस्था से यौवन के संधिकाल तक के पूर्व पच्चीस वर्ष का एक तपोमय जीवनक्रम है। विशेपतया यह व्यक्तिगत स्वार्थ-सिद्धि की स्वाभाविक अवस्था है जिसमें विद्याध्ययन द्वारा ज्ञानोपार्जन किया जाता है जिसके द्वारा मानव के मानसिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। इस अवस्था में व्यक्ति के अग-प्रत्यंग पुष्ट होकर शारीरिक विकास होता है। वस्तुत ब्रह्मचर्य के द्वारा समाज के एक अग, अपने व्यक्तित्व को दृढ एव पुष्ट किया जाता है। वेद मंत्रो में ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध मे उत्कृष्ट और भव्य विचार प्रकट किये गये हैं। अथर्ववेद के सूक्त में ब्रह्मचर्य की महिमा का वर्णन इस प्रकार है—

ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद् विभर्त्ति-
तस्मिन् देवा अधि विश्वे समाता ॥

(अथर्व–११-५-२४)

अर्थात्—ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने वाला ही प्रकाशमान ज्ञान-विज्ञान को धारण करता है। उसमे मानो समस्त देवता वास करते है। यह जीवन-साधना का प्रथम सोपान है जिस पर चरण धर कर मानव गृहस्थ के रथ पर आरुढ होता हुआ जीवन के द्वितीय महत्त्वपूर्ण आश्रम मे प्रवेश करता है।

ब्रह्मचर्य अवस्था के पूर्ण होने पर हमारे वेद मानव को गृहस्थ होने की अनुमति देते हैं। बालक अपने जीवन के उषाकाल में ही मध्याह्न की प्रखरता का आभास पा लेता है। उषा की लालिमा, यौवनागमन के साथ ही अपना तेजोमय रूप पाकर निखर उठती है जिसकी आभा मे दाम्पत्य प्रेम की छटा निखर कर अपने लावण्य को छिटका देती है। गृहस्थाश्रम

इस रूप-लावण्य की शोभा का एक सफल प्रतीक है। विवाह इस आश्रम मे प्रवेश पाने का धर्म-विहित सच्चा मार्ग है। विवाह के द्वारा मानव पाशविक भावनाओ से ऊपर उठकर देवत्व के आसन की ओर अग्रसर होता है। कामान्धता के कारण भगिनीत्व तथा मातृत्व तक को विस्मृत कर जाने वाले पशुओ पर यही मानव ने विजय-दुन्दुभि का उद्घोप किया है। मानव और पशु का अन्तर इस परीक्षा-द्वार पर आकर स्पष्ट होता है। इसी 'गेह' मे मानव को निखिल सृष्टि में 'मानव' के श्रेष्ठ पद की उपलब्धि हुई है। यही कारण है कि विवाह के आदर्श एव पवित्र बन्धन की श्रेष्ठता पर हमारे धर्मशास्त्रो मे उपदेश की विभिन्न रगीन रेखाएँ खीची गई है।

विवाह गृहस्थ जीवन के प्रवेश का प्रथम सोपान है। गृहस्थरूपी रथ मे बैठकर मानव अपनी गृहिणी के साथ इहलोक की यात्रा करता हुआ एक अदृश्य शक्ति की इच्छा पूर्ति करता है। गृहस्थाश्रमरूपी रथ के स्त्री-पुरुष दो चक्र है। इस रथ को उचित रूप से गतिशील रखने तथा जीवन के गन्तव्य तक पहुँचने के लिये पूर्वजो ने विवाह-सस्कार को मान्यता दी है। विवाह आत्मोत्सर्ग का श्रेष्ठ साधन स्वीकार किया गया है। मातृत्व की महत्ता और पवित्रता का मजुल-मोती वैवाहिक सीपी में ही समाया हुआ है। पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने के पश्चात्, ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी जब गृहस्थरथ के चक्र बनकर गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करते थे तब गृहस्थरूपी रथ सुचारु रूप से जीवन की पगडण्डी पर अग्रसर होने मे सुगमता पाता था तथा भविष्य मे वे सामाजिक जीवन-विधान की परम्परा का सुगमता से पालन करने मे समर्थ हो सकते थे।

इसके साथ ही यह भी कह दू कि प्रकृति स्वय दो तत्वो की एकरूपता तथा उसके सयोग का परिपूर्ण रूप है। ससारिक जीवन के अभिनय में भी दो (द्वि) के बिना कार्य होना सम्भव नही है। क्या जड और क्या चेतन, स्वयं सृष्टिकर्त्ता को भी माया (स्त्री) का सहारा लेना पडा है। तभी तो माया और ब्रह्म के द्वि रूप की स्वीकारोक्ति में भी वही इष्ट निहित है। नारी की 'आद्या-शक्ति' से विहीन पुरुष अपूर्ण ही रहता है। नारी के सयोग से ही पुरुष पूर्ण पुरुष कहलाने योग्य होता है। नारी रस रूप है तो पुरुष-पुरुषार्थ का निग्रह है। ब्रह्म से स्त्री-पुरुष की उत्पत्ति होने के कारण दोनो एक है, अभेद है और जो भेद है, बाह्य है। इन्ही के एकत्व का परिणाम सृष्टि का यह मूर्त रूप है—

द्विधा कृत्वात्मनो देहमर्धेन पुरुषोऽभवत्।
अर्धेन नारी तस्यां स विराजमसृजत् प्रभुः।
मनु अ १ श्लोक ३२

प्रकृति और पुरुष के अनन्य सम्बन्ध का सकेत गीता मे भगवान श्री कृष्ण के इस कथन 'विद्ध्यनादी उभावपि' से भी होता है कि उनकी योगमाया भी उन्ही के समान अनादि है। गृहस्थाश्रम सभी आश्रमो में श्रेष्ठ और पवित्र माना गया है। इस आश्रम मे प्रवेश किये बिना मानव अपने ऋण-भार से मुक्त नही हो सकता। गृहस्थाश्रम की प्रशसा स्मृतिकारो ने भी जमकर की है—

यथा वायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्वजन्तव ।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वतन्ते सर्वे आश्रम ॥

यस्मात् त्रयोऽप्याश्रमिणो ज्ञानेनान्नेन चान्वहम् ।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्जेष्ठाश्रमो गृही ॥

स संधार्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता ।
सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधार्यो दुर्वलेन्द्रियैः ॥

ऋषय पितरो देवा भूतान्यतिथयस्तथा ।
आशासते कुटुम्बिभ्यस्तेभ्यः कार्यं. विजानता ॥

मनुस्मृति अ. ३ श्लोक ७७-८०

इस प्रकार सर्वत्र सुख का वर्षण करने वाला, यह आश्रम विद्वानो द्वारा अभिवन्दित किया गया है। वस्तुतः गृहस्थ की मनोरम कल्पना भी गृहिणी से ही है। गृहिणी बिना घर कहाँ! एक कवि ने 'बिन घरणी घर भूत का डेरा' कहकर उसकी उपयोगिता को स्वीकार किया है। ऐतरेयारण्यक मे लिखा है--

पुरुपो जायां जित्वा कृत्स्नतरामिवात्मानं मन्यते।

अर्थात् स्त्री के बिना पुरुप के व्यक्तित्व मे अधूरापन रहता है। पत्नी को पाकर ही उसमे पूर्णता आती है।

शतपथ-ब्राह्मण के अनुसार स्त्री पुरुष का अर्द्ध भाग होती है। इसलिये जव तक पुरुप स्त्री को नही पाता, तब तक उसमे पूर्णता नही आती—

अर्धो ह वा एप आत्मनो यज्जाया ।
यावज्जायां न विन्दते असर्वो हि तावद्भ्वति ॥

अतः स्त्री ही ससार को उत्पत्ति का मूल कारण है। इसी से मानव ने भी मातृशक्ति को विशेप गौरव और महत्त्व

दिया है। यहाँ तक कि जिन महापुरुषो को हम अवतार के रूप में मानते है, उनके साथ भी मातृशक्ति को प्रथम स्थान देकर सम्मान से विभूषित करते हैं। यथा: सीताराम, लक्ष्मी-नारायण, राधाकृष्ण आदि।

गृहस्थाश्रम मे व्यवहारिक अनुभव होने के पश्चात सन्तानोत्पत्ति तथा सांसारिक सुखों की उपलब्धि के बाद वृद्धावस्था निकट होने पर वानप्रस्थ आश्रम मे पदार्पण करके परमार्थ चिंतन अथवा आत्म-कल्याण का अभ्यास किया जाता है। इस आश्रम मे देव-भजन तथा आत्मशुद्धि की ओर ध्यान देते हुये शनैः शनैः सांसारिक सम्बन्धो से उदासीन होता हुआ मानव तदुपरान्त अन्तिम सन्यास आश्रम की अवस्था तक पहुँचता है। सन्यास आश्रम मे अज्ञान की निवृति और सत्य से प्राप्त परमानन्द की उपलब्धि, इस अनित्य तन की आसक्ति का त्याग, मोक्ष एव 'भगवदीय' स्वरूप के प्राप्त होने की अवस्था का वोध होता है और मानव अपनी आत्मा को परमात्मतत्व मे लीन करके इस लोक की क्रियाओ से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार प्राणी नियत समय तक गुरुकुल मे ब्रह्मचर्य सुरक्षित रखकर श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के ही द्वारा ब्रह्म विद्याभ्यास से सन्यास तक मानव जीवन का तथ्य, लक्ष्य, रहस्य आदि का अकन करके गृहस्थ तथा वानप्रस्थ दोनो ही आश्रमो मे एक पथिक की भाँति राजभोगादि-सांसारिक सुख वैभव के अनुभव द्वारा काया को क्षणभगुर समझकर उनमे लिप्त न होते हुये अपने ध्येय तक पहुँचता है।

विवाह संस्कार

भारतीय दर्शन मानव जीवन के विकास के लिए मानसिक संकल्पो एव विचारो को प्रधान महत्त्व देता है। भावनाओं के अनुरूप ही कार्यों की रूपरेखा वनती है और इन्ही को लेकर

शक्तियो का विकास अथवा सकोच होता है। मनुष्य अपने मानस मे जिन विचार लहरियो का मथन करता है उनका रसरूप प्रभाव उसके भावी कार्यक्रम तथा तत्सम्बन्धी सफलताओ पर पडता है । प्राचीनकाल में मनोविचारो की यह विकसित योजना संस्कारो के रूप मे प्रचलित रही थी। जीवन के विकास की प्रत्येक महत्वपूर्ण अवस्था मे सस्कारो के द्वारा किसी व्यक्ति की उन्नति और मगलकामना की जाती थी। प्रायः सभी सस्कार उत्सव के रूप में सम्पन्न किये जाते थे और उनके द्वारा कुटुम्ब, समाज और देश मे आनन्द, उल्लास, हर्ष और पवित्रता की अजस्त्र धारा प्रवाहित होती थी। हमारे यहाँ सामाजिक जीवन को उत्तम बनाने के लिए गर्भाधानादि सोलह सस्कार माने गये है जिनमे बारहवाँ विवाह सस्कार है।

जीवन में विवाह का महत्व और उपादेयता

विवाह शब्द 'वि' पूर्वक 'वह' धातु में 'धत्र' प्रत्यय लगाने से बनता है 'वह' धातु का अर्थ है 'वहन करना'। इस प्रकार विवाह शब्द का अर्थ हुआ (वि - आपस मे—वह = वहन करना) आपस में मिलकर विधिपूर्वक जीवन का वहन करना। रूढि अर्थो में हिन्दू-समाज की दृष्टि मे विवाह का अर्थ है स्त्री-पुरुष का जन्म-जन्मान्तर के लिये एक दूसरे से अनुबन्धित होना। हिन्दू स्त्री एक बार विवाहित होकर जीवन भर विच्छेदित नही होती । विवाह नारी और पुरुष का अथवा प्रकृति और पुरुप का गठबन्धन है। विवाह कुल की उन्नति करने वाला शुभ संस्कार है। सूत्रो मे एक स्थान पर कहा गया है 'त्रयोवर्णा द्विजातय' ससार में संस्कार के योग्य वर्ण केवल तीन (ब्राह्मण, क्षत्रीय और वैश्य) ही है। अतएव

'जन्मना जायते शूद्र: संस्कात्द्विज उच्यते।" अर्थात जन्म से सभी वर्ण-व्यक्ति शूद्र के समान है। संस्कार होने पर द्विजत्व (दूसरा जन्म) धारण होता है। सस्कार विहीन व्यक्ति चाहे वह किसी भी वर्ण से सम्बन्ध रखता हो शूद्र के समान ही उसकी सज्ञा होगी।

इन संस्कारो का ब्रह्मचर्यादि चार आश्रमों से निकट सम्बन्ध है। संस्कारो के पवित्र धागे से मनुष्य मे वर्णत्व प्रकाशित होता है। संस्कारी व्यक्ति शरीर पात तक गृहस्थ आश्रम को केवल विषय-भोग के लिये ही ग्रहण नही करता वरन् अपने कर्त्तव्य की पूर्ति का साधन समझकर इसके पालन की ओर उन्मुख होता है क्योकि—

ब्रह्मचर्य्येण ऋषिभ्य यज्ञेन देवेभ्य: प्रजाया पितृभ्य: ।

अर्थात् जन्म से ही तीनो वर्ण ऋषि, देव, पितर तीनो ऋणो के साथ उत्पन्न होते है। इनमे से ऋषि ऋण तो ब्रह्मचर्य परिपक्व होने से ही चुक जाता है शेष दो ऋण चुकाने के हेतु ही व्यक्ति गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करता है न कि केवल वासनापूर्ति के लिये। शास्त्रो मे इन तीनो ऋणो को चुकाना मानवीय धर्म कहा गया है।

विवाह नारीत्व एव पुरुषत्व के पूर्ण विकास के अनतर ही होता है। विवाह संस्कार इस जीवन की क्षणिक तृप्ति के लिये नही वरन् पुरुष के जीवन मे नारी का जीवन, पारस्परिक उभय जीवन का एकत्व सम्पादन ही इसका प्राकृत अर्थ है। सृष्टि परम्परा के द्वारा आत्मतत्व की अमरता को स्थिर रखने के पावन उद्देश्य को लेकर ही विवाह

संस्कार हमारे सनातन समाज में प्रधान संस्कार है। समाज मे विवाह 'कामज' नही 'योगकर्म' है। नारी और पुरुष का एक दूसरे के हृदय और जीवन के साथ अटूट सम्बन्ध वैसे ही स्थिर रहता है जिस प्रकार दीपक और प्रकाश का। इस सम्बन्ध की प्रकृया-पद्धति कैसी अनुपम और सात्विक है तथा एक दूसरे का कितना निर्वियोग सम्बन्ध होता है यह इस कथन से जाना जा सकता है—

"दृग चारों जुग जोय, माँ जोत महिला जलत।"

अर्थात्, चारो युगो मे नेत्रो को फैलाकर देखो, मा स्वयं देखती रह जाती है और नारी पति के साथ जल जाती है। यह अकाट्य सम्बन्ध इसका स्पष्ट सकेत है जिसकी लकीरो को युग के कराल हाथ भी मिटाने मे असमर्थ रहे हैं। भारतीय विवाह व्यवस्था का यह सुन्दर रूप योग-धर्म की पावन सलिला से मुखरित है। जिसमे अवगाहन कर सनातन, हिन्दू धर्म अपनी पवित्रता और सात्विक भावनाओ के रूप को सजोये हुये है। जिस प्रकार जीवन और मृत्यु का अटूट सम्बन्ध है उसी प्रकार भारतीय सामाजिक जीवन मे नारी और पुरुष का मिलन विवाह की वेदी पर स्थिर होकर चिता की भस्मी के पश्चात् तक भी अक्षुण्ण और निर्वियोग बना रहता है। अत यह ठीक है कि कोई भी समाज, विवाह आदर्श की उपेक्षा करके जीवित नही रह सकता। इसलिये समाज मे विवाह का महत्वपूर्ण स्थान है। विवाहित व्यक्तियो पर ही समाज का उत्तरदायित्वपूर्ण भार माना जाय तो कोई अत्युक्ति नही होगी क्योकि इसी के द्वारा समाज की भावी सन्तान पालित-पोषित होती है। इसी की आधारशिला पर वानप्रस्थ व संन्यास की सीमा रेखा खीची जा सकती है। समाज की

उन्नति, अवनति, उसका सशक्त व निशक्त होना केवल वैवाहिक आदर्श पर निर्भर है। अतः सामाजिक जीवन में विवाह की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

यजुर्वेद और ब्राह्मण ग्रन्थो मे विवाह के विकास का आभास हमे मिलता है। मनुस्मृति के अनुसार विवाह-संस्कार सबसे प्रधान माना गया है क्योंकि इसका सम्बन्ध न केवल पति और पत्नी से है किन्तु भावी सन्तान से भी है। यही पर वर्तमान और भविष्यत् की सन्धि होती है इसी घटना के ऊपर पारिवारिक और सामाजिक सुख अवलम्बित है। यही कर्म और धर्म का उद्गम है। यह संस्कार सबसे पहले इस बात की ओर ध्यान दिलाता है कि विवाह शारीरिक आकर्षण और राग का परिपाक नही है किन्तु एक धार्मिक बन्धन है। इसका विच्छेद हम व्यक्तिगत असुविधा से नही कर सकते, अपितु इसका निर्वाह आजीवन नियम और निष्ठा के साथ करना होगा। इस प्रकार वेदो, धर्म-ग्रन्थों और कर्म-काण्डो मे विवाह को प्रमुख एव विशिष्ट स्थान प्राप्त है। आर्प-ग्रन्थो ने विवाह को जीवन का एक अनिवार्य अंग माना है। ब्राह्मण ग्रन्थो मे दूसरे महायज्ञ से सुख सम्पादन की सौम्य विधि की रूप-रेखा चित्रित कर उसके स्वरूप का विशद वर्णन किया गया है। स्मृतिकारों ने विवाह को एक धार्मिक-सस्कार माना है जिस पर धर्म, कर्म और समाज की शान्ति निर्भर है। इहलौकिक और पारलौकिक जीवन की सफलता व असफलता भी इसी पर निर्भर है।

विवाहों के प्रकार

विवाह-संस्कार की इस महत्त्वपूर्ण परम्परा को स्वीकार करते हुये मनु ने मनुस्मृति अध्याय ३ श्लोक २१ मे आठ प्रकार के विवाहों का सम्मत स्वरूप निर्धारित किया है—

ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधम।

अर्थात्, १ ब्राह्म, २ दैव, ३. आर्ष, ४. प्राजापत्य, ५. असुर, ६. गधर्व, ७. राक्षस, ८ पैशाच।

१. ब्राह्म विवाह—विद्या युक्त, शीलवान, कुलवान वर को आमन्त्रित करके उसे वस्त्राभूषणो से अलकृत कर 'कन्यादान' करने को मनु 'ब्राह्म विवाह' कहते है। इसमे कन्या का पिता स्वेच्छा से सहर्ष 'कन्यादान' वर को करता है।

२. दैव विवाह—यज्ञ मे भली प्रकार वेदोक्त रीति से धर्मलाभ हेतु यज्ञ करने वाले ऋत्विज वर को अलकारो से सुसज्जित करके कन्यादान करने को 'दैव-विवाह' कहा गया है।

३. आर्ष विवाह—एक गौ अथवा दो गौ अथवा गौ युग्म द्वारा यज्ञादि की सिद्धि के लिये कन्यादान शास्त्रानुसार वर को प्रदान करे। उसकी सज्ञा 'आर्ष-विवाह' है जिसमे कन्या का पिता, 'तुम दोनो धर्म सहित आचरण करो' कहकर कन्यादान करता है।

४. प्राजापत्य विवाह—कन्यादान के समय वर वाणी से प्रार्थना करता है तथा उसकी प्रार्थना स्वीकार करके जो 'कन्यादान' किया जाता है वह 'प्राजापत्य-विवाह' कहलाता है।

५. असुर विवाह—कन्या, वर अथवा उसके माता-पिता द्वारा क्रय करके ग्रहण कर ली जाती है। यह विशेषकर वैश्य वर्ग और शूद्रो के लिये ही विहित माना गया है अत शक्ति और अर्थ के द्वारा कन्या का ग्रहण करना 'असुर विवाह' है। (मनु ३/२४)

६. गन्धर्व विवाह—ऐसा माना गया है कि गन्धर्व विलास

प्रिय अधिक होते है। अत कन्या और वर की कामवासना हेतु यह 'कामज-विवाह' वर-वधू की इच्छा शक्ति से गुप्त रूप से सम्पन्न होता है। इसमे माता-पिता की अनुमति का कोई महत्त्व नही होता है। विशेपकर क्षत्रियो मे। 'दुष्यन्त-शकुन्तला' का विवाह इसी कोटि का था। वैध-सस्कार सम्पन्न हो जाने के पश्चात 'गन्धर्व विवाह' श्रेष्ठ कहा जा सकता है।

७. राक्षस विवाह—वर का अपनी इच्छा के अनुसार बलपूर्वक कन्या की इच्छा के विपरीत आपत्तिकर्त्ता को मारकाट कर विवाह करना ही 'राक्षस-विवाह' कहलाता है।

८. पैशाच विवाह—चौर कर्म से कन्या का बलपूर्वक अपहरण, नारी को एकान्त स्थान मे नशीली वस्तु के प्रयोग से वेहोश करके तथा अत्यन्त नीच व्यवहार से नारी का उपभोग करना 'पैशाच विवाह' है इसमे उपभोग मात्र उद्देश्य माना गया है। पैशाच-विवाह चारो वर्णों के लिये वर्जित है।

उपर्युक्त विवाहो मे केवल प्रथम चार विवाह ब्राह्म, दैव, आर्ष, तथा प्राजापत्य ही व्यवहृत एव धर्म सम्मत बतलाये गये हैं। याज्ञवल्क्य, विष्णु तथा साख्य स्मृतियो मे भी ये चार विवाह ही ग्राह्य है। हारीत स्मृति मे केवल 'ब्राह्म-विवाह' ही उचित कहा गया है। इसी प्रकार अन्य चार असुर, गन्धर्व, राक्षस तथा पैशाच अव्यवहृत एव अधर्म सम्मत है। कालिदास ने 'रघुवश महाकाव्य' मे स्वयवर-विवाह को उचित और वैध माना है। जिसकी पुष्टि इन्दुमती के स्वयवर से प्राप्त होती है। स्वयवर मे कन्या का पिता अथवा भ्राता अन्य देशो के युवराजो को निमन्त्रण पत्र भेज देता था। राजागण अपनी सेनाओ और शिविरो सहित स्वयवर के लिये प्रस्थान करते थे। कन्या का पिता अपने नगर द्वार पर इनका स्वागत करके

अपने प्रासाद मे लेजाकर उनके निवास की यथोचित व्यवस्था करता था। दूर-दूर के राजा वधू की प्राप्ति के लिये उपस्थित होते थे। निर्धारित समय पर विशाल मण्डप मे स्वयंवर का आयोजन होता था। वधू सुन्दर वेश मे सुसज्जित होकर हाथ मे वरमाला धारण कर, अपनी सखियो के साथ स्वयवर मडप मे प्रवेश करके एक-एक नपति का पूर्ण परिचय प्राप्त करती हुई मथर गति से आगे बढती थी। इस प्रकार वधू अपने मनोवांछित वर की ग्रीवा में माला पहनाकर उसे पति रूप मे वरण करती थी। वरण के पश्चात् शास्त्रोक्त रीति से विवाह-कार्य सम्पन्न होता था। कभी-कभी स्वयवर मण्डप रणमण्डप के रूप मे भी परिवर्तित हो जाता था। इस प्रकार कालिदास के ग्रन्थो मे स्वयवर के साथ ही गन्धर्व एव प्राजापत्य-विवाहो का भी उल्लेख मिलता है। प्राजापत्य का उदाहरण 'कुमार-सम्भव' के अन्तर्गत शिव और पार्वती के विवाह मे मिलता है तथा गान्धर्व-विवाह का सकेत 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' के दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम सम्बन्ध मे किया गया है। विवाह के सगठन के सम्बन्ध मे वशिष्ठ, आपस्तम्ब, गौतम आदि आचार्य कही सहमत और कही असहमत है। वशिष्ठ केवल ६ विवाहो को स्वीकार करता है। आपस्तम्ब इन्ही ६ विवाहो को स्वीकार करता है। गौतम और बोधायन विवाह की आठ रीतियो को मानते है। ये दोनो सूत्रकार वशिष्ठ से प्राचीन है।

महाभारत मे केवल पांच विवाह ही वर्णित है ब्राह्म, क्षात्र, गान्धर्व, आसुर और राक्षस। आर्प और प्राजापत्य को क्षात्र के अन्तर्गत माना गया है। पैशाच को निर्दिष्ट नही माना है। इनमे प्रथम के चार को प्रशस्त और अन्तिम को निकृष्ट माना है।

(अनुशासन पर्व ४८)

इस प्रकार भारतीय जीवन में विवाह - सस्कार महत्वपूर्ण है। वैदिक-युग में विवाह सम्बन्ध भौतिक सुखो की उपलब्धि का साधन मात्र नही वरन् दैवी विधान माना जाता था। 'ऋग्वेद' के अनुसार विवाह के समय वर-वधू से कहता था—"मैं सौभाग्यशाली होने के लिये तुम्हारा पाणिग्रहण करता हूँ। मैं जीवन भर तुम्हारा पति बनकर रहूँगा।" इस प्रकार पति का यह दृढ विश्वास होता था कि इस दैवी विधान का उल्लघन नही हो सकता और विवाह सम्बन्ध किसी भी प्रकार विछिन्न नही किया जा सकता। उस युग मे पति की मृत्यु हो जाने पर पत्नी 'सती' नही होती थी। वैदिक-युग मे विधवा स्त्रियो का पुनर्विवाह होना सम्भव था। याज्ञवल्क्य तथा पराशर ने भी विधवा स्त्रियो के दूसरे विवाह का उल्लेख किया है। पुराणो मे पति की मृत्यु पर स्त्रियो के 'सती' होने का सर्वप्रथम सकेत मिलता है। इनमे विधवा विवाह का निषेध किया गया है।

वैदिक रीत्यनुसार विवाह सस्कार के समय वर-वधू को यह विश्वास दिलाता था—"तुम मेरे साथ सात पद चलकर मेरी सहचरी बन गई हो। मैं तुम्हारे अन्त करण तथा आत्मा को अपने कर्म के अनुकूल धारण करता हूँ। तुम्हारा चित्त सदैव मेरे चित्त के अनुकूल रहे। मेरा आदेश तुम एकाग्र चित्त से सेवन किया करो।" इसी प्रकार अन्य स्थान पर वर, वधू से प्रतिज्ञा करता है—"मैं घृत आहुति के साथ तुम्हारे सर्वाङ्ग मे रहने वाले घोर-से-घोर तम पापो को अग्नि मे भस्म करता हूँ।" वधू का यह कथन भी इस अविच्छेद बन्धन को पुष्ट करने के हेतु होता है—"आप और मैं एक दूसरे के प्रिय चरणो मे सदैव दृढचित्त बने रहे।" इससे भारतीय विवाह-संस्कार

की कल्याणकारी भावना अनुप्राणित सिद्ध होती है। अथर्ववेद का यह मत्र ही विवाह की परिपाटी स्थापित करता है-"सौभाग्य के लिये तेरा हाथ पकडता हूँ। मुझ पति के साथ रह। प्रतिष्ठित और नम्र पुरुषो ने मुझे तुझे दिया है।" (अथर्ववेद १४-१५)

ऋग्वेद के मतानुसार पत्नी 'गृह' है इसी से पत्नी का 'गृहिणी' नाम सार्थक होता है। मनुस्मृति मे कहा गया है कि गृहस्थ के लिये घर वास्तव मे घर नही है अपितु गृहिणी ही वास्तविक घर है। कालिदास ने लिखा है—

'गृहिणी सचिव: सखी मिथ: प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ'।

प्रत्येक शुभ अवसर पर जब कभी पति देवताओ की सन्तुष्टि के लिये हवि देता था तो स्त्री भी साथ बैठकर यज्ञ मे हवि देती थी। 'तैत्तिरीय-ब्राह्मण' मे पत्नी रहित व्यक्ति के लिये किसी यज्ञ का तथा शुभ कर्म का विधान ही स्वीकार नही किया गया है। पाणिनि ने पत्नी शब्द की व्याख्या करते हुये कहा है—'स्त्री को पत्नी इसलिये कहते हैं कि वह यज्ञ के समय सदैव पति के साथ रहती है।" अत. इस प्रकार वैवाहिक सस्कारो के द्वारा मनुष्य की आन्तरिक और वाह्य शुद्धि होती थी।

इस प्रकार अनि प्राचीन काल से विवाह सस्कार के रूप मे मान्य है। इसके आधुनिक रूप में लौकिक रीतियो का सन्निवेश अवश्य हो गया है तदपि आत्मा मे विशेष अन्तर नही आया है। सस्कारो के आध्यात्मिक पक्ष के महत्व को स्वीकार करते हुये डॉ० राजबली पांडेय ने 'सस्कार-साधना' नामक अपने लेख मे लिखा है-"सस्कारमय जीवन आध्यात्मिक साधना की दृढ भूमिका है। संस्कारो के द्वारा आध्यात्मिक जीवन का

क्रमशः विकास होता है। संस्कृत व्यक्ति अनुभव करता है कि उसका सारा जीवन एक महान यज्ञ है और जीवन की प्रत्येक भौतिक क्रिया का सम्बन्ध आध्यात्मिक तत्त्व से है। सस्कारो के द्वारा ही कर्म प्रधान सासारिक जीवन का मेल आध्यात्मिक अनुभव से होता है। इस प्रकार संस्कारित-जीवन से शरीर और उसकी विविध क्रियाएँ पूर्णता की प्राप्ति मे बाधक न होकर साधक होती हैं। शास्त्रोक्त-सस्कारो को नियमपूर्वक करता हुआ मनुष्य भौतिक बन्धनो और मृत्यु को पार कर अमृतत्व प्राप्त करता है।"

कन्यादान का महत्त्व

भारतीय परम्परा में विवाह प्रायः वर-वधू की इच्छा पर निर्भर नही रखा गया है। विवाह-सस्कार मे कन्या का पिता अपनी कन्या को सुयोग्य-सुशील वर के हाथ मे दान के रूप में सौप देता है। कन्यादान का महत्त्व हिन्दू-धर्मशास्त्रो में विशेष रूप से स्वीकार किया गया है। दान भी त्याग-बुद्धि से सत्पात्र को ही दिया जाना सार्थक होता है—

याचकेभ्यो दीयते नित्यमनपेक्ष्य प्रयोजनम्।
केवलं त्यागबुद्ध्या यत् धर्म्मदानं तदुच्यते॥
(हेमाद्रि, दानखण्ड)

श्रीकृष्ण ने गीता मे कहा है कि उपयुक्त देश और काल में, अनुपकारी पात्र को दान देना कर्त्तव्य है इस बुद्धि से जो दिया है वह सात्त्विक दान है—

दातव्यमिति यद्दानं, दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च, तद्दानं सात्त्विक स्मृतम्॥
गीता १७।२०।

कन्या का वर को दिया जाना 'कन्यादान' कहलाता है। कन्या का पिता ही दाता होता है पर पिता के अभाव मे पितामह, अग्रज भ्राता और माता भी यह दान कृत्य कर सकते है। याज्ञवल्क्य के अनुसार यदि दुर्भाग्य से इनमे से कोई भी न हो तो निकट का कोई भी सम्बन्धी कन्यादान करने के पुण्य का भागी बन सकता है।

हिन्दु-धर्मशास्त्रो के अनुसार कन्यादान करने वाले को अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। भविष्यपुराण के अनुसार जो व्यक्ति कन्या को अलकृत करके ब्रह्मविधि से देता है वह निश्चय ही अपने सात पूर्वजो और सात वशजो को नरक से बचा लेता है—

ब्रह्मवेत्तान्तु यः कन्याम् अलंकृत्य प्रयच्छति।
सप्त भूतान्भविष्यांश्च, स्वकुले सप्तमानवान्॥
तेन कन्या प्रदानेन, तारयिष्यत्यसंशयम्।

लिंग पुराण के शब्दो में कन्या के शरीर मे जितने रोम है उतने सहस्र वर्ष कन्या का दाता रुद्रलोक मे वास करता है—

यावन्ति सन्ति रोमाणि, कन्यायाश्च तनौ पुनः।
तावद्वर्ष सहस्राणि, रुद्रलोके महीयते।

कन्यादान के समय पिता ही नही वरन् उसके निकट सम्बन्धी भी अपनी श्रद्धा-शक्ति के साथ सोना-चांदी तथा अन्य बहुमूल्य द्रव्य दान मे देते है।

हिन्दू-समाज मे कन्यादान का धार्मिक महत्त्व है। कन्यादान का भारतीय-विवाह पद्धति मे अनिवा स्थानर्य है। याज्ञवल्क्य का कथन है कि समय पर कन्या का दान न करने से, उसके प्रत्येक ऋतुकाल पर पिता को भ्रूण-हत्या का पाप लगता है। अतः ऋतुकालमती होने से पूर्व ही कन्यादान करना संगत है।

अप्रयच्छन् समाप्नोति, भ्रूणहत्यामृतावृतौ।

विवाह और दहेज

इस युग में विवाह के साथ-साथ 'दहेज' की एक विचित्र प्रणाली चल निकली है। आज इसका यह रूप क्रय-विक्रय से अधिक कोई मूल्य नही रखता। विवाह की पवित्र स्वर्ण-रेखा दहेज की कसौटी पर स्याह और अपवित्र पडती जा रही है। विवाह-विधान समाज के कल्याण की दृष्टि से है और होना भी चाहिये। दहेज का जो आधुनिक रूप है वह इतना कत्सित, घृणित और लज्जास्पद है कि अनेक निरीह बालिकाओ को इस वेदी पर बलिदान होता देखा गया है।

प्राचीन काल में आज की भांति दहेज एक सौदा नहीं था और न ही वर-वधू का क्रय-विक्रय होता था। मनु व याज्ञवल्क्य स्मृति मे 'यौतुक-दद्यात्' शब्द आया है। स्मृतियो एव धर्म-शास्त्रो के अनुसार--दुहित्रे सम्प्रदानसमये स्वेच्छया दातव्य यत्-अर्थात् पुत्री के विवाह काल मे जो स्वेच्छा से दान देता था वह दहेज कहलाता था। पिता अपनी पुत्री को सद्भावना के वशीभूत होकर कुछ वस्त्र, आभूषण आदि देता था और वर पक्ष इस दान को पवित्र-भेंट या उपहार समझकर सादर ग्रहण करता था। इसमे दोनो पक्षो की मर्यादा या मान-सम्मान चिरस्थायी बना रहता था। आज की भाति युवक-युवतियो को सौदे के तराजू पर अर्थ के पलडे मे नही तोला जाता था। शास्त्रो में कन्या पक्ष से अनधिकार रूप से याचना करके अर्थ ग्रहण करना पाप और पैशाचिक कर्म समझा गया था। धर्म-शास्त्र के आचार्य मनु ने अपनी मनुस्मृति मे लिखा है—

"पित्रे नाददीत शुल्कं तु कन्यामृतुमतीं हरन्॥"

अर्थात्, ऋतुमती विवाह योग्य कन्या को वरण करता हुआ वर पक्ष कन्या के पिता से किसी प्रकार शुल्क न ले। अन्य स्थान पर कहा गया है—

"न प्रच्यछेत्तु शूद्रोऽपि शुल्कं दुहितरं ददन्।

अर्थात्, कन्या के घर के धन को प्राप्त कर जो सुखी होना चाहता है वह अज्ञानी है क्योकि इस प्रकार का कुत्सित धन अपने नियत समय पर प्राप्तकर्त्ता को समूल नष्ट कर देता है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण मे कहा गया है--

कन्यावरविक्रेता चतुर्वर्णो हि मानवः।

सद्य प्रयाति तामिस्रं यावच्चन्द्र दिवाकरो॥

अर्थात्, कन्या अथवा वर का विक्रय करने वाला मनुष्य चार वर्णो मे चाहे वह किसी भी वर्ण का हो जब तक इस ससार मे सूर्य और चन्द्रमा विद्यमान है तब तक अन्धकारपूर्ण नरक मे पड़ा यातना भोगता है।

इसी आशय का एक श्लोक भविष्योत्तर पुराण में भी उपलब्ध हैं। इस प्रकार उल्लिखित प्रमाणो से सिद्ध होता है कि दहेज को धर्म-शास्त्रो मे अशुभ और अनिष्टसूचक कहा गया है। यहाँ तक कि लक्ष्मी भी उस घर मे वास नही करती, जिस घर मे दहेज के रूप मे क्रय-विक्रय होता है। भविष्योत्तर पुराण में एक स्थल पर महालक्ष्मी ने कहा है—

कन्यावरविक्रेता नरघाती च हिंसक।

नरकागारसदृशं न यामि तस्य मन्दिरम्॥

अर्थात्, मैं (लक्ष्मी) कन्या अथवा वर का सौदा करने वाले और मनुष्य की हिसा करने वाले क्रूर अत्याचारी मनुष्यों के नरक सदृश घरो में नहीं जाती हूँ। दूसरी और मनु ने इसी प्रकार का सकेत कन्या के पिता के लिये भी किया है—

न कन्यायाः पिता विद्वान्गृह्णीयाच्छुल्कमण्वपि।

गृह्णन्शुल्कं हि लोभेन स्यान्नरोऽपत्यविक्रयी॥

अर्थात्, विद्वान् पिता कन्या के लिये थोड़ा सा भी शुल्क न ले। लोभवश शुल्क लेने से मनुष्य सन्तान बेचने वाला हो जाता है। अत: दोनो पक्ष का द्रव्य लेना असगत है।

वस्तुत दहेज-प्रथा जिसके आधार पर आज का सभ्य समाज अपनी पैशाचिक जिह्वा को लपलपाये फिरता है एक घृणित और निंदनीय पातक है और अधर्म का पोषण करने वाला है। आज का दाम्पत्य जीवन एक व्यापार बनता जा रहा है। हमारे हिन्दू समाज मे दहेज-प्रथा के कारण लडकी के पिता को चाहे कितनी भी विपत्तियो का सामना करना पड़े, दहेज के कारण ऋणी होकर महाकगाल होना पड़े परन्तु लडके के पिता को तो दहेज मिलना ही चाहिये। वह सम्बन्धी जो अपने ही सम्बन्धी का घर बर्बाद कर अपना घर आबाद करना चाहता है क्या उसे हम वास्तविक सम्बन्धी कह सकते हैं ? क्या वह सम्बन्ध अटूट रह सकता है जिसमे सम्बन्धी की नस-नस मे दहेज के धन का लोभ रक्त और मज्जा की भांति समाया हुआ हो ?

एक ओर हम जागृति और सुधार का दावा करते है, ऊँच-नीच का भेद-भाव मिटाकर समता का प्रचार करना चाहते हैं, दूसरी ओर लडके का मूल्य आका जाता है। किसी निर्धन बालिका को आत्महत्या करने को विवश किया जाता है। उसके पिता की निर्धनता पर व्यग कसा जाता है। यह कहाँ तक सगत है ? यह हमारा विचारणीय विषय है। विशेपकर युवक-युवतियो को इसके विरुद्ध ठोस और सक्रिय कदम बढाना चाहिये। जब तक यह दहेज का भूत प्रत्येक जाति व समाज से समाप्त नही होगा तब तक दाम्पत्य जीवन मे प्रेम, विश्वास, सहानुभूति, त्याग, कर्त्तव्य आदि सब स्वप्नवत् रहेगे तथा

दाम्पत्य-जीवन में सुख-समृद्धि का कोई बुनियादी तत्त्व इसकी आधार-शिला नही बन सकता।

आज का युग प्रगति और क्रान्ति की आधारशिला रखने की प्रेरणा देने का युग है। समाज के प्राचीन एवं सत्वहीन ढांचे ढीले होकर क्रान्ति की हवा से चरमराने लगे हैं। मानव अपने विकास क्रम मे अग्रसर होना चाहता है। मार्ग के समस्त रूढि-रिवाजो, निरर्थक-बंधनो का वह बहिष्कार चाहता है। वह समाज मे नया रक्त, नया खोल, नवीन उत्साह और नव-चेतना व नव-निर्माण लाने को आतुर है। 'रोमारोला' ने कहा है-"विप्लव किसी वर्ग विशेष की सम्पत्ति नही है जो जगत के आनन्द और कल्याण के लिये नव-निर्माण करना चाहते हैं वे सभी विप्लवी हैं।" आज हमारा समाज हर प्रकार से बुराइयों से पूर्ण है। सदियो के नासूर आज हरे होकर हमारे अग को क्षत-विक्षत करने को प्रस्तुत है। प्राचीन परम्परा की दुहाई देकर आधुनिक सभ्य शिष्ट और सुसंस्कृत समाज दहेज की याचना बिना किसी सकोच व झिझक के करता है। कन्या-पक्ष से जितना धन 'खीचना' हो इसी अवसर पर खीचा जाता है। भला ऐसे अवसर फिर कब-कब आते हैं? यही सोचकर वे 'सुरसा' के समान अपने विशाल मुख को फैलाते है और मनमाना दहेज लेने में अपनी सानी नही रखते। यह दूषित और हीन मनोवृत्ति आज के सभ्य कहलाने वाले समाज मे अधिकाधिक पनपती जा रही है। विशेषकर उन महापुरुषो की हस्ती की समानता ही कौन करे जिनका पुत्र 'फोरेन रिटर्न' हो अथवा डाक्टर या इजीनियर हो। ऐसे महापुरुपो के निकट साधारण जन तो फटक नही मकते, वहाँ तो उन्ही की पहुच होती है जो उन महापुरुषो के "सुरसा से मुख" मे 'स्वर्ण के

लड्डू' ठूस सके और उनकी पैशाचिक अर्थ-लोलुपता को तृप्त करने मे समर्थ हो सके। दूसरी ओर इनके अनुकरण पर समाज के सामान्यजन भी दहेज की याचना करने मे चूकते नही है क्योकि जब 'बड़े लोग' ही मुह माँगा दहेज लेते हैं तो फिर 'छोटो' की बिसात ही क्या ? इसे क्या समझा जाय, यह तो बडो के जूठन का अंश जो है।

यह है आज की स्थिति! आज के सभ्य और उन्नत कहलाने वाले समाज की मनोवृत्ति का सूक्ष्म रेखाचित्र। यहीं पर आकर हमारा पवित्र-विवाह विधान दूषित होता जा रहा है। दहेज के इस कुष्ट रोग ने सामाजिक ढाचे को ही जर्जरित बना दिया है।

यह स्थिति कहाँ तक उचित व न्याय सगत है ? इस प्रश्न का उत्तर हम अपने मानस को टटोल कर दें। 'मेजिनी' की इस आवाज को समझें—"अपने पुरखो के डेरों मे मत सोओ, दुनिया आगे बढ रही है। इसके साथ आगे बढ़ो।"

****
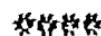
राजस्थान में विवाह का मांगलिक-विधान

विवाह हमारे लिये आनन्द उल्लास स्फूर्ति और प्रेरणा की विभिन्न रगीनियां लेकर जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष बन गया है। विवाह की प्रसन्न किलकारियाँ सम्बन्धी जनो के हृदय पर अभूतपूर्व प्रमोद और मनोरजन की शोभा बनकर लहराती है। विवाह का मोह प्रत्येक नर-नारी को होता है। वर-वधू ही क्या, विवाह मे सम्मिलित होने वाले भी अपने मानस की उमंगो को जमकर खुलने का अवसर प्रदान करते हैं। वर-पक्ष मे, विशेषकर 'बरातियो' को चार दिवस तक नवीन उत्साह और नव-जीवन का आभास हो उठता है। वे एकबारगी ही अपने अतीत के जीवन मे खो जाते है और उनके स्मृतिपटल पर वह दिवस चित्रित हो उठता है--जिस दिन वे भी वर के रूप में सजधज कर विवाह की वेदी के पाहुंने बने थे।

वर तथा वधू को विवाह का 'चाव' वाग्दान के साथ ही लग जाता है। वे अनुराग की भावनाओं के सहारे कल्पनालोक के वासी बन जाते है और भावी जीवन के सुखद रगीन दिवा-स्वप्नो मे खोये-खोये से रहते है। पलको पर लहराती निद्रा-रानी नीलगगन पर झिलमिलाते सितारो की आभा में खो जाती है। पूर्णिमा के जवान चांद की शीतल शुभ्र ज्योत्स्ना

मे उनका प्यार और यौवन का उभार अंगडाई लेने लगता है। आनन्द के अतिरेक मे भाव-विमोहित से हो पवन के हल्के हिलकारे के साथ वे अपने अनजाने जीवन साथी को आहो के मूक संदेशे भेजकर अनुभूति की व्यग्रता मे लिप्त रहते हैं। यह सच ही कहा जा सकेगा कि विवाह का मगलमय पक्ष उषा की लालिमा मे झिलमिलाता, जीवन में सुखद सजीव और कर्मरत रश्मियो का ज्योतिमय प्रभात है।

हमारे यहाँ विवाह की चर्चायें उस समय से ही गृह के आंगन में सम्बन्धी जनो के अधरो पर उभरने लगती है जब वालक-वालिकाये 'सयाने' होने लगते है। कन्या पक्ष को इसकी व्यग्रता विशेष रूप से रहती है। कन्या का पिता कन्या उत्पन्न होने के दिन से ही उसके विवाह और भावी जीवन के सुख की चिन्ता को लेकर आकुल रहने लगता है और यह चिन्ता तब तक समाप्त नही होती जब तक योग्य वर के हाथ में कन्या दान नही दे दिया जाता। पंचतंत्र मे एक स्थान पर इसी प्रकार का सकेत मिलता है।

पुत्रीति जाता महतीह चिन्ता, कस्मै प्रदेयेति महान्वितर्कः
दत्वा सुखं यास्यति वा न वेति कन्यापितृत्वं खलु नाम कष्ट.।

कहा जाता है कि प्राचीन क्षत्रिय घराना में कन्या का होना अभिशाप समझा जाता था क्योंकि कन्या के जन्म होने पर उनकी राजपूती शान (मूछों की ऐंठन) को झुकना पड़ता था-विवाह करके किसी को जँवाई बनाने से! क्या यह स्वाभिमान की पराकाष्ठा नही थी ? इसीलिये शायद वे लोग उत्पन्न होते ही कन्या का वध करने में भी हिचकिचाते नही थे। कदाचित ऐसे 'कन्या-वधिक' स्वाभिमानी वीर उँगलियो पर ही गणना करने वाले रहे होगे नही तो राजस्थान

कर्मवती, पद्मिनी, पन्नाधाय हाडारानी, जैसी वीरांगनाओ के पवित्र श्लाघनीय चरित्र-गाथाओ से वंचित रह जाता तथा जिन नारी रत्नो के आदर्शों की उज्ज्वल कीर्ति को लेकर यहाँ के चारण कवियो ने जो प्रशस्तियाँ लिपिबद्ध की है उनका भी कोई मूल्य नही रह पाता।

१। सम्बन्ध का ठहराव

कन्या के सयानी होने के पूर्व से ही कन्या का पिता होनहार कुलशील और योग्य वर की खोज मे यत्र-तत्र भटकने लगता है। वर-वधू की सगाई-सम्बन्ध निश्चित होने के पूर्व 'कुडली-मिलान' की प्रथा केवल राजस्थान में नही, समूचे भारत के अनेक जनपदो मे प्रचलित है। 'कुडली' के अभाव मे पण्डितो से वर-वधू के 'बोलते-नाम' पर ही गुणों का मिलान करवा लिया जाता है। कुण्डली-मिलान के पश्चात् वर का पिता कन्या को देखने जाता है, कन्या पसन्द आने पर आगे वार्ता को मार्ग मिलता है। तत्पश्चात विवाह पर 'खर्चे-पानी' की वार्त्ता वर-पक्ष की ओर से उठाई जाती है, कन्या को कितना जेवर दिया जायगा, वर को वाग्दान के समय कितने का 'चैक' मिलेगा तथा 'मिलनी' में 'फ्रिज व मोटर-साइकिल तो मिलेगी ही। विवाह के अवसर पर क्या-क्या भेट नजर की जायगी, बरातियो के स्वागत सत्कार मे किसी प्रकार की त्रुटि तो नही होगी। बरात का एक पक्ष का किराया तो निश्चित ही है, वर के पिता को पहरावणी मे क्या-क्या उपहार भेंट किया जायगा। वर की माँ का 'सासू छाबडे का वेश' तो 'सैफून' का होना ही चाहिये, इसके अतिरिक्त अन्य सम्बन्धियो को अलग से मिलेगा ही' आदि-आदि भूमिका से भरपूर लच्छेदार शब्दावली मे 'सा' का विशेषण लगाते हुये वार्तायें होती है और अन्त मे—

"कांई कर्यो जाव' साहजीसा जो परम्परा बडेरा छोडग्या वाने माननो ही पडे छै। टावर की पढाई लिखाई मे भी खर्च-खाटो घणो हुयो ही है, आप सब जानो हो, आपसूं कांई छिप्यो कोयनी। आपणे किण वात री कमी छै। भगवान रो दियोडो सब कुछ है और आप भी साहजी इण वार्ता में जानो हो। थानै कहतां शोभा कोयनी।" आदि के साथ कथन की समाप्ति होती है। इसके अतिरिक्त वर-पक्ष के अन्य सम्बन्धी भी यथास्थान इस भूमिका मे हाँ, हूँ, वाह कहकर अपना पार्ट अदा करना नही भूलते। बेचारा कन्या का पिता मौन रहकर सब कुछ स्वीकार कर लेता है। यदि कोई भाग्य का हो और वह यह कह दे—"म्हारे तो सा 'कूकूं-कन्या ही है देवा-लेवा न कांई कोनी' तो समझ लीजिये उसकी खैर नही। अपमानित और लांछित होकर उसे लौटना ही पड़ता है। आजकल यह प्रथा सर्वत्र अपने किसी न किसी रूप की आड मे वर-पक्ष की महत्ता, उच्चता, शालीनता की दुहाई देकर चल रही है—इसका शास्त्रीय नाम 'दहेज' 'दान' या जो कुछ समझे। आज का सभ्य-प्राणी इसका भक्त भी है और शत्रु भी। कभी-कभी इसमें छलकपट भी हो जाता है जिससे कन्या का जीवन दूभर हो जाता है और उसे सदैव व्यंग्य-बाणो से बेधित किया जाता है। राजस्थान मे विशेषकर यह दहेज प्रथा सभी वर्णों में प्रचलित है कही अत्यधिक तो कही न्यून रूप में। परन्तु वैश्य समाज में इस प्रथा का जोर अब भी है; यद्यपि शिक्षित वर्ग अवश्य इस प्रथा के उन्मूलन का प्रयत्न करने लगा है। पर यह प्रयास आटे में नमक जैसा ही है और कुछ नही।

२ । चाकदान दस्तूर

दोनों पक्षों की ओर से इस प्रकार निश्चय हो जाने पर

बात पक्की समझी जाती है। पण्डितो से शुभ मुहूर्त निकलवा-कर सगाई का कार्य प्रथम वर-पक्ष के गृह पर प्राय: प्रात काल अथवा सध्याकाल को सम्पन्न किया जाता है। इस अवसर पर वर-पक्ष की ओर से अपने जाति बन्धुओ, इष्ट मित्रो आदि को बुलावा (निमन्त्रण) दिया जाता है। कही पर यह कार्य नाई द्वारा, और कही जाति के पडे या सेवक के द्वारा होता है। निश्चित समय पर आमन्त्रित स्त्री-पुरुष एकत्र हो जाते हैं। गृह के विशाल आगन या चौक मे जाजम बिछाकर बैठने का प्रबन्ध किया जाता है। ढोल और शहनाई के स्वर गुजरित हो उठते हैं। वर को बुलाकर उपस्थित समुदाय के मध्य रक्खी चौकी पर बिठाया जाता है। वर के आकर बैठने पर पुरोहित वर से गणपति की पूजन विधि सम्पन्न कराता है। दूसरी ओर महिला-मण्डली की ओर से इस उत्सव पर मगल गीतो में विशेषकर देवी देवताओं के ही गीत गाये जाते है। देवी-देवताओ मे प्रधानत: अपने कुल देवता के साथ ही तेजाजी, भैरूजी, जुझांरजी, माताजी, सतीमाता व पित्तरो के गीत गाये जाते हैं। ये गीत वर की मगल कामना के प्रतीक है जिसमे वर तथा वधू के भावी जीवन के प्रति शुभ भावना निहित रहती है। इधर पूजन का कार्य चलता रहता है तो उधर दूसरी ओर अतिथियो के स्वागत सत्कार का कार्य सम्पन्न होता है। आगन्तुक अतिथियो को ठडाई व शरबत आदि ऋतु अनुसार पेय पदार्थ पिलाया जाता है। पान, इलायची, सुपारी तथा इत्र से अतिथियो का सत्कार किया जाता है। वर द्वारा पूजा करने के पश्चात वधू-पक्ष की ओर से आया हुआ पुरोहित, नाई या अन्य सगा सम्बन्धी वर की 'गोद भरता' है। वर के तिलक लगाकर उसकी गोद में रुपये, श्रीफल, मिष्टान्न, छुवारे तथा बताशे

रखे जाते है। इसके अतिरिक्त वधू पक्ष की ओर से फलो व मिठाइयो के थाल, वर के हेतु पाँचो वस्त्र भेंट किये जाते है। गोद भरने की विधि पूर्ण हो जाने के पश्चात् वर उठ जाता है और अपनी गोद की सामग्री अपनी माता की झोली मे जाकर डाल देता है। तदुपरान्त वर अपने माता-पिता व अन्य सम्वन्धियो तथा आगन्तुक महानुभावो को 'ढोक' (प्रणाम) देता है। ढोक देने पर सम्बन्धी कुछ मुद्रा (रुपये) आदि उसके हाथ मे देते हुये दीर्घायु होने का आशीर्वाद देते है। इसके पश्चात् आगन्तुक अतिथियो को केवल धन्यवाद के साथ ही नही अपितु श्रीफल या गुड भेट करके विदा किया जाता है। यह भेट वर-पक्ष की ओर से की जाती है। स्त्रियो मे बताशे बाँटे जाते है। इस प्रकार यह संस्कार सम्पन्न होता है।

इसी दिन मांगलिक भोजन (लापसी-चावल) वर के घर बनाया जाता है। अपने कुल देवता के भोग लगाकर वधू-पक्ष की ओर से आये अतिथियो को भोजन परोसा जाता है। तत्पश्चात् अपने सम्बन्धी जनो को जिमाया जाता है। वधू के घर से आये हुये व्यक्ति की दो-चार दिन अच्छी आवभगत की जाती है। फिर उसे सिरोपाव, श्रीफल व रुपये भेंट स्वरूप देकर, गुलाबी या केसरिया रग के उनके वस्त्रो पर छीटे देकर ससम्मान विदा किया जाता है।

वाग्दान सस्कार वर के घर पर सम्पन्न हो जाने के पश्चात् वर का पिता शुभ मुहूर्त मे कन्या के घर को प्रस्थान करता है। कन्या पक्ष के यहाँ भी इसी प्रकार का उत्सव सम्पन्न किया जाता है। यह समारोह उतना धूमधाम से नहीं होता जितना वर-पक्ष के यहाँ होता है। समधी के आगमन पर पास-पडोस व नाते-रिश्तेदारी में औरतो को गीतो के लिये निमन्त्रित किया

जाता है। कन्या को चौकी पर बिठाकर उसकी गोद भरी जाती है उसे वस्त्राभूषण उपहार-स्वरूप दिये जाते है दोनो व्याहीसगे (वर व वधू के पिता) गले मिलते है। इसी समय एकत्र महिलाये ब्याहीजी को 'गाल्यां' गाती है। थोडी देर के पश्चात् महिला-मण्डली को बताशे देकर विदा किया जाता है। कुछ दिनो हलवे-पूरी, खीर-मालपुये, घी-घेवर आदि का आतिथ्य स्वीकार करके वर के पिता विदा होते है। विदा के समय उन्हे सिरोपाव व कुछ मुद्रायें (रुपये) भेट में दी जाती है तथा उन पर रंग डालकर विदा किया जाता है। विवाह की तिथि सुविधानुसार इस समय या बाद मे तय करली जाती है।

वाग्दान सस्कार के पश्चात् जब तक विवाह कार्य सम्पन्न नही हो जाता तब तक प्रत्येक पर्व त्यौहार व उत्सवो पर दोनो पक्षो की ओर से वर व वधू के लिये भेट उपहार आदि भेजे जाते हैं। राजस्थान मे प्रमुख रूप से वर को गणेश चौथ पर विशेष उपहार भेट किये जाते है तथा कन्या को छोटी-बडी तीज व गणगोर आदि पर्व पर उपहार भेजे जाते है।

३। लग्न-पत्रिका

विवाह का कार्य उस दिन से ही प्रारम्भ हो जाता है जिस दिन कन्या-पक्ष की ओर से 'लग्न-पत्रिका' अथवा 'पीली चिट्ठी' वर-पक्ष के यहाँ पर नाई अथवा पुरोहित लेकर पहुँचता है। धूमधाम से जाति बन्धुओं तथा पंचो की उपस्थिति मे 'वर' को तिलक करके लग्न-पत्रिका उसकी गोद मे रख दी जाती है। लग्न-पत्रिका को वर की ओर का पुरोहित उठाकर खोलता है और उस पर कुंकुम के छोटे देकर उपस्थित समुदाय के सम्मुख

उच्च वाणी में पढकर सुनाता है जिससे सब लोग सुन सके। लग्न-पत्रिका में—

सिद्ध श्री जोग लिखी' · · · ······से श्रीमान ब्याईजी सा · (परिवारिक सज्जनो की नामावली) को'' ' '' ' कन्या-पक्ष की (परिवार वालो की नामावली) ओर से राम-राम वचावसी।

लग्न-पत्रिका का आरम्भ इस प्रकार से होकर मध्य में विवाह की निश्चित तिथि की सूचना, लग्न का समय आदि लिखा होता है और अन्त मे—'बीद राजा सहित बरात सजोय पधारबा की कृपा करिजो' रहता है। लग्न-पत्रिका मे यह भी निर्देश रहता है कि किस मुहूर्त मे भावरे पडेगी तथा कितने तेल चढने हैं। लग्न-पत्रिका सुनने के पश्चात् पच लोग वर तथा कन्या-पक्ष के गोत्रादि पूछते है। वर-पक्ष की ओर से पचों को तथा उपस्थित व्यक्तियो को गुड बाँटा जाता है तथा महिला समुदाय को गुड अथवा बताशे वितरित किये जाते है। लग्न के दिन स्त्रियां अन्य गीतो के साथ देवी-देवताओ के गीत भी गाती है। इस प्रकार विवाह कार्य का श्री गणेश लग्न-पत्रिका के आगमन से होता है। प्रथम यह पत्रिका वधू के हाथ में रखी जाती है तत्पश्चात लडके (वर) के यहाँ आती है। पत्रिका के साथ धन-द्रव्य भेंट स्वरूप भेजा जाता है।

प्रस्तुत लग्न-गीत में महिलाएँ 'वर' को शुभ सूचना देती है कि 'तुम्हारे ससुराल से पत्र आया है तुम हठ क्यो करते हो उसे पढते क्यो नही'... कहती हुई स्त्रिया वर के उपयुक्त वस्त्राभूषणो का वर्णन करती है। यह गीत देवी-देवताओ के गीत के पश्चात गाया जाता है। इस गीत में वर के उपयुक्त वस्त्र और आभूषणो का ही विशेष वर्णन है जिन्हे कि वर धारण करके 'बीद राजा' के रूप मे सज्जित हो जाता है।

लग्न का गीत

थाका सासरिया सू जी बनासा कागज आया राज
थे तो वाचो क्यू नी जी बनासा काईं हट लाग्या राज ॥
म्हारी साकली रो डोरो-राइवर विदली को रे मकोडो ।
म्हारा वाजूवन्द री लूम लाडला काईं हट लाग्या राज ॥
थाका सासरिया सू जी बनासा पेचा आया राज ।
थे तो वाधो क्यू नी जी बनासा काईं हट लाग्या राज ॥

इस गीत मे इसी प्रकार वर के उपयुक्त अन्य वस्त्राभूषणो जैसे घड़िया, कठी, डोरा, बीटी, पनियाँ, जामा आदि का बखान किया जाता है।

धान हाथ लेना अथवा मू ग हाथ लेना

लग्न-पत्रिका के आने कुछ दिन बाद ही अथवा उसी दिन 'धान हाथ लेवे' द्वारा ७ औरतें विवाह कार्य प्रारम्भ करती हैं। इस कार्य मे निम्न वस्तुये काम मे आती है—

२ छाजला
२ वेलन
२ मूसल
७ पैसा
७ प्रकार का धान

७ औरतो (सुहागिन स्त्रियो) के तथा छाजला, वेलन व मूसल के टीकी देकर मौली बांधी जाती है। कसूमल गोटे की 'ओढ़नी' के नीचे ये सब स्त्रियां बैठ जाती हैं (यह चंदवा कहलाता है) फिर छाजले मे धान और वेलनी परस्पर ले-देकर गणेशजी के निकट रख देती हैं। ये वस्तुएँ मायां के स्थान पर रखी जाती हैं और तब तक वही रहती हैं जब तक मायां नही उठ जाती।

यही सात सुहागन स्त्रिया चक्की पूजन करती हैं और चक्की पर पांच स्वस्तिक चिह्न अंकित करती हैं। मोलिया बाधती हैं। 'पीठी' पीसती है। एक एक करके सातो स्त्रियां पीठी पीसने का दस्तूर करती है। ये ही सात स्त्रियां मेहदी पीसने का दस्तूर भी करती है।

विवाह के कार्य का वास्तविक समारम्भ तब होता है जब विवाह के केवल पन्द्रह दिन शेष रह जाते हैं। ये दिन बड़े आनन्द और उल्लास के होते है। सम्पूर्ण वातावरण गीतो एव लोक-नृत्यो की रुनझुन से मुखरित हो उठता है। एक निश्चित तिथि पर सात सुहागिन स्त्रिया हरे मूंग चुनना प्रारम्भ कर देती हैं इसे मूग हाथ मे लेना भी कहा जाता है। यह कार्य दिन में गणपति का आह्वान गीत गाकर किया जाता है। यही से स्त्रिया वन्ना गीत आरम्भ कर देती है।

इसी प्रकार कन्या-पक्ष की ओर भी सुहागिन स्त्रियां हाथ मे धान लेकर विवाह के कार्य प्रारम्भ करती हैं। यह काम 'हथलिया' कहलाता है। वर तथा वधू-पक्ष के यहा 'मूंग हाथ' में लेने से विवाह का कार्य प्रारम्भ हो जाता है। इसके पश्चात दोनो पक्षो द्वारा अपनी-अपनी जाति और समाज तथा व्यवहार के व्यक्तियो मे गुड वितरित किया जाता है। मारवाड़ियो में 'कसार के लड्डू' और शक्कर का गिडोला देते हैं। कहीं-कही गुड आदि वितरित करते समय पुरुषों के साथ स्त्रियां भी सामूहिक रूप मे साथ जाती है। पुरुषों में घर का एक व्यक्ति, सेवक या नाई ही रहता है।

दोनो पक्षो की ओर से जिनको गुड़ दिया जाता है वे 'आन्दली'—मिष्ठान, विविध प्रकार के फल-फूल, मेवा,

नारियल भेजते हैं। आन्दली के साथ भेट स्वरूप कुछ मुद्रा भी रखी जाती है। वर तथा वधू के लिये आन्दली में पान और पुष्पमाला का महत्त्वपूर्ण भाग रहता है। आन्दली स्वीकार करने पर शादी के प्रीतिभोज तथा अन्य अवसरो पर उन्हे न्योता-निमन्त्रण दिया जाता है। यह आपसी व्यवहार का एक आवश्यक और विशेष अंग है।

इस अवधि में महिलाएँ सामूहिक रूप से विवाह गीत गाती रहती हैं। वर-पक्ष के गीतों में प्रमुखतया घोडी, बन्ना और सेवरा आदि हैं। वधू-पक्ष के गीतो में बनी और सुहाग-कामण आदि गीत मुख्य रूप से गाये जाते है। रात्रि को ढोल और कासी की थाली के साथ नृत्य और गीतो का विशेष आयोजन होता रहता है। बान बैठ जाने के बाद प्रतिदिन इस प्रकार का आयोजन चलता रहता है।

**

मायां

विवाह के घर में एक सुसज्जित कक्ष में माया की स्थापना की जाती है। स्वच्छ लिपी पुती दीवार पर गणपति की मूर्ति चित्रित की जाती है। गणपति के दाये वायें ऋद्धि-सिद्धि चंवर डुलाती हुई खडी की जाती है। गणपति के चरणो के निकट उनके वाहन मूषक को बिठाया जाता है। गणपति के चित्र के निम्न भाग मे सात टीकी कुमकुम की व सात टीकी घी की लगाई जाती है। पास मे कलश स्थापित किये जाते हैं कलश के नीचे आखे गेहूं जौ आदि रखे जाते हैं। पास मे घी का दीपक रहता है जो निरन्तर जब तक मायां नही उटती है तब तक जलता रहता है। इस प्रकार यह स्थान जहां विवाह के महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किये जाते है माया का स्थान कहलाता है। वर और कन्या दोनों ही के पक्षों मे सर्वप्रथम मायां की स्थापना की जाती है। तदुपरांत वान विनायक का कार्य होता है।

माया के स्थान की पवित्रता का विशेष ख्याल रखा जाता है। इसमे किसी अस्पृश्य स्त्री या पुरुष को प्रवेश नहीं करने दिया जाता है। वर व कन्या के सब मांगलिक कार्य इसी स्थान पर सम्पन्न किया जाना शुभ माना जाता है विशेष कर सुहाग की मंजुल मनोहर और मनभावनी रात्रि का आस्वादन करने का मुख्य स्थान भी यही रहता है। वर तथा वधू का प्रथम समागम देवता की साक्षी में सम्पन्न होता है शायद विशेष प्रयोजन से ही। जैसे पुरुषत्व और नारीत्व की

भावनाओ का लेखा जोखा यहीं पर ही होने का विशेष महत्व है।

विवाह के सब मागलिक कार्य 'मायां' मे ही सम्पन्न किये जाते हैं। वैसे वैवाहिक कार्य तो मूंग हाथ लेने के दिन से ही प्रारम्भ हो जाता है पर वास्तविक कार्यों का 'श्री गणेश' बान बैठने से होता है। बान बैठने से तात्पर्य वर तथा वधू द्वारा गणपति पूजन और गणेश स्थापना से है। छोटा विनायक या छोटा बान पहले बैठता है इसका दिन शुभ तिथि देख कर पुरोहित द्वारा निश्चित किया जाता है।

छोटे बान के दिन प्रथम बार वर अथवा वधू के पीठी की जाती है। ब्रह्म वेला मे शुभ मुहूर्त पर कन्या तथा वर पक्ष के यहा स्त्रियां मगल भावनाओ के साथ गीतो की स्वर लहरी पर मुखरित पहला तेल चढाने का आयोजन करती है। हल्दी तेल चढाने वाली स्त्रियां 'गोरनी' कहलाती है। उनकी सख्या पाच सात या ग्यारह तक भी होती है। 'पीठो' और तेल चढने के बाद स्नानादि किया जाकर स्वच्छ वस्त्र पहिनाये जाते हैं और फिर 'माया' में गणपति पूजन पुरोहित द्वारा प्रारम्भ होता है। वर तथा वधू के निकट छोटा बालक या बालिका बैठाई जाती है। ये विनायक के प्रतिरूप होते है जो 'विनाय-कडा" कहलाते है। छोटे बान का कार्य माया में सम्पन्न होता है जिसकी विधि इस प्रकार है

१. दीवार पर गणपति का चित्र मंडित किया जाता है।
२. पीली मिट्टी के गणेश जी बनाकर पूजन किया जाता है।

बधजे ये लाडी बड पीपल ज्यू, फलजे नीम जमीर ज्यूं ।
लाडली रो चीर बधजो, रायवररो वागो मोलिया ।

(२)

कठा का बाजा बाजा हो गजानन्द, कठ किया छे मिलान–
–श्रो गजानन्द ।
रणतभवर रा बाजा बाताश्रो गजानन्द अजमेर लिया छे मिलान
–श्रो गजानन्द ।
बून्दी रे छाजे नोबत बाजे तो झरन झरन झालर बाजे
–श्रो गजानन्द ।
नौबत बाजे नगारा भी बाजे तो झरन २ झालर बाजे
–श्रो गजानन्द ।
बून्दी रे छाजे नौबत वाजे तो झरन २ झालर बाजे
–श्रो गजानन्द ।

(३)

चालो विनायक श्रापा वजाजी रे चाला
तो श्राछा २ कपडा मुलावा सो म्हारा विरद विनायक ।
चलती गाडी री वावो लोयर तोड़ी,
हाल्या रा मु डा वाका किया श्रो मारा विरद विनायक ।
चालो बिनायक श्रापा सोनिडा रे चाला
श्रो श्रच्छा २ गहणा मुलावा श्रो मारा विरद विनायक ।
चलती गाडी रो वावो लोयर सावी
हाल्या रा मुन्डा सीधा कीधा जी मारा विरद विनायक ।
दून्द दून्दयाला बाबा सून्ड सू डालो, श्रोछी सी पीडया एज नगारा
श्रो म्हारा विरद विनायक ।

(४)

म्हारी गाडी रही बालू रेत मे विनायक एक वेला के कारणे ।
म्हारो धन रहयो धरती माये गजानन्द एक पूता के कारणे ।

मधुर उल्लेख हुआ है। तृतीय गीत मे गोरनें जो तेल चढाती हैं उनकी चूदडी पर चिकनाहट का आ जाना ही प्रश्नवाचक चिन्ह बन जाता है कि तुम्हारी चूनरी चिकनी क्यो कर हुई ? वह भी सीधा और स्पष्ट उत्तर देती है कि रायजादा वर या रायजादी वधू के तेल चढाने के कारण ही चूनरी चिकनी हो गई है।

पीठी के गीत

–१–

मगरे रा मू ग मगाओ अे, म्हारी पीठी मगरे चढावो अे।
म्हारी तेलण आमण लायी अे, तेलण तेल घडो भर लायी अे।
म्हारी मालण आमल लायी अे, मालण चम्पो मरवो लायी अे।
चपै री चौसठ कलिया अे, वनो पूरी ठान री रलिया अे।
वनडे रे हाथ पतासा अे, वनो करे वनी सू तमासा अे।
वनडे रे हाथ मे डोरी अे, वनडे से वनडी गोरी अे।
वनडे रे हाथ मे कूची अे, वनडे से वनडी ऊची अे।

–२–

म्हारी हल्दी रो रग सुरग निपजै मालवै।
हल्दी मोल पसारी री हाट, वनडे रे सिर चढै।
चिरजीवो रायजादै रा वावा जी चतर सुजाण हल्दी मालवै।
थारी माता रे मन कोड घणा करे।
म्हारी हल्दी रो रग सुरग निपजै मालवै।

इस गीत को आगे काक्या, माम्यां, भाभ्या आदि के नाम के साथ बढाकर गाया जाता है।

बड़ा बान

छोटे बान के पांच अथवा सात दिन पश्चात् बड़ा बान या विनायक का समारम्भ विशेष धूम-धाम से होता है। प्रातःकाल वर-वधू के तेल चढाया जाता है। कही-कही पर उससे पहले रातीजगा होता है। तेल चढाने वाली सुहागिन-स्त्रिया गोरनी कहलाती हैं। तेल चढाने वाली स्त्रियां अपने-अपने पतियो का नाम ले लेकर गीतो की स्वर लहरी पर झूमती हुई तेल चढ़ाती हैं। गोरनिया दूर्वा को दोनो हाथ मे लेकर उसे तेल मे भिगोकर बायें हाथ पर सीधा रखकर तेल चढाती है। प्रथम मस्तक, फिर मुख, वक्ष, दोनो घुटने फिर दोनो चरणो को क्रमशः सात-सात बार स्पर्श किया जाता है। तेल चढ़ने के उपरान्त पीठी द्वारा उबटन किया जाता है तब पीठी तथा तेल के गीत गाये जाते हैं। उबटन के बाद स्नान आदि करके स्वच्छ वस्त्र पहिनाये जाते हैं। फिर मायां मे पूजन के लिये ले जाया जाता है। बडे विनायक के दिन ये कार्य विशेष रूप से किये जाते हैं।

१ चौक में लाल वस्त्र, मूंग और कोरे दीपक की तणी बांधी जाती है।

२. गणेशजी के चित्र तथा कलश के कुमकुम की सात टीकी दी जाती हैं।

३ काकण डोरडा बनाये जाते हैं। डोरड़े बहुधा लाल रेशमी वस्त्र अथवा मोली (लच्छा) को बंटकर तैय्यार किये जाते हैं। उसमें एक कौड़ी, एक लोहे की बीटी, एक लाख की बीटी तथा लाल वस्त्र मे नमक तथा राई बांध देते है। इस प्रकार काकण डोरडा तैयार किया जाता है।

बियाणी-गीत

बडे बान के दिन से प्रातः काल सूर्योदय के पूर्व ही बियाणा गीत गाना प्रारम्भ हो जाता है। प्रातः काल वर अथवा वधू को घी बतासा पिलाया जाता है। इन गीतो को जागरण गीत भी कहा जा सकता है। इन गीतो मे, तारा, सूरज, मेहर्दी, हथनी, धर्म का वीरा, धर्म की चून्दरी, कूकडा, आदि गीत गाये जाते हैं।

उठ राणा उठ राजवी
थे तो उठोजी काश्यप जी रा जोध बियाणा।
थे तो उठोजी महादेव जी रा जोध बियाणा।
ओ राजा बलियाणा।
था घर सूता न सरे
थाकी नगरी मे ओ राजा आणन्द उछाह बियाणा।
ओ राजा वलियाणा॥

इस गीत मे आगे घर वालो के, बेटे तथा पोते का नाम लेकर गीत को आगे बढा कर गाया जाता है।

हथिनी

हथणी चाले जी मुलकती वडा शहरा रे माय।
मोटा शहरा रे माय, २ कुमकुम रज उड़े॥टेर॥
मैं थाने पूछू सूरज जी मे थाने पूछू महादेवजी।
कठे थारे रहन को वास, केसरवर्णीजी रज उडे॥
गढ़ (नाम) रली आवनो, गढ कैलास रली आवणो।
वठे माका रहन का वास, जास्या कैलास की जात॥
केसरवर्णी जी रज उडे, कुमकुमवर्णी जी रज उडे॥

पोढया जागो ओ महेश जी ओ आप ।
सूरज भल उगिया ।। टेर ।।

इस गीत मे आगे काश्यप जी रा जोध के स्थान पर घर के बुजुर्गों के नाम लिये जाते हैं तथा गीत को दोहराया जाता है ।

घीमरी

घी पी म्हारा अथ लाडा ओ घी पी
थारी मायड पावै, डोर हलावे, हमसे रलिया रास करै
मजीरा बाजै, नरगु बाजै ।
वेल्या शवद सुनावे ।
पाडोसन मगल गावै ।
घी पी ....

आगे मां, बहिन, मामी आदि के नाम लिये जाते हैं ।

इस गीत के साथ साथ लाडा या लाडी को घीं में बतासे को डुबोकर स्त्रिया क्रमशः मुह मे देतो जाती हैं तथा गीत गाती जाती हैं । यह क्रम निकासी तक चलता रहता है ।

बना-बन्नी के गीत

विवाह के गीतो में घोडियाँ या सेवरा और सुहाग अथवा कामरण गीत उल्लेखनीय है । घोडियों (घोडी के गीत) 'वर' के घर गाये जाते है और सुहाग 'कन्या' के घर । संगीत की दृष्टि से भी इनमें बहुत भेद रहता है । विवाह के बहुत दिन पूर्व 'कम हाथ' लेने के बाद से ही स्त्रियाँ वर व वधू के घर में घोडियाँ और कामरण गाना प्रारम्भ कर देती हैं ।

राजस्थान में वर को 'बन्ना' या बींदराजा तथा वधू को 'बन्नी' या बीदणी कहते हैं। विवाह के अवसर पर, बन्ने बन्नी के गीत सैकडो की सख्या में स्त्रिया गातो हैं। बन्ने 'वर' के घर विवाह कार्य प्रारम्भ होने से लेकर 'निकासी' तक गाये जाते है और 'बन्नी' गीत फेरे या भांवर पडने के पूर्व तक।

यहाँ पर कुछ चुने हुए घोडी, सेवरा तथा बन्ना बन्नी के गीत प्रस्तुत है।

घोड़ी

: १ :

नीलडी मारी नवल वछेरी चरज्ये राजा सा रे बाग मे।
पाछी मोडो सा राइवर का दादासा मतरे उजाडो हरिया बाग ने।
पाँच रुपया देउ रे माली का चरवा तो दे मारी नीलडी।
काई करू सा आपका पाच रुपया मारो बिगाडो केशर केवडो।

. २ :

राइवर उतरी बाग मे ये मांय
अे मै किस विघ देखन जाऊँ अे बालक की घोड़ी।
पडला लेलू हाथ मे ये मांय
अे मै वजाजो री वेटी वन जाऊँ अे वालक बीद की घोडी।
गहना ले लू हाथ मे ये मांय
अे मै सोनिडा री बेटी बन जाऊँ ऐ वालक बीद की घोड़ी।
बिडला लेलू हाथ मे ये मांय
पनिया लेलू हाथ मे ये मांय
ऐ मै तबोली री बेटी वन जाऊँ ऐ बालक वीद की घोडी।
अे मै मोचिडा री बेटी बन जाऊँ ''

३

ओवरा में ओवरो जी माये घोडी रो ठाण

जी दाल चावे दलियो चावे नीरे नागर बेल

दादासा ओ घोडी लेदो मोल सा फेर सवेरे जास्या परणबा ।

सासरिया मे सावा बदया काम मे वेगोई तोरन मारस्या ।

४

इदरियो घररायो ओ घोडी, मदरी मदरी चाल ।

चौमासो लग गयो ओ मगेजण, हलवा हलवा चाल ।

थारो वावो जी मोलावे ओ घोडी, माऊ जी निरखण आय ।

थारो काकोजी मोलावे ओ घोडी, काकीजी निरखण आय ।

मंगेजण धीमा धीमा चाल

इसी प्रकार इसमें घर के दादोजी, नानोजी आदि का नाम देकर गीत बढाया जाता है ।

५ ।

घोडी चतर सुजाण हे म्हारे लाडा रे मन भावें

ओक चालें मधुरी चाल, सुहावें म्हारी तेजण खडी रें सुहावें ।

हीर जड्यो मोती वालो सोवें, सिर सेली वालो हीर जड्यो

मुख कवडालो रतन जड्यो

कटे कियो सिणगार, ओ म्हांरे कठे रूप वखाणियो

ओक मथरा प्यारे सज्यो सिणगार, म्हारे गोकल रूप वखाणियो

ओक करे आरती वाई सोदरा

वाई, थारो वीरोजी परण घर आयो

वाले सर मोतीडा वधारियो

६.

घोडी रा हुरे खुरे वाजना

घोड़ी मेदी लगाई वनी पूछे हो ।

प्यारा लाडला घोडी कठा सूं मंगाई
म्हारे दादोसा रे देश, घोडी बठा सू मगाई।
चढो चढो प्यारा लाडला-
घोडी अधरे नचाई।
चम चम प्यारा लाडला देखू चतुराई।
खूब बन्यो प्यारा लाडला
घोडी अधरे नचाई।
खूब वन्यो प्यारा लाडला
सगलो शहर सराई,
आगे बना सा री घोरडी
लारे लोग लुगाई
घोडी अधरे नचाई॥

७

तू तो चाल घोडी चाल
म्हारा दादोसा रे घर चाल।
मैं तो नही चलू महाराज
म्हारे घरा घरा रा आए
घोडी चरे चना की दाल
रायवर जीमे ऊजला भात
वना सा रथ मेल्या सिंगार
वनडी ऊभी जोवे वाट
तू तो चाल म्हारी घोडी
मदरी - मदरी चाल।

८

घोडी वाधो अगर रे रूख चदए रे रूख।
मोड दरवाजे चपे री दोय कलिया रे।

घोडी चढता वसुदेव जी रो नन्द पून्यो रो चन्द
हीरा रो हार मथुरा जी रा वासी ने
धन-धन हो गोरा श्री कृष्ण केसरिया कवर
थारे सेवरो बधावा रे।

सेवरा

: १

राज! नन्दन वन की चार कामडी दो सूखी दो आली राज।
कूनिसा रा कवर कहिजे कूनिसा रे सिर सोवे राज।
राजा दशरथ रा कवर कहिजे रामचन्द्र सिर सोवे राज।
गूथ लाये मालन सेवरो, शाहजादा न सोवे सेवरो।
बालक बनडा न सोवे सेवरो।

२

नदी रे किनारे राइये चम्पेली, कवर किनारे मरवो मोगरो।
वे तो आतारा तोडया राइये चम्पेली, जातारा तोडया मरवो मोगरो।
आप तो बरजो न दादासा पोता तुम्हारा, धूम मचायी सा मारा बाग मे।
थाने बाधबा का पेचा देवाए मालण का—
सेल करबा दो ये हरिया बाग मे।

· ३

ऊँची सी मेडी रावटी मे माली को सौवे अे नचीत।
म्हारे रे रग बनडे रा सेवरा।
म्हारी मालण जाय जगावियो, माली तू क्यो सौवे है नचीत।
म्हारे लाडले बनडे रा सेवरा।
नगरी कुवारा परणसी, म्हारे नवल बने रो व्याह
चोखा सेवरडा गून्थ ल्याय।

माली तो उठियो छोयलो वै तो मोली है लावी सी खिजूर
न रे पखो तो लाग्यो खिजूर को और नाल जे वोत सरूप
कागद लाग्या मुडमुडा और पाट अठारा टाक म्हारे
सोनू तो लाग्यो सोवण और रूपो उजल दत
उडती तो लागी चिडकली और गढ परवत का मोर
मोती तो लाग्या वाटला और लाल लगी लाव च्यार
सिर भर मालण निसरी, हर भर हटवाड्या रे मांय
लोग महाजन पूछियो रे, तू मालण कित जाय
कवर असिर का ही सेवरा, म्हे तो घर विरमादतजी रे जाय
पूत सपूती आगेडी बहू सावत दे लियो है मोलाय
लाय धर्या सामी साल मे कोई चार देखो रखवाल
दादी तो भुवा भाभी, अे तेरी जणी अे सहोदर मांय
म्हारे रग बनडे रा सेवरा।

४

जी माली थारा बाग मे दादासा बायी भांग
भांग भांग दादासा पीग्या लार रेग्या फूल
जी उमराव बनासा गजरा गूथा इर बनिसा रे भेजदो
जी सरदार बनासा सेवरा गूथा यर सिर पर टागलो।

सुहाग तथा कामण

१

कोरी कोरी कूलडी मे दहियो जमायो राज।
आज मारा राइवर ने दादासा घर नूत्या राज।
दादासा तो नूत्या राइवर दादी नूत जिमाया राज।
हरी कूकडी नीलो सूत बाधो जी सासूजी रा पूत

बाघ्या सूंघ्या करो सलाम एकरी सलाम माई दूसरी सलाम
तीसरी सलाम थाका बाप का गुलाम
छोड ये दादासा री प्यारी अब तो कामण होग्या राज
कामण सा तो पेली केता अब तो गाठा गुलग्या राज ।

२ .

वना काकड आया विराजा सा गज कामणिया ।
काकासा ने करोड बाधू मामासा ने मरोड बाधू,
हाथी तो हजार बाधू, घोडा तो पचास बाधू ।
घोडी से तो बीद बाधू वना बाधू गोत गुडु वो सा गज कामणियां ।

३

माका राइवर आया ये हल पर बैठ जीमाया छै
पूछा जी लाडी की मायड थे भी कामण जाणो छो ।
नई भई भई करता जाई करडा कामण करता जाई ।

· ४

वनी गई वारे माताजी के पास देओ माताजी अमर सुहाग ।
ओरा ने देऊ बाई पुडी ये वधाई, थाने कवर वाई छाव भराई ।
पुडिया रो सुहाग माताजी उड २ जाय छाब भर्‌यो मारो अमर सुहाग ।

५ .

लाडी की मायड दाल दलो न उडदा की, थे उडद मू ग सब
दल लो सुहाग कामण करलो ।
वे कामण लाग्या अल्ल, सुहाग लाग्या पल्ल ।

बन्ना

. १ .

बना सा ने पेचा सोवे ए
अमा ए तुररा री छिब न्यारी
बना सा ने आवा दीजो ए
बनो हूँडी वाला रो ए
बनो सिली वाला रो ए ॥ टेर ॥

अमा ए अणियारी री आख्या रा
बना सा ने आवा दीजो ए ॥

बना सा ने मोती सोवे ए
अमा ए डोरा री छिब न्यारी
बना साने आवा दीजौ ए ।
अमा ए उजली बत्तीसी
बना सा ने आवा दीजो ए ॥

बना सा ने भात्या सोवै ए
अमा ए घडिया री छिब न्यारी
बना सा ने आवा दीजो ए ॥
अमा ए पतली कमरया रा
बना सा ने आवा दीजौ ए ।
बनो हूडी वाला रो ए
बनो सिली वाला रो ए ॥

. २ .

हँसती तो थे ल्याओजी बना
घुडला तो थे ल्याओजी बना
हँसत्या रा हलकै पधारोजी बना

घुडला रा घूमर आओजी वना
दल-वादली से पाणी कुण भरै ।
म्हैं भी भरिया जी म्हाकी सहल्या भरे
सेलीवाला सा वना आडा आडा ही फिरे
दल वादली रो पाणी कुण भरै ॥
पडलो तो थे ल्याओ जी वना
पडला मे सब रग ल्याओ जी वना
दल-वादली रो पाणी कुण भरे ॥
चूडलो तो थाँ ल्याओ जी वना
चूडला रे तकस दिराओ जी वना
दल-वादली रो पाणी कुण भरै ॥
सोनो तो थाँ ल्याओ जी वना
चाँदी तो था ल्याओ जी वना
वनडी रे अघड घडाओ जी वना
दल-वादली रो पाणी कुण भरै ॥
मेवो तो थाँ ल्याओ जी वना
वनडी री गोद भराओ जी वना
दल-वादली रो पाणी कुण भरै ॥
विडला तो थाँ ल्याओ जी वना
वनडी रा होठ रचाओ जी वना
दल-वादली रो पाणी कुण भरै ॥
जानी तो था ल्याओ जी वना
जान्या री जोड लगाओ जी वना
दल-वादली रो पाणी कुण भरै ॥
वनडा तो था आओ जी वना
वनडी ने परण पधारो जी वना
दल वादली रो पाणी कुण भरै ॥

: ३ :

हँसती तो थां ल्यावजो जी
हँसता रे हलकै पधारो जी
नवल बना,
आवै छ लपट थामे अन्तर री।

बना अन्तर री रे चमेली री
गधन री जै लहरा लेता आओजी बना
आवै जी लपट थामे अतर री।

(आगे ऊपर के गीत के अनुसार ही घुडला, चुडला, सोना, बिडला, वराती आदि के नाम ले लेकर गीत को बढाकर गाया जाता है।)

४

हसती तो कजली देसा री लाज्यो जी
घुडला तो पारस देस रा लाज्यो
वाहण रे भलके आओ जी बनडा
करवां रे रलकै आवो जी बनडा।

बनडो बूझे ए म्हारी बनडी
के गुण पायो भरतार, जी बनडी
के गुण पायो भरतार, जी बनडी।

चार बज्यां मैं सोती उठती
गीता रो करती पाठ, जी बनडा
थारे तो खातिर कातिक न्हाया
वरत कर्या सौ साठ, जी बनडा।

नौ दिन तो मैं कर्या जी नौरता
सोला दिन गणगौर, जी बनडा
पनराडी मैं ग्यारस करती
बारा करती चौथ, जी बनडा।

इतरा तो मैं जप तो ये करती
जद पायो भरतार, जी बनडा
जद पायो भरतार, जी बनडा ॥

: ५ :

बना रे, सोनो लका देसरो सरे घर आणा
था री रे बनडी रे भंवर घडाय
बनी तो लागै प्यारी रे,
पुसवन की या सुगध सवाई रे ।

बना रे, रूपो ऊजल देस रो सरे घर आणा
थारी, रे बनडी रे पायल घडाय
बनी तो लागै प्यारी रे,
पुसवन की या सुगध सवाई रे ।

बना रे, मोती हर समदा पार रा सरे घर आणा
थारी रे बनडी रे हार पोवाय
बनी तो लागै प्यारी रे,
पुसवन की या सुगध सवाई रे ।

बना रे, सालू सागानेर रा सरे घर आणा
था री रे बनडी रे किरण लगाय
बनी तो लागै प्यारी रे,
पुसवन की या सुगध सवाई रे ।

बना रे, चूडलो हसती दात रो सरे घर आणा
था री रे बनडी रे बाय पैराय
बनी तो लागै प्यारी रे,
पुसवन की या सुगंध सवाई रे ।

बना रे, बनडी घणा परवार री सरे घर आणा
जोडे सू महल पधार

वनी तो लागै प्यारी रे,
पुसवन की या सुगध सवाई रै ।

: ६ ·

म्हाँरे वनडे ने किसडो मिलियो सासरो
म्हाँरे रै रग वनडे ने मन भाय ।

अे जी किसडो मिल्यो रामचन्दर ने सासरियो
किसडी साला री जोड ।।

सुरगो मिल्यो छै म्हारे लाडले ने सासरो
सखियाँ साला री जोड

म्हारे वनडे ने किसडो मिलियो सासरो
म्हारे रग वनडे ने मन भाय ।

किसडी मिली म्हारे रग वना ने सालिया
किसडी मिली घर नार

डावर नैणो मिली म्हारे बनडे ने सालियाँ
चदा वदणी घर नार ।

किसडो मिल्यो लाडले न सुसरोजी
किसडी मिली अेक सास

(७)

डूंगर ऊपर डूगरी सा वना जापर दाखा रो रूख,
दाख तले होयर निसर्याजी वना अटकी घोडा री लगाम ।
छोडो राइवर छेवडो सा म्हारा दादा सा देख सा राज,
दादा सा देख तो कई करू ये वनी पचा मे पकड्यो छ हाथ ।
पञ्चा मे पकड्यो तो कई करू सा वना जान जिमाई म्हारा वाप,
जान जिमाई तो कई करा सा वना रस्ता मे चाल्या सारी रात ।
रस्ता मे चाल्या तो कई करा सा, डायजो दियो म्हाका वाप ।।

(८)

बनी ये थारा दादा सा रा महल, पानाये फूला छावियां सा ।
बनी ये आणेली राईवर की बारात, सवायो लागे बारणोजी ।
बनासा घुडला ने धीरा मन्दरा छोडो, पाडे सा म्हारो आगनो ।
बनी ये सिलावट रो बेटो म्हारी साथ, आगन काच बिडवसा ये ।

पिछले तीन बन्नो मे दादा सा के स्थान पर काका सा मामा सा, फूफा सा आदि लगा कर गीत को आगे बढा कर गाया जाता है ।

इसके अतिरिक्त राजस्थानी महिलाओ ने आधुनिक युग के अनुकूल भी सैकडो बन्ने बन्नी बना लिये है जिस पर हिन्दी का प्रभाव है । उदाहरण के रूप मे कुछ बन्ने प्रस्तुत हैं—

(९)

बन्ने गहना तो आप लाय, बाग मे आना,
बागो मे क्या क्या चीज, मुझे बतलाना ।
बन्नी कच्चे दाडम दाख, उसे मत तोडो,
वे रम रहे दादर मोर, उन्हे मत छेडो ।
बन्ना रस्ते मे लग रही भूख, होटल पर चालो,
लगवा दो कुरसी मेज, चाय मगवा दो ।
बन्ना चाय बडी अकराल, बिस्कुट मगवा दो,
नाखून मे हो रहा जहर, चम्मच मगवा दो ।

(१०)

भोजन बनाया हो बना, जीमन के वास्ते
हो जीमन के वास्ते ।
जीमन के पहले तो बना, इनकार कर दिया ।
गाधी ने हिन्दुस्तान को आजाद कर दिया ।
जिन्ना ने पाकिस्तान को, बरबाद कर दिया ।

नेहरू ने लेक्चर देने मे कमाल कर दिया ।
इन्दिरा ने शासन करने मे, कमाल कर दिया ।

बन्नी

(१)

बन्नी सा रा माथा ने मेहमद सोवे ।
रखडी पर ए, झूटना पर ए
राइवर रीझै ये लडवण गहरी घूमर घाले ।।
थे तो हिंडोजी कँवरवाई हिडो,
नाचण रो ये, हरमल रो ये,
झोटा देवे ये लडवण गहरी घूमर वाला ।
लाडी सा रा चाँद पोल दरवाजा
तख्ता पर ये, तख्ता ये
थारी सासू नाचै ये लडवण गहरी घूमर वाला ।

(२)

बन्नी तेरे आगन मे फूलो की बहार है ।
फूलो ही का टीका हैं, फूलो ही के किलिफ है
फूलो का ही जूडा तेरे माथे का सिंगार है
फूलो ही के एरिंग है फूलो के ही टोप्स है
फूलो ही के कुण्डल तेरे कानो का सिंगार है ।

उपर्युक्त दोनो गीतो में विभिन्न अगो तथा उन पर पहने जाने वाले गहनो का नाम लेकर गीत को आगे बढाया जाता है ।

(३)

गहनो तो आप लावजो सा, गहना मे रतन जडाय
ऐ उदियापुर री तबोलन बन्नी सा ने बिडला चबाय

काथो तो चूनो, एलची सा
असल नागौरी पान ।
ये बीकानेर री तबोलन बन्नी सा ने बिडला चबाय ।।
पडलो तो आप लावजो सा, पडला मे सब रग लाय ।
अे उदियापुर री तबोलन, बन्नी सा ने बिडला चबाय ।
कतर कतर बिडला कर्या सा ।
चाबो न चतर सुजान ।
अे सागानेर की तबोलन बन्नी सा ने बिडला चबाय ।।

(४)

सुनो र दादासा बाई री बिनती, सुनजो चित लगाय ।
सुनो र काकासा बाई री विनती सुनजो चित लगाय ।
साचा मोती सू माडो छावजो तडके आवेली बरात ।
हीरा मोती सू माडो छावजो तडके आवेली बरात ।
जेठ घुडला सा सुसरा पालकी देवर खुरीय रलाय ।
राइवर तो हस्ती चढ्या, जापर चॅवर ढुलाय ।

(५)

दादा सा के बागो मे जाय के, कच्ची कलिया तुडइयो मोरी लाडली
काकासा के बागो मे जाय के, कच्ची कलिया तुडइयो मोरी लाडली
कलिया तुडवाकर बाग से तेरी चुनरी रगाइयो मोरी लाडली
पचरगी चूनर ओढ कर, सुसराल घर जाइयो मोरी लाडली
सुसराल के आगन नीम्डी जरा झुक झुक जाइयो मोरी लाडली
सासु है तुम्हारी रानियाँ, वे सहज ही देगी गालियाँ
उससे लड मत आइयो मोरी लाडली ।

(६)

चादा बाबा सा चादनी सी रात, जी कोई चादा रे उजाले लडवण निसरी
जाज्यो बाबा सा देश परदेश, जी कोई म्हारी जी जोडी रा राइवर हेरजो

गिया ये वाई देश परदेश, जी कोई थाकीजी जोडी का राइवर न मिल्या।
झूठा वावा सा झूठ मत बोल जी कोई माकी जी जोड़ीका उदयपुर शहरमे
वे छ वाई मोटा सरदारजी कोई दूणो जी क डेढो माग डायजो
कोई सामी जी क माग वाई री खीचड्या।
आप छो दादासा मोटा उमराव जी कोई दूणोजी क दीजो वाई न डायजो।
कोई सामीजी क दीजो बाई ने खीचडया।

(७)

सरवर पर वगलो, बगला मे पोढ्या राइवर एकला।
तू तो जाये चम्पा दासी, जाये जगाजे म्हारा श्याम ने।
तू तो जाये हीरा दासी, जाय जगाजे म्हारा श्याम ने।
मैं किण विध जाऊ सा, वे तो सूता छे सुखभर नीद मे।
वन्ना कहा रह गया मा, रात्यू नही आया वन्नी सा रा महल मे।
वन्नी बाग गया अे, माली नही सीचो हरिया वाग ने।
वन्नी केलो कुम्हलायो, जल विन कुम्हलायो फूल गुलाब को।
वन्ना वन्नी कुम्हलाई सा, रात्यूं नही आया बनिसा रा महल मे।

जिन गीतो बाबा सा, काका सा से गीत आगे बढता है उन्ही मे मामा सा, फूफासा, मासा सा, वीरा सा आदि लगा कर गीत को बढा कर गाया जाता है।

(८)

चढ चौवारा अे नवल वनी चढ चौवारा अे
हाँ, अे तू तो देख सूरजमल रो रूप
नवल वनी चढ चौवारा अे।

लाज आवे जी नवल वना लाज आवे जी
ओ जी म्हारो देखे बाबा सा रा लोग
नवल वना लाज आवे जी

लाज क्या की अे नवल बनी लाज क्या की अे
ओ अे थाको पचा मे पकडू हाथ
नवल वनी लाज काकी जी।

इस गीत को काका, नाना, मामा, ताऊ आदि का नाम लेकर प्रश्नोतर रूप मे आगे बढाया जाता है।

६

माथा नै महमद पहर ल्यो ऐ
झुटना रतन जडाय
ओ बीकानेर की तबोलन
बनी सा नै बिडला चबाय ।

काथो तो चूनो ऐलची ऐ
सोना वरण वरख लगाय
ओ बीकानेर की तबोलन
बनी सा नै बिडला चबाय ।

मुखडा नै वेसर पहर ल्यो ऐ
हिवडा नै हांसल पहर ल्यो ऐ

तिलडी पाट पुआय
ओ बीकानेर की तंबोलन
बनी सा नै बिडला चबाय ।

पूच्या नै चूडलो पहर ल्यो ऐ
नजरा सूं मजरा लगाय
ओ बीकानेर की तबोलन
बनी सा नै बिडला चबाय
पगल्या नै पायल पहर ल्यो ऐ
बिछिया पायल घडाय
ओ बीकानेर की तबोलन
बनी सा नै बिडला चबाय ।

गाडी मे आई सूठ, थेला मे आयो जीरो,
मोटर मे आयो अे म्हारी माँ की जायो वीरो ।
कठे उतारूँ सूठ, कठे उतारूँ जीरो
कठे उतारू अे थारो जामन जायो वीरो ।
माल्या मे उतारो सूठ, पोल्या मे उतारो जीरो
महला मे उतारो अे म्हारी माँ को जायो वीरो ।
ढूस भई सूठ और विखर गयो जीरो ।
रूठ गयो ए म्हारी माँ को जायो वीरो ।
सार लेसूं सूठ, बुहार लेसू जीरो
मनाय लेसू अे म्हारी माँ को जायो वीरो ।

(२)

बहू ऊवा ओवरिये रे द्वार सुमरा सा मोसा बोलिया
ओ सायर वीरा–
बहू पेरो न घर को जी नेश वीरा रे घर री काचली
ओ सायर वीरा ।
सुसरा सा मत वोलो आडा टेडा बोल, वालक छे मारा वीर
वूढा सा माय र वाप, रस्ता मे रेग्या रात
सवेरे देस्या मायरो ओ सागर वीरा ।

सुसरा सा के स्थान पर जेठसा देवरसा आदि लगाकर गीत को बढाकर गाया जाता है ।

(३)

मारी छाव भरी जी छोका नारेला ।
मारी आज वत्तीसी मार दादा सा रे घर दीजो ।
मारी सैया, जामन को जायो उल्टयो ।
मारा दादा सा से मिलता जी हिवडो उवक्यो ।
मारी दादी सू मिलता नैन झलामल लाग्या, मारी सैया जामन

(४)

लाडू मांघू ली मगद का वीरो नूतन चाली रे हुलरिया।
पेहली नूतू ली दादामा पछ दादी हमारी रे हुलरिया
नूतो भेलो न मान सू।
वीरो नूतन आई रे हुलरिया।

(५)

वीरा सा आया पण कहा गया
कठ रे लगायी इतरी वार रे मा का जाया।
बजाजी री दुकाना ए बाई मै गिया।
चूंदडी मुलावता लागी देर ये जामन जायी।
वीरा मा आया बरसे बादली। भावज आया चमके बिजली।

(१)

उड वागमडा म्हारा पीयर जा
नूंत पियरा रा भातबी जे
मल नूती रे म्हारी जलवालजामी बाप
रातादेई म्हारी माय ने जे
मल नूती रे म्हारा कान्ह कवर मा वीर
मैणा भतीजा भावजो जे
मल नूंती रे म्हारी जामण-जायी वैन
सैणां बनोई भाणजा जे
मत नूंती रे म्हारा फारा बाबारी जोट
काली-घटियारी भालो भूलणो जे
नो रे थारां राजसिंघ री छोड
देवर मांगा बोलियो जे
करनी, थे भावज बीरां रो गुमान
थारा पीर बनोसा भावज ने ल्हा जे
मनडा मे पीना नापगी छे पीम

ने घडलो सरवर गयी जे
सरवरियारी वीरा, ऊँची-नीची रे पाल
अेक चढूँ दूजी उतरूँ जे।
झीणी-झीणी रे वीरा उडे छे खेह
बादल दीसे धूँधला जे
बालदां री, रे वीरा बाजी छे राल
गाड चरखता म्हे सुण्या जे
म्हारे वीराजी रा चमक्या छे सेल
भावजां रा चमक्या चूड़ला जे
म्हारी बैनड़ली रा चमक्या छे वीर
भतीजां रा मोवन मौलिया जे।
थां कठे रे वीरा लायी छे पार
मगलांसूँ पैनी थांने नूँतिया जे
ओरा ने वीरा, नाई बामण की नूँत
थां ने नूँतण तो हू गयी जे
ओरा ने वीरा चावलिया री नूँत
थां ने नूँत्या गुड-भेलिया जे
कै थारे, रे वीरा जनमी छे धीव
कै बडगोतण भावज वरजिया जे
ना, बाई, म्हारे जलमी छे धीव
कै वडगोतण भावज वरजिया जे
ना वाई म्हारे जलमी छे धीव
कै वडगोतण भावज वरजिया जे
हम घर अे बाई जलम्यो छे पूत
रली अे वधावा हो रह्या जे
गया छा अे बाई भारतिये री हाट
थानी भारत वाई मोलवा जे

भाग्न रे वीरा भावज ने ओढाय
म्हा ने घणमोलां री चुनडी जे
सुसराजी ने वीरा विरमो ओढ़ाय
सासूजी ने साड़ी सांपड जे
म्हारे जेठा ने वीरा साल-दुसाल
देवरां ने पिचरङ्ग मोलिया जे
म्हारी ननद ने दिखणी रो चीर
देरान्या-जेठान्या रे पीला पोमचा जे

— २ —

आज म्हारा वीरो जी कांकड बस-रह्या
हरख्या छे ग्वाला जी लोग
ओढायी घणदेवा चूनडी
आयो छे मा को जायो वीर
हीरो जड़ ल्यायो चूनडी
ओढूँ तो हीरा, रे वीरा झड पड़े
मेलूँ तो तरसे बाई रो जीव
ओढाई घणदेवा चूनडी
आज म्हारा वीरोजी बागां बस रह्या
हरख्या छे माली जी लोग
ओढायी घणदेवा चूनडी
आयो छे मा को जायो वीर
हीरो जड ल्यायो चूनड़ी
ओढूँ तो हीरा रे वीरा झड़ पड़े
मेलूँ तो तरसे बाई रो जीव
ओढ़ाई घणदेवा चूनड़ी
आज म्हारा वीरोजी सहरां बस रह्या
हरख्या छे महाजन लोग
ओढाई घणदेवा चूनडी

आयो छे मा को जायो वीर
हीरां जड ल्यायो चूनडी
ओढूं तो हीरा, रे वीरा झड पडे
मेलूं तो तरसे बाई रो जीव
ओढाई घणदेवा चूनडी
आज म्हारा वीरोजी पोलया बस रह्या
हरख्या छे देवर-जेठ
ओढाई घणदेवा चूनडी
आयो छे मा को जायो वीर
हीरा जड ल्याओ चूनडी
ओढूं तो हीरा, रे वीरा, झड पडे
मेलूं तो तरसे बाई रो जीव
ओढाई घणदेवा चूनडी
आज म्हारा वीरा जी चोक्या नम रह्या
हरखी छे मा की जाय मान
ओढाई घणदेवा चूनडी
आयो छे मा को जायो वीर
हीरां जड ल्याओ चूनडी
ओढूं तो हीरा, रे वीरा झड पडे
मेलूं तो तरसे बाई रो जीव
ओढाई घणदेवा चूनडी

धर्म रो मायरो

चन्दा रे सन्देशो लादे म्हारे माय रो ।
चान्दणीया मे चमक चीर चीर तो ओढासी धर्म रो वीर ।। चन्दा रे
रस्ते बैठो एक विणजारो गांव विणजणा आयो, जाणु नहीं पराणो
बीगो काई काई लदकर लायो

विश्राम करे पीपल के तले वीरो छाया गैर गम्भीर ।। चन्दा रे ।।
तिस लागी विणजारो म्हारे फलसे पाणी पिवण आये ।
मासू हुतम मू भर लोटा में ठडो पाणी पायो ।
वीरे कि याद क्या करी घात नैना सू वह गयो नीर ।। चन्दा रे ।।
वीरणजारो मत विणज भूल गयो रोटी भूल्यो खाणी ।
घू घट उघाड ताई दु मडा गुनादो नहीं थांरो दिलडे री जाणु
वीरो वण थारा दुखडा हरमूँ कँवो तो पहुँचादूँ पीर ।। चन्दा रे ।।
हँस हँस काम करू रे म्हारा वीरा दुःख महते मुख आई ।
सब कुछ दियो भगवान दियो नही मा को जायो भाई ।
मायरे की मन मे मारी कुण तो ओढासी चीर ।। चन्दा रे ।।
सूरज साक्षी मे धर्म को भाई फिकर करो क्यो बान्जी ।
मायरे मे काई काई चाहीजे, जल्दी करो लिखाई जी ।
आगणीये चढ भर मायरो म्हारे दिलडे मे आवे धीर ।। चन्दा रे ।।
ये मति वहाओ नीर ओढो बाई चीर भाई सिर हाथ धरे ।
विणजारो भाणुडे रे व्याह मे मामा वण मायरो भरे ।
"शिव" कहे वीरो धन कदीयन घटयो, वढ गयो नदिया नीर

।। चन्दा रे ।।

चाक-पूजन

मायरे से उठकर उन्ही वस्त्राभूषणों मे स्त्रियां कुम्हार के यहाँ ढोल-धमाके के साथ 'चाक-पूजन' करने तथा 'बरतन' लाने जाती है। कुम्हार के यहाँ जाकर बरतन की याचना की जाती है। कुम्हार का चाक रोली, चांवल, मोली आदि से पूजा जाता है। चाक पूजन के गीत गाये जाते है। चाक पूजन समाप्त करने के बाद कलश और बरतन आदि लिये जाते हैं। बरतनों को आभूषण पहिनाये जाते हैं। पश्चि सजाकर ढोल और शहनाई के वाद्य संगीत के साथ स्त्रियाँ बरतन लेकर लौटती है। आगे

की पक्ति मे वर अथवा वधू की माता होती है। कही २ पर कुम्हरिन भी बरतन लेकर आगे चलती है। यह अपने २ रीति-रस्म, पर आधारित रहता है। कुम्हारिन को 'ओढणा' ओढ़ाया जाता है और कुम्हार को 'सिरोपाव' बधाया जाता है। ये वासन कही २ पर मेल के दिन व कहीं २ बड़े दिन लाये जाते हैं।

बरतनो का क्रम इस प्रकार रहता है—

१. पांच कलश बड़े 'बिजोरा सहित। हरी डाल रखकर स्वर्ण की कण्डी से सजाकर।
२ एक छोटा कलश वर अथवा वधू की माता स्वय लाती है।
३. एक मटकी या कुम्भ सुवासिनी स्त्री लाती है।
४ ये सब कलश गणेशजी के मकान मे थान पर रखकर उनके सामने स्थापित किये जाते हैं।
५ जवांई कलश की आरती उतारते है। उनको उनका 'नेग' दिया जाता है।

रातिजगा

राति जगा से तात्पर्य रात्रि भर जागरण करके वर की मगल कामना तथा भावी जीवन की सुख-समृद्धि के हेतु देवी-देवताओ के आवाहन गीत गाये जाने से है। ये गीत इतने अधिक होते हैं कि गाते २ अरुणोदय हो जाता है। वर पक्ष में बरात जाने के पूर्व और कन्या पक्ष मे विवाह के एक दिन पूर्व तथा सुहाग रात्रि को भी 'राति जगा' किया जाता है।

राति जगा में देवी देवताओं के गीत गाये जाते हैं जिनमें कुल देवता, सती माता, और पितरों के गीतो की प्रमुखता रहती है। 'रातिजगा' मंगल भावनाओ की आत्मीयता से

श्रोत प्रोत वर वधू के भावी जीवन की सफलताओं का प्रतीक माना जाता है जिसमें देवी-देवताओं के कर्ममय जीवन की चरित्र गाथाओं के द्वारा लोक जीवन के प्रति पूर्ण निष्ठा, सजग चेतना एवम् सुखकारी भावनाओं का सन्निवेष रहता है। रातिजगा की रात्रि को स्त्रियो द्वारा अनेक प्रकार की अनुष्ठान क्रियाये भी सम्पादित की जाती है। सूर्योदय के पूर्व प्रभात वेला के भावपूर्ण और सरस गीत अपना विशेष महत्व रखते हैं जिन मे निद्रा रूपी मोह और अकर्मण्यता का त्याग करने तथा जाग्रत होकर कर्त्तव्य करने की भावमयी उपदेशात्मक उक्तियों की छाया लहराती है।

विधि विधान—

'राति-जगा' की रात्रि को निम्न क्रियायें सम्पन्न की जाती है। पश्चात् गीत आरम्भ होते हैं—

१. माया के गेह मे बाजोट रखा जाता है जिस पर घी का ७ धारा रेला बहाकर दिया जाता है।

२. वर अथवा वधू के हाथ से पीठी और मेंहदी का हाथ चेपा जाता है।

३. लाल और श्वेत वस्त्र बाजोट पर बिछाया जाता है।

४. लाल वस्त्र पर गेहूँ की ढेरी तथा श्वेत वस्त्र पर चांवल की ढेरी की जाती है।

५ ढेरी पर गुड, नारियल, पुष्प माला और घी का दीपक रखा जाता है।

६. घी का दीपक अखंड रहता है रात्रि भर उसकी ज्योति रहना आवश्यक है जल का कलश रखा जाता है।

७. नया रुपया कच्चे दूध में धोकर बधावा का रखा जाता है।

८. गीत आरम्भ हो जाते है।

९. देवी देवताओ के गीत जब तक पूर्ण नही होते तब तक कोई स्त्री (गाने वाली) बीच मे अधूरा गीत छोडकर नही उठ सकती। देवी देवताओ के गीत समाप्त होने पर ही उठ सकती है। ऐसी मान्यता है कि देवो-देवता आकर एक पैर के बल से खडे हो जाते हैं। यह कहा भी जाता है-"जल्दी जल्दी गीत गावो देवता पगा के पाण खड़ा है।"

१०. प्रथम कुलदेवता का गीत गाया जाता है। फिर अन्य देवो-देवताओ के गीत गाये जाते हैं।

देवो-देवताओ के गीतो के अतिरिक्त मेहदो, चूदड, बीजा, काछवा, बलवा खातन मोरया, खटमलिया आदि गीत गाये जाते है। प्रभातकालीन गीतो में 'कूकड़' गीत विशेष प्रसिद्ध है।

११ अन्त मे 'पितरा पाटकडी' दने के बाद घर की एक स्त्री उठती है और जल का एक कलश उठाकर सर्वत्र जल के छीटे दूर्वा अथवा पान के पत्ते से देकर विसर्जन करती है।

गीत--

रातिजगा मे देवी-देवताओ के अतिरिक्त ये गीत भी मुख्य रूप से गाये जाते हैं।

दीपक का गीत—

कुणी जी रे दिवला मेली रे वाट
कुणी जी रे राण्या घी भरे
वाई (बहिन-वेटी का नाम) मेली रे वाट
(गृहस्वामी का नाम) री राण्या घी भरे
वलजे रे दिवला आखी जी रात
आज म्हारा पुरजारो राती जागो।

देवी देवताओं के गीत

देवी-देवताओं के गीत जीवन के हर मांगलिक कार्य के शुभ अवसर पर गाये जाते हैं। विशेषकर विवाह के सम्पूर्ण कार्य लग्नपत्रिका के समय छोटा तथा बड़ा बान के अवसर पर गाये जाते हैं। 'राति जगा' में देवी-देवताओं के गीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये गीत जीवन में मंगल भावनाओं के प्रतीक स्वरूप हैं और चिरायु और सुखी और सम्पन्न होने के लिये देवताओं का आवाहन किया जाता है जिससे सब कार्य निर्विघ्न समाप्त हो जाय।

विनायक—

चालो विनायक आपां जोशी रे चालां।
चोखा सा लगन लिखासा हे म्हारा विडद विनायक।
चालो विनायक आपा बजाज रे चाला।
चोखा सा सालूड़ा मोलावस्या हे म्हारा ....
चालो विनायक आपा सोनी रे चाला............
चोखा सा गहना घड़ास्या हे म्हारा ... ...
चालो विनायक आपा पसारी रे चालां
चोखा सा मेवा मोलावा हो म्हारा ....

आगे क्रमश. गांधी कदोई, तमोली, पनिया आदि नाम लेकर गीत को पूरा करना चाहिये।

पितरां रा गीत—

सोना री झारी राजा रूपा रा वेला।
डोल गांधी ना बेटा [illegible] जी।
[illegible] [illegible] नगर ढंढोल्या।
घर बताओ बनड़ा रा बाप रो जी।
[illegible] कनी री भेरी राजा सात [illegible]

कैल झवरके वांके बारने जी ।
छोटी सी तलाई राजा पानीडो वोतेरो
पितरा रो लश्कर वो घणो जी ।
पितर भी न्हाया राजा वालूडा न्हाया
तोई तलाई मे पानी अत घणो जी ।
छोटो सो बुगचो राजा कपडा वोतेरो
पितरा रो लश्कर वो घणो जी ।
पितरा भी पहरया राजा वालूडा भी पहरया
तोई डाबूल्या मे गहणा अत घणा जी ।
छोटो सो चौपडो राजा कू कू वोतेरो
पितरां रो लश्कर वो घणो जी ।
पितर भी चरच्या राजा वालूडा भी चरच्या
तोइ चोपडा मे कू-कूं अन्त घणो जी ।
छोटी सी कढाई राजा लापसडी वोतेरी
पितरा रो लश्कर वो घणो जी
पितर भी जीम्या राजा वालूडा भी जीम्या
तोई कढाई मे लापसी घणी जी ।.
सोना री-झारी राजा गगाजल पाणी
पितरा रो लश्कर राजा वो घणो जी
पितर भी पीया राजा वालूडा भी पिया
तोई झारी मे गगाजल वो घणो जी
पितर वालूडा राजा न दो आंसीस
थाकी आसीस सू फलस्या फूलस्या जी
नीम जू थे फलजो राजा वेल जू पसरज्यो
लीलडा नारेला लड़ लूमजो जी ।

पितरां पाटकडी

छोटी सी तलाई म्हारी सैंया नीर वोतेरो म्हारा सैंया ।
देवता को लश्कर कहिजे अन्त घणो ।
न्हाया तो धोया पितर हमारे सन्तोक्या म्हारा सैंया ।
तलाई मे दूणी-दूणी मिग चढे ।
छोटो सो बुगचो जीमे कपडा वोतेरा म्हारा सैंया
देवता को लश्कर कहिजे अन्त घणो ।
पहर्‌या तो ओढ्या पितर हुयाजी सन्तोक्या म्हारा सैंया
बुगचा मे दूणी दूणी सिग चढैजी
छोटी सी कढाई लापसड़ी वोतेरी म्हारा सैंया ।
कटाई मे दूनी दूनी सिग चढे ।
छोटो सो चोपटो म्हारा सैंया जीमे रोली वोतेरी ।
म्हारा सैंया चोपडा मे दूणी दूणी सिग चढ़े ।
छोटी सी नगरी जीमे साजनिया वोतेरो म्हारा सैंया ।
जगदीशजी की बेटी पोता अन्त घणो ।

सती माता

सती माता खेले जी आगणे
घर सूरज जी रे आगणा ।

हाथा सोवे दाती रो चूडलो
मुखा सोवे पाना रो बिडलो ।

निलवट सोवे हिंगलू री टीकी
नैना सोवे काजल री रेखा ।

हाथां देस्या दाता रो चूडलो
मुखा देस्यां पाना रो बिडलो ।

निलवट देस्या हिंगलू री टीकी
नैना देस्या काजल री रेखा ।

दियाड़ी माता

माता ऊवा सूरज जी वीदवै
माता ऊवा चदा जी वीदवै ।
माता भाभर के भकार
दियाडी माता ने अघड घडावस्या
माता अघड घडाय पाट पुग्रावस्या
माता राखूंली हियडा माय
माता ऊवी सासू—वूहा वीदवै ।
माता ऊवी देवरान्या—जिठान्या वीदवै
माता गोद झडूल्यो पूत ।
माता अघड घडाय पाट पुग्रावस्या
माता राखूली हियडा माय ।

बीजासण माता

माता हरिया जवारा लेती ऊतरी
तुर्रा टाको जी सुसराजी रा जोध
आज बीजासण ऊतरी
माता कुंभ-कलश लेतो ऊतरी ।
झोल्या झेलोजी सासू बुआ रो साथ
आज बीजासण ऊतरी ।
आगे घरवालो के नाम जोडकर गाया जाता है ।

श्री रघुनाथजी

मोर मुकुट श्री छत्र विराजै तुर्रा री छवि न्यारी जी
तुर्रा री छवि न्यारी लाल थांकी महिमा भारी जी ।
मंदिर चालोजी रघुनाथ धणी रा दरसन करस्याजी ।
मंदिर चालोजी ।

कानां मे थाके कुंडल सोवे, मोत्या की छिब न्यारीजी
मोत्या की छिब न्यारी लाल थाकी महिमा भारीजी
मंदिर चालो जी ॥

गला मे थाके डोरा सोवे कठ्या की छिब न्यारी जी
कठ्या की छिब न्यारी जी लाल थाकी महिमा भारी जी
मंदिर चालो जी ।

जामो तो केसरिया सोवै, दुपट्टा की छिब न्यारी जी
दुपट्टा की छिब न्यारी लाल थाकी महिमा भारी जी ॥
मंदिर चालो जी ।

हाथा मे थाके चटिया, सोवे, बींट्या की छिब न्यारी जी
बींट्या की छिब न्यारी लाल थाकी महिमा भारी जी ।
मंदिर चालो जी ।

पगल्या मे थाके भाभर सोवे, पावड्या की छिब न्यारी जी
पावड्या री छिब न्यारी लाल थाकी महिमा भारी जी ।
मंदिर चालो जी ।

बालाजी (१)

सुसराजी थे छो म्हारा बाप
हुकम करो तो बालाजी रे चालस्या जी
थांकी बहू बोली छै जात,
ताई रे कारण बालाजी रे चालस्याजी ।
पूत्ला री बोली छै जात
पूतला के कारण बालाजी रे चालस्या जी
जेठ बडेरा थे छो म्हारा बाप
हुकम करो तो बालाजी रे चालस्या जी
देवर राजा थे छो म्हारा वीर
हुकम करो तो बालाजी रे चालस्यां जी
भावज म्हारी री बोली छै जात,

काई रे कारण वालाजी रे चालस्या जी ।
चुडला री वोली छै जात
पूतडला रे कारण वालाजी रे चालस्या जी ।
माथव राजा माथा रा सिरदारजी
हुक्म करो तो वालाजी रे चालस्या जी ।
काई की वोली छै जात
काई रे कारण वालाजी रे चालस्याजी ।
चूडला री वोली छै जात
पूतडला कारण वालाजी रे चालस्या जी ।
वजड किवाड पन्ना मारु साँकल जुडी
दिवडो उगे छे वालाजी रे देश मे जी
खोलो वालाजी रे वजड किवाड
साकल खोली वीज्या पीर
खोल्या वालासा वजड किवाड
साकल खोली वीज्या सा की जी
दोनी पन्ना मारु गेठजोडा री जात
रोकड रुपयो वालाजी रे भेट को जी
छोड्या पन्ना मारु लीलडा नारेल
भरता तो छोड्या वाला सा रे चूरमा जी
टूट्या वाला सा मूजा रे पसार
एक गोदया दूजो धरम की आगली जी
थे छो वाला सा अन्जनी रा पूत
कारज सारया राजा राम का जी ।

(२)

वालाजी का रथ पर रतन सिहासन
जगमग ज्योत जै वाला की
जय-जय वोलो वजरग वाला की

वाला की नन्दलाला की, दशरथ नन्द दुलारा की।

अष्ट पहर दोय पोलया विराजे वाला

मौज उडे छै मोहन माला की

शनिश्चर वार दूध का न्हावन वाला

ऊपर धम्म नगारा की।

मगलवार जरी का चोल वाला

ऊपर झडप दुशाला की।

जल शीशम वाला आप विराजो

पत राखो कठी माला की

सरजू की तीर अयोध्या नगरी रामा

चौकी वजरग वाला की।

भैरूजी—

भैरूजी रा आमा-सामा ओवरा वालूडा

कोई देवजी रे सूरज मामी पोलीजी हिडोला-मचोलो जी

कवर केसरया कालूडा

कोई भैरूजी रे आया सिमरथ पावन वालूडा

कोई देवरजी रे हुई मनवार जी

हिडोला मचोलो कवर केसरया कालूडा

कोई भैरूजी रे दूध चढै जी ओ बैठे वालूडा।

कोई देवजी रे रांदी गूजली नीर जी

हिडोलो मचोलो कवरजी केसरया कालूडा।

कोई भैरूजी रे राण्या पहरयो गुडलो वालूडा।

कोई देवजी रे जायो लाडरा पूत जी

हिडोलो मचोलो कवर केसरया कालूडा।

तेजाजी—

गुन मे सो दोय पूनटा वढ़ा जी

एक गुन्द दूजो चांद

ऊवा सगला श्रो तेजाजी थे वडा जी

सूरज री किरणा तपे जी
चदा री निरमल रात
कुल मे तो दोय फुलडा वडा जी
एक धरती दूजो असमान
ऊवा सगला श्रो तेजाजी थे वडा जी

वा वरसे वा नीपजे जी।
दुनिया मे तो दोय फुलडा वडा जी
एक घोडी दूजी गाय।
ऊवा सगला श्रो तेजाजी थे वडा जी

गऊरा जाया हले मडे जी
घोडी रा ढावेला राज
कुल मे तो दोय फुलडा वडा जी
एक मायड-दूजो वाप
ऊवा सगला श्रो तेजाजी थे वडा जी
माता रे श्रोदर श्रोपन्या जी
वाप लडाया छै लाड
कुल मे तो दोय फुलडा वडा जी
एक साहव दूजो वीर
ऊवा सगला श्रो तेजाजी थे वडा जी
वीर श्रोढावे वाला चूनरी जी
साई रो उवछल राज
जो थाकी सेवा करे जी
जाने इंद पूत...... ....ऊवा सगला........
जो थाकी नीदरा करे जी
जाने पटक पछाड़—ऊवा सगला........

गोगाजी

गोगा आजो जी पावणा
कोई बरण भादूड़ा री रात
गोगा री मेड़या चादणा
ऊचा घालूली वेसना
कोई दूध पखारू पावजो
गोगा की मेड़या चादणो
चावल रांदूली ऊजला
कोई हरया मूगा री दालजी
गोगा री मेड़यां चादणो
भैंस दुवांऊली भूरड़ी
कोई रांदू गुदली खीर जी
गोगा री मेड़या चांदणो
घी वरतांऊली तोलभ्यो
कोई तिवरण तीस-बतीस जी
गोगा री मेड़या चादणो
बीजापुर करोजी बीजणो
कोई चतुर उतारो आजोट जी
गोगा री मेड़या चांदणो
थाल परोसली पदमणी
कोई गाभर रे भाार जी
गोगारी मेड़या चांदणो
गोगा-गोगाजी जीमणी
कोई ले ले विचमा गाम जी
कोई अगनित मनू कराय जी
गोगा री मेड़या चादणो।

ीरजी--

ना पीरां करयो रे मलीदो तो लाल गरजी अगवाणी रे मीयां ।
रवे गुमानी घे रवे गुमानी बाबो मस्त दिवानी तो सुणजो
ारा लाल गुरु की वाणी वे मीया घे रवे गुमानी ।
र नडस बाबो पानी का मगावे
तो दोय भरीया दोय रीता वे मीया घे रवे गुमानी ।।
र भरोटो बाबो घास की मगावे
तो दोय आला दोय सूखा वे मीया घे रवे गुमानी ।।
रु आगण वढ़ वे पलग पर तो
देवर पीमणा पीमे ये मीया घे रवे गुमानी ।
व नगा मे नगर के जाते हुक्का की मनवारी
रे मीया घे रवे गुमानी ।
तो नगा ये सगर के जावे तो बाडी की मनमानी
रे मीया घे खे गुमानी ।
रे गुमानी बाबो मस्त दीवानी तो सुणजो म्हारा
गुरु की वाणी ये मीयर घे रवे गुमानी ।।

आरती

कुंभार राणा कठ्ठे तो बाजा बाजिया
कुंभार राणा कठ्ठे लिया छै मलाण
मो कुंभार राणा बांय पकड घुडला चढो ।
कुंभार राणा जामो तो सोवे केसर्या
कुंभार राणा दुपट्टो तो लाल गुलाल
णा कुंभार राणा बाय पकड घुडला चढो ।।
कुंभार राणा ब्यावर बाजा बाजिया
कुंभार राणा अजमेर किया है पलाण
दो कुंभार राणा बांय पकड घुड़लो चढो ।।

ओ भूंभार राजा चावल रांदूली ऊजला
भूंभार राजा हरिया मूंग की छै दाल ।
ओ भूंभार राणा बाय पकड घुडलो चढो ।१
भूंभार राणा भैंस दुआऊली गूरडी
भूंभार राणा गादली गुदली खीर
ओ भूंभार राणा बाय पकड घुडला चढो ।२
भूंभार राणा पोला पोऊं लोगरी
भूंभार राणा निवण तीस बत्तीस
ओ भूंभार राणा बाय पकड घुडला चढो ।३
भूंभार राणा घी करताऊं तोगड्यो
भूंभार राणा पापड तलूली पचास
ओ भूंभार राणा बाय पकड घुडला चढो ।४

लोडी-बडी

ये म्हारे आजो ओ म्हारी जीजी बाई पावणा ।
बरणा भादूडा री रात
आज तो लोडी रे जी बडी जी आया पावणा ।
ऊंचा तो पानू ओ म्हारी जीजी बाई बेगना ।
लुल लुल लगूली पाव
आज तो लोडी रे जी बडी जी आया पावणा ।
चावल तो रादूं ओ म्हारी जीजी बाई ऊजला ।
हरिया मूंग री छै दाल
आज तो लोडी रे जी बडी जी आया पावणा ।

रामदेवजी—

गडजो बाजन बाजिया अजमल जी का बाया
गडजो गुरजा दे निशान

कठऽ तो गुड्या छै निशान रुणिजा थाका ओ कुंवरजी
शहर मे वाजा वाजिया अजमल जी का चावा
देवरा मे गुड्या छे निशान–रुणिजा शहर थाको ओ कुंवरजा
थाको ज थाका वाप को अजमल जी का चावा
पडं अं न्यारा री ठौर–रुणिजा...
कलक आवे वाझडी अजमल रा चावा
कलक वालूडा री माय–रुणिजा....
आवं वाझडी अजमलजी रा चावा।
नौलग वालूडा री माय रुणिजा ..
काई मागे वाझडी अजमल जी रा चावा
काई वालूडा री माय–रुणिजा....
वेटा तो मागे वाझडी अजमल जी रा चावा।
अन–धन वालूडा री माय–रुणिजा
वेटा तो देस्या वाझडी–अजमलजी रा चावा
छत्र चढावे वाझडा–अजमल जी रा चावा
धजा अे वालूडा री माय–रुणिजा ...

पाबूजी

निलावट रा वेटा तू ही म्हारो भाई रे
महल चुनावत चार जुग हुआ रे
पाबूजी परगोज वागा मे डेरा दिया रे।
हलवाई रा वेटा तू ही म्हारो भाई रे
सीरणी वनावन चार जुग हुआ रे। पाबूजी ..
सोनीडा रा वेटा तू ही म्हारो भाई रे
गहणो घडावत चार जुग हुवा रे पाबूजी....
वजाजी रा वेटा तू ही म्हारो भाई रे
कपडा मुलावत चार जुग हुआ रे।

पोतीडा रा बेटा तू ही म्हारो भाई रे
टोलणी घडावन चार जुग हुआ रे।
पावूजी परणीज........

सूरजजी का गीत

धोला धोला काई करो ओ धोला वन मे कपास
धोलो सूरजजी रो घोडलो ओ, धोला वहू रैणादे रा दांत
उगतो उजास भरणी आथम तो सिन्दूर-वरणो
गऊ ओ चरण चाली पछीडा मारग चाल्या
नेम धरम सब साथ
महेल्या बाबल घर बाज्या ढोल
महेल्या सुसरेजी घर आणद-उछाव
रातो-रातो काई करो ओ रातो चुडले रो मजीठ
रातो सूरजजी रो घोडलो ओ रातो वहू रैणादे रा नैण
उगतो उजास-भरणो आथम तो सिन्दूर-वरणो
गऊ ओ चरणा चाली पछीडा मारग चाल्या
नेम धरम सब साथ
महेल्या बाबल घर बाज्या ढोल
महेल्या सुसरेजी घर आणद उछाव
कालो-कालो काई करो ओ कालो तो वनरा काग
कालो सूरजजी रो घोडलो कालो वहू रैणादे रा केस
उगतो उजास भरणो आथम तो सिन्दूर-वरणो
गऊ ओ चरणा चाली पछीडा मारग चाल्या
नेम धरम सब साथ
महेल्या बाबल घर बाज्या ढोल
महेल्या सुसरेजी घर आणद उछाव
पीलो-पीलो काई करो ओ पीलो सोना री थाल

मेहदी पीसी पीसी चाकनी रे पाट
प्रेम रस मेहदी राचणी
मेहदी छाणी-छाणी सालूडा री कोर
प्रेम रस मेहदी राचणी
मेहदी भीजै-भीजै रतन कचोले बीच
प्रेम रस मेहदी राचणी
मेहदी माडी—माडी लाडी श्रे जेठानी बैठ
प्रेम रस मेहदी राचणी
मेहदी निरखे म्हारी नणदल बाई रो वीर
प्रेम रस मेहदी राचणी
कुण माड्या छे सुवागण थारा हाथ
प्रेम रस मेंहदी राचणी
राच्या-राच्या छे सुन्दर थारा हाथ
प्रेम रस मेहदी राचणी
थारो हाथ म्हारे हिवडे ऊपर राग
प्रेम रस मेहदी राचणी
थारी मेहदी पर वारूँ पन्ना ये ज्वार
प्रेम रस मेहदी राचणी।

नीमड़ली

उदियापुर से बीज मगावो मारूजी
नीमड़ला बुवाद्यो पाल तलाव की जी म्हाका राज।
मालणिया की पाल बंधा द्यो मारूजी
नीमड़ला सींचा द्यो काचा दूध से जी म्हा का राज।
ऊंची नीमड़ली घहर-घमेर मारूजी
फैली नौ ना कोस में जी म्हा का राज।
अब के गणगौरा मारूजी मुजरा जी ने भेज

अबके चोमासा रंग महल में जी म्हां का राज।
सुगरेजों रा जोधा—जोधा पूत
थे क्यों जावे गढ की चाकरी जी म्हाका राज।
अब के ओलगाणे मारुजी जेठजी ने भेज
अबके चोमासे पनामारु घर रहो जी म्हाका राज।
जेठजी के तारा दूनी नार
नित उठ थारा लड पडे जी म्हाका राज।
अबके ओलगाणे पनामारु देवर जी ने भेज
अबके चोमासे प्यारा अठे ही रहो जी म्हाका राज।
देवरिया के गोने आई नार
वा टरपै महला में बैठी अकेली जी म्हांका राज।
अबके ओलिगाणे पनामारु नणदोईजी ने भेज।
अबको चोमासो फूला सेज पे जी म्हाका राज।
नणदोईजी की नारी नादान
या टरपै महला में बैठी अकेली जी म्हाका राज।
अबके ओलेगाणे पनामारु पाडोस्या ने भेज
अब के चोमास्यो हरियल बाग में जी म्हांका राज।
पाडोसियों की आगी सागी पोल
नित उठ गांसे कलैं करे जी म्हाका राज।
पितरा मे पना मारु थे ही गवार
नित उठ पुडला थे करो जी म्हाका राज।
पितरा में मरवण म्हे ही अे सपूत
नित उठ रण में म्हे ही पडां जी म्हाका राज।

बत्तीसी नूतना

विवाह के अवसर पर वर की माता अपने पीहर 'बत्तीसी' या भात नूतने जाती है जिसका तात्पर्य विवाह का आमन्त्रण

पत्र पितृपक्ष वालो को देना है और उसमें पूर्ण सहयोग की कामना प्राप्त करना होता है।

१. थाल मे गुड को भरी और नारियल रेशमी वस्त्र से ढक कर ले जाती है।
२. थाल भाई की गोद में रख दिया जाता है।
३. छोटे भाई भतीजा को नारियल दे दिया जाता है तथा उनके तिलक लगाया जाता है।

इस अवसर पर वीरा का गीत विशेष रूप से गाया जाता है जिसमे भ्रातृ-स्नेह छलका पडता है। जीवन मे भाई बहन के पवित्र संबंध के परिचायक ये वीरा गीत होते है।

मायरा—

मायरा वर पक्ष मे बारात विदा होने के पूर्व ननिहाल वालो की ओर से पहनाया जाता है, वधू पक्ष मे फेरे-भाँवर के पूर्व। राजस्थान मे एक कहावत है कि विवाह का आधा व्यय मायरेती पर निर्भर होता है। यदि मायरे वालो का पक्ष सम्पन्न हो तो ऐसा सम्भव है। मायरेती खुले हृदय से सब कार्य करते हैं। मायरेती भी धूम-धाम से साज-सामान सजा कर आते हैं। वर पक्ष वाले गाजे बाजे के साथ उनकी अगवानी करते हैं। गीतो की धूमधाम मच जाती है—

१. नानेरा-दादेरा आटाल्या बाटाल्या देते हैं।
२ बाजोट पर बिठला कर तिलक करके भेंट दी जाती है।
३. छोटो को टीका करके रुपया हाथ में दिया जाता है।
४. भ्राता बहिन को वेश—लहगा, चुनरी, ब्लाउज आदि पहिराता है।
५. इस क्रम से वर वधू के सम्बन्धियों को मायरा पहिनाया जाता है।

६. मायरे के उपरान्त वर की मां कलश लेकर आती है तथा भाई को कलश बंधाती है। भाई कलश में रुपया डालता है। फिर भाई की आरती की जाती है। भाई बहन परस्पर गले मिलते हैं। मिलने के पश्चात् यह क्रम समाप्त होता है।

यहीं पर सब मायरे वालों को 'शरबत' पिला कर अभ्यर्थना की जाती है। उस समय ये गीत गाये जाते हैं। मायरे के गीत सरस और भावपूर्ण होते हैं जिनमे भ्रातृ प्रेम की सुन्दर अभिव्यक्ति लक्षित होती है।

वीरो थारो आयो ऐ
म्हारी चन्द्र गोरजा, करो आरती ऐ वीरो थारो आयो ऐ।
आज तो वीरासा म्हारा काकड़ आय विराजा जी
काकड करवा झुकाया ऐ ।। वीरो० ।।
आज तो वीरासा म्हारा बागा आय विराजा जी
माली फुलडा टाक्या रे ।। वीरो० ।।
काकड करवा झुकाया ऐ वीरो थारो आयो.........
आज तो वीरासा म्हारा पिनघट आय विराजा जी
पिनहार्‌या कलस बधाओ ऐ
झनपट झनपट तास्या वाज्या सूतो शहर जगायो ऐ........
वरसो म्हारा काला वादल वरसो सवाया जी
वरसो म्हारा सुसराजी रा जाया सवाया जी

(इसगीत मे परिवार के सदस्यो का नाम ले लेकर गीत को बढाया जाता है।

रोड़ी पूजन—

रातिजगा के दूसरे दिन प्रातः काल रोडी पूजन की विधि सम्पन्न की जाती है। यह लौकिक प्रथा स्त्रियों द्वारा ही सम्पादित कराई जाती है। वर को सवेरे 'चन्दोवे' (सुहागिन

स्त्री का ओढना) की छाया में घर के बाहर कूड़ा कचरे को रोडी पूजने के लिये ले जाते है।

१. नायन (खवासन) के हाथ में पूजन का थाल होता है।
२. वर के हाथ मे लोहे का ताकला (चर्खे का) दे देते है।
३. 'ताकला' रोड़ी पर थोपकर उसकी पूजा की जाती है।
४. पूजन में कुंकुम, चावल, लच्छा (मोली) सुपारी और पुष्प रखे जाते हैं।

पूजन समाप्त कर लौटने के बाद 'नायन' आती और वह रोडी मे से 'ताकला' निकालकर ले जाती है। ताकले के साथ रोडी का कुछ अश भी वह ले आती है। कहा जाता है कि इस ताकले और रोडी के 'अंश' को 'न्यात' या 'जिमनवार' के दिन 'कोठार' मे रख दिया जाता है जिससे किसी प्रकार की न्यूनता नही रहती और सब कार्य ऋद्धि-सिद्धि सहित सम्पूर्ण हो जाते हैं।

वस्तुत: रोडी पूजन से यही भाव लगाया जाता है कि जिस प्रकार रोड़ी धूप-वर्षा आदि सहन करती है उसी प्रकार वर-वधू को भी सहनशील होना चाहिये तथा जिस प्रकार रोड़ी में सब प्रकार का कूडा-करकट एक साथ एक स्थान पर बिना भेद-भाव के पडा रहता है उसी प्रकार वर वधू को भी कुटुम्ब और पारिवारिक सदस्यो के मध्य संगठन और प्रेमपूर्वक रहना चाहिये।

निकासी—

वर के विवाह के हेतु प्रयाण करने को 'निकासी' कहा जाता है। वर को तणी के नीचे नियत स्थान पर बाजोट पर बिठाया जाता है। इस अवसर पर तेल उतारते हैं। बढ़े बान के दिन तेल चढना है और निकासी के दिन उतारा जाता है। 'घोडी' और 'बना' ढोल और शहनाई के स्वरो के साथ सारे

वातावरण को गुजंरित कर देते हैं। तेल उतारने के बाद पीठी से उबटन किया जाता है। पीठी के पश्चात् एक कुंवारी कन्या 'कोरा कुंभ' लेकर आती है। कुंभ में दही होता है और कन्या के हाथ में 'बेलनी'। वह 'बेलनी' के द्वारा दही को घुमाकर वर के मस्तक पर डाल देती है। यह 'अटाल घोले' की प्रथा कहलाती है। फिर नाई (खवास) वर को स्नान कराता है। फिर सवासने को बुलाया जाता है वह वर को 'अबोट' नये वस्त्र धारण करने में सहायता देती है। इसका 'सवासने' को नेग मिलता है। वस्त्र पहनने के बाद वर के सिर पर 'मोड' 'तुर्रा' कलगी आदि बाधे जाते हैं। गले में सोने, मोती और हीरो के कंठों से वर को सजाकर 'बींद-राजा' बनाया जाता है। इस वर की वेश-भूषा और बनाव-शृंगार राजा की शोभा के अनुसार ही होता है।

वस्त्र पहिनने के पश्चात् 'लगदण' झिलाया जाता है 'लगदण' ६ वस्तुओ का बना होता है—

१. गुड को पिण्डनुमा बनाया जाता है।
२. गुड में धनिया मूंग सुपारी, पैसा रखकर मोली से बाधकर हरे दोने मे रख कर दिया जाता है।
३. वर के हाथ में स्त्रिया देती है और फिर पुनः वर स्त्रियो के हाथ मे लोटा देता है।
४. लगदण स्त्री पुरुष दोनों झिला सकते हैं।

लगदण के गीत गाये जाते हैं। लगदण झिलाने के बाद वर बाजोट के नीचे रखे हुये कोरे दीपक पर जो ओधा रखा होता है, जिसके नीचे पैसा रखा जाता है चरण धर कर बड दीये को बडा करता है। फिर मामा उसे गोद मे लेकर बाजोट पर से उतार कर माया के गेट तक पहुंचाता है। वहा विनायक के पूजने के बाद वह विनायक को विवाह कार्य निर्विघ्न

समाप्त होने की प्रार्थना करता है पूजन के पश्चात् गणपति को वर शोश नवाता है। फिर वर का मुह ऊठा कराते है। वर केसरिया चावल खाकर वाहर आता है जहां पर आभूषणो से सुसज्जित घोड़ी प्रस्तुत रहती है। इस अवसर पर 'घोड़ी' के सुन्दर भावपूर्ण गीत गाये जाते है।

बींद के सम्मुख उसकी माता आती है। माता के हाथ मे पूजन का थाल होता है। पहले वह घोडी की पूजा करती है। घोडी के अक्षत और कुकुम का तिलक लगाती है। घोडी के खुरो पर मेहदी कुकुम की टीकी लगाकर फिर उसे 'पीला' (ओढना) ओढाती है। घोडी पूजन के पश्चात् वर के मस्तक पर तिलक लगाती है। तत्पश्चात्

(१) चांदी की हांसली (गले में पहरने का आभूषण) लेकर बींद राजा के हृदय स्थान पर लगाती है। फिर ७ वार नेता (दही विलोने का) ७ वार नथ, ७ वार अपने आंचल (ओढन के पल्ले) से इसी प्रकारकी क्रिया करती है। और आंचल मे चने की दाल लेकर घोडी को खिलाती है।

(२) भावज द्वारा बींद के नेत्रो मे काजल लगाया जाता है। काजल लगाने का उसे 'नेग' प्राप्त होता है। इस अवसर पर चचल चपल भाभी विनोद करना नही भूलती है। वह एक ही नेत्र में काजल डालकर रुक जाती है फिर बींद के खुशामद करने व मनोवांछित 'नेग' प्राप्त कर लेने पर दूसरे नेत्र मे लगाती है।

(३) माता पल्ले से 'लुवाछना' लेती है।

(४) माता बींद को स्तन पान कराती है जिसका यह भाव रहता है कि अपने मां के 'दूध की लाज' रखना है। वर मां की स्वीकृति सूचक प्रणाम करता है। माता वर को आशीर्वाद देती है और उसे हाथ-खर्ची स्वरूप कुछ रुपये भी देती है। तदन्तर

अन्य उपस्थित गण वर को रुपया नारियल खर्ची के रूप में भेट करते हैं।

(५) माता घोडी तथा बीद पर 'वारना' करके नाई, कुम्हार, ढोली, साईस को वारन (न्योछावर) दे देती है। फिर अन्य कुटुम्ब की स्त्रियाँ भी करती है।

(६) घोड़ी पर बीद के पीछे छोटी कुमारी (बहिन) कन्या बैठाई जाती है जो सगुन के लिये बींद पर 'राई लून' वारती जाती है।

पश्चात् घोड़ी मन्दिर की ओर प्रस्थान करती है। घोडी के आगे ढोल शहनाई आदि वाद्य यन्त्र तथा घर के कौटिम्बक लोग रहते हैं। घोडी के पीछे घर-परिवार की स्त्रियों रहती हैं। भूआ या बहिन पीछे से रक्षा के लिये काकडा फेकती है। एक के सिर पर मगल कलश रहता है। इस प्रकार सब भगवान के मदिर में पहुंचते हैं। बीद घोड़ी पर से उतर कर मन्दिर में जाकर भगवान के चरणों में शोश नवाता है। नारियल और रुपया देवता के भेट स्वरूप चढाता है। मन्दिर के पुजारी उसके गले में केमरिया दुपट्टा और बताशे का दौना प्रसाद स्वरूप देता है। बीद लौटकर अन्य स्थान पर पहुंचता है। स्त्रियाँ बधावा गाती हुई घर को लौट जाती हैं। इस प्रकार निकासी का कार्य सम्पन्न होता है और फिर शुभ मुहुर्त पर बरात बिदा होती है। बराती बन ठन कर सज सँवरकर बरात के साथ प्रस्थान कर देते हैं। बरातियों की सख्या पूर्व ही निश्चित कर ली जाती है। इनको निमन्त्रण स्वरूप 'पीले चावल' और सुपारी देकर उनसे 'चौकडी' करवाली जाती है। इस प्रकार बीदराजा की बरात सगे सम्बन्धियो और इष्ट मित्रों का रगीला गिरोह लेकर प्रस्थान करती है।

बधावे के गीत—

बरात प्रस्थान करने के पश्चात स्त्रियाँ 'बधावा' गीत गाना प्रारम्भ करती हैं। बरात बिदा होने के पश्चात 'बना' गाना बन्द कर दिया जाता है। और 'सेवरा' 'बधावा' आदि के गीत गाये जाते हैं। उसी दिन 'चूडा' का दस्तूर कर लिया जाता है। आनन्द उल्लास में स्त्रियाँ बरात लौटने और वधू आने की प्रतीक्षा करती हैं। 'बधावा'–किसी की वृद्धि हेतु मगल–कामनायें करना कि उसका वश बढे, धन–धान्य बढ आदि।

मगलकामनायें आन्तरिक उल्लास और अपनत्व की भावनाओ से परिपूर्ण होकर बधावण की दिशा लेती है। पुत्र–जन्म, विवाह–सस्कार एव अन्य शुभ अवसरो पर होने वाले उत्सव व नृत्य-गीत के अवसरो पर जो भाव व्यक्त किये जाते हैं उन्हे बधावा कहा जाता है।

राजस्थानी लोक–गीतो मे "बधावा" एक विशेष अर्थ को ध्वनित करता है। बधावा राजस्थानी लोकगीतो का एक विशेष प्रकार है जो अपने अन्तर मे मागलिक त्यौहारो, पर्वों के भाव के अतिरिक्त विवाह संस्कार के अवसर पर विशेष और किसी के आगमन या बिदाई पर गाए जाते हैं जिनमे पात्र विशेष के प्रति मगलकामनाएं होती हैं।

बधावा गीत—

घुडला री बाज रही खुडताल
हसत्यारा वाजे सैया म्हारी टोकरा
जाने म्हें तो लाख बधाई द्यां।
कोई तो बधाओ ओ म्हाको बनाजी ने भावता।
उठो बहूरान्या करो सोलह सिनगार
केसरिया ओ राण्या बुलावे रग महल मे

बाइ वहना भर मोतीडा थाल
करो न निछावर बाई थाका वीर की जी

(२)

म्हारे ऊची मेडी चत्तर साल
जवर जवर दिवली जलै ।
म्हारे पोलीहा पोल उघाड
म्हे तो बाहर से भीतर आवस्याजी
म्हैं तो जास्यां भवरजी के महल
म्हैं तो देखां भवरजी की साहिबी जी ।
म्हारा जवाई जनमली धी
करो ऐ भरोसो मारी कूंख रो
म्हारे बाजत आवली वरात जी
दरसन आवै रूडा राजवी
म्हारे घर रीतो आगन रीतो
रीतो जी म्हारो सो परिवार
धी जवाई लेगिया जी ।

फिर आगे इस प्रकार—

म्हारे जानाये जनमेलो पूत
करो अे भरोसो म्हारी कूख को
वाजत चढैली वरात जी
म्हारै घर भरियो आगन भरियो
म्हारो हरख्यो छै सो परिवार
जी म्हारें पूत परण घर आवसी ।

(३)

पांच वधावा म्हारे आविया मारूजी,
लीना छै आंचल मोर, धण रा स्याली लाल,

ढालो जी जाजम पर चौपड खेल्स्या मारूजी।
पहलो बधाश्रो मारा वाप को मारूजी
दूजो म्हारो सुसराजी री पोल
श्रगन्यो बधावो मारा वीर को मारूजी
चौथो म्हारो जेठ--वडा री पोल
पाँचवो बधावो चाँदरग चौक रा मारूजी
बूठेलो देवर जेठ ······· ·· घरण रा ..
छठो बधावो म्हारी कूख रो मारूजी
जाया छे लाडरग पूत··· ·· · घरण ....
सातवो बधावो म्हारा रग महला रो मारूजी
साहिब पोढ्या सुख सेज..   धरण....
श्राठवो बधावो म्हारा नित नवा मारुजी
मेल्यो म्हारा सुमराजी री पोल-घरण ...

(४)

मोती रा लूमक भूमका
किस्तूरी श्रो राजा बादरवाल ।
बधावो जी म्हारी श्रावियो
बाघू मरुदेवी रे ए श्रोवरे
वाकी राण्या जाया छे पूत । वधावो ..
जाया रा हरख बधावरग
परण्या की श्रो राजा रात जगाय । बधावो. ......
चार रगाश्रो चोखी चूदडी
परदेशन श्रो बाई सुभद्रा श्रोढाय ।
चार मगाश्रो चोखा चूडला
परदेशन श्रो बाई बहिन पहराय । बधावो .. .. .

(५)

पहले वधावे ग्रे सखिया मोरी म्हे गया राज ।
गया म्हारा बावो जी री पोल
बाबोजी सतोख्या ए सखिया मारी ग्रपणे राज ।
म्हाने दीनो छे दखनी चीर
चढती वायी ने ए सूण भला होया राज ।
लाड जवाई ने सूण भला होया राज
दूजे वधावे ऐ सैंया म्हारा म्हे गया राज ।
गया म्हारा वीरोजी री पोल
वीरोजी सतोख्या सैंया मोरी ग्रापणे राज ।
म्हाने दीनो छै चुनरी रो वेस
चढती वाई ने ऐ सूण भला होया राज ।
लाड जवाई ने सूण भला होया राज
ग्रगणे वधावे ऐ सखिया म्है गया राज ।
गया म्हारा सुसराजी री पोल
सुसरोजी सतोख्या ए सैंया मोरी ग्रापणे राज ।
म्हाने लाया छै दोय रथ जोड
चढती वायी ने सूण भला होया राज ।
लाड जवाई ने सूण भला होया राज
चौथे ववावे ऐ सैंया मोरी म्हे गया राज ।
गया म्हारा जेठ वडा री पोल
जेठ जी सतोख्या ऐ सैया म्हारो ग्रपणे राज ।
म्हाने दीनो छै ग्राधो धन वाट
चढ़ती वाई ने ए सूण भला होया जी राज ।
लाड जवाई ने ऐ सूण भला होया जी राज ।
पाचवे वधावे ए सैंया म्हारी म्है गया राज ।
गया म्हारा मारुजी री पोल

मारुजी सतोख्या ऐ सैया मोरी अपणे राज।
म्हाने दीनो छै सुख सुहाग
चढती बाई ने ऐ सूण भला होया राज
लाड जवाई ने सूण भला होया राज।

ढूंढिया या खोड़िया—

बरात के प्रस्थान के पीछे वर के घर पर जो नाटक स्त्रियो द्वारा रचा जाता है वह दृश्य भी हमारे वर्तमान विवाह सस्कार का आवश्यक अग बन गया है। इसमे केवल हास्य विनोद और नकल की भावनाओ की छाप मात्र है। स्त्रियो का मन कैसे लगे उन्हे भी तो कुछ कार्य चाहिये। वे भी बरात बनाती हैं। वर–वधू बनती हैं। सम्पूर्ण विवाह की रस्में पूर्ण की जाती हैं। विशेषकर यह रीति उन्ही जातियो मे प्रचलित है जिनके बरात के साथ स्त्रियाँ नही जाती अथवा जो अपढ और मूर्ख स्त्रियो का समाज होता है। धीरे–धीरे यह प्रथा शहरो मे कम होती जा रही है और इसका स्थान यज्ञ, हवन आदि शुभ अनुष्ठानो ने ले लिया है।

विवाह की मंगलमयी घड़ियां

विवाह का पहला दिन—

विवाह के सम्पूर्ण रस्मे–रिवाज आदि कन्यापक्ष के घर पर ही सम्पन्न होते हैं। विवाह की तैयारियां कन्यापक्ष के यहां बडी धूमधाम से होती रहती हैं। बारात का अच्छा आदर सत्कार किया जाता है। सुन्दर व सुरक्षित स्थान मे बारात को ठहराया जाता है वह जनवासा कहलाता है। जहा बरातियों की सुविधा और आमोद–प्रमोद के सब साधन सुलभ कर दिये जाते हैं जहाँ बराती महानुभाव आराम उल्लास और सुखपूर्वक विवाह की रगरेलियो मे मस्त होकर भग बूटी

छानने और पराया माल तोडने मे अनुरक्त रहते हैं। बारातियो के चार दिन भी उल्लास और मस्ती से भरपूर रहते है। वहाँ उनको खाने को तरो-ताजा माल और सुनने को गालियाँ, (मधुर संगीत) शयन को आराम के सब साधन सुलभ होते है।

थाम स्थापन—

बरात के आगमन के पश्चात वधू के घर के शेष मांगलिक कार्य विधिपूर्वक सम्पन्न किये जाते हैं। पुरोहित को बुलाकर थाम स्थापित किया जाता है। थाम विवाह मडप के एक कोने मे स्थापित किया जाता है। थाम के गीत गाये जाते है—

"डाबा मायला गहना क्यू नी हारया म्हारा पिवजी
म्हारी राजकु वर क्यू हारया जी।"

पूजन मे कन्या के माता पिता भी बैठते है। थाम स्थापन के पश्चात मायरा, बासन लाना आदि कार्य सम्पन्न होते हैं। ये सब कार्य दिन मे कर लिये जाते हैं। स्त्रियां और पुरुष सब उपवास करते है और विवाह के बाद कन्या का मुख देखकर भोजन करते हैं।

लग्न मंडप—

कन्या के घर पर ही विवाह सस्कार किया जाता है। विवाह का घर भली प्रकार से सजाकर माङ्गलिक चिह्नो से सुशोभित किया जाता है। शुभ मुहूर्त मे वधू के शरीर को उबटन आदि से मार्जित करके सुन्दर वस्त्राभूषणो से अलकृत किया जाता है। सभी पूज्य गुरुजन तथा संबन्धी कन्या को आशीर्वाद देते हैं। विवाह के दिन कन्या की माता हरिताल और मन.शिला से मस्तक पर विवाह दीक्षा का तिलक लगा देती है तथा कन्या से पतिव्रता स्त्रियो का पदाभिवन्दन और कुल देवता को प्रणाम

करवाती हैं सभी स्त्रिया उसको अखड सौभाग्य और प्रेम के लिये आशीर्वचन कहती हैं।

अगवानी या सामेला—

वर दुकूल, अगराग और शिरोभूषण तथा मस्तक पर हरिताल के तिलक से सजाया जाता है। वर वधू के घर को ऐश्वर्यपूर्वक सगे सम्बन्धी तथा इष्ट मित्रो के साथ बारात सजाकर प्रयाण करता है। कोई सेवक मार्ग में वर के सिर पर छत्र धारण करता है दूसरा चामर ढलता है और बाजे गाजो के साथ बारात रवाना होती है। इस प्रकार वर के साथ उसके पुरोहित बन्धु बांधव मांगलिक सगीत के साथ वधू के घर जाते हैं। मगल गान और वाद्य से दिशाए व्याप्त हो जाती हैं। कन्या का पिता बन्धु बान्धवो के साथ वर की. अगवानी करता है। अगवानी या सामेला मे कन्या का पिता वर की पूजा अर्घ्य आदि से करता है। उस समय मागलिक मंत्रोच्चार के बीच वर प्रसन्नतापूर्वक उन्हें ग्रहण करता है।

मिलनी—

वर पक्ष की ओर से कन्या को आभूषण और पहिनने के लिये नवीन वस्त्र दिये जाते हैं। वैश्य-समाज में विवाह के कुछ समय पूर्व ही मिलनी का दस्तूर कर दिया जाता है। मिलनी का अर्थ है 'मिलना'। वर तथा कन्या पक्ष के परिवार वाले परस्पर गले मिलते हैं। मिलते समय कन्यापक्ष की ओर से उन्हे कुछ राशि भेंट स्वरूप प्रदान की जाती है। साथ ही वधू के वस्त्र व आभूषण भी तोरण मारने से कछ घटो पूर्व ही गाजो बाजो के साथ वधू के घर भेज दिये जाते हैं।

वैवाहिक वस्त्राभूषण—

विवाह के अवसर पर वर पक्ष की ओर से कन्या को स्वर्ण और चादी के आभूषण प्रदान किये जाते हैं तथा पहिनने के लिये नवीन वस्त्र भी। आभूषण इस प्रकार के होते हैं--

स्वर्ण के आभूषण--

बाजूबन्द, अणवटा, पगमान, बिछिया, नथ, टिकडिया, कडाबन्द, चोटीबन्द, ककण, बीदी, नरवालिया, नोगरी, तिमणियो, वेणी, कबाण, चोब, डगडुगी, नौसर हार, चन्द्रहार, हथफूल, शीशफूल, फोलरी, कदोरा आदि।

चाँदी के आभूषण—

रकाबी, बाजोट, पीकदान, गुलाबदानी, चकलोट, बेलन घडा, हीबी, मोमबत्ती, बिछिया, जोड आदि।

कन्या के वस्त्र—

पडला, पँवरी, मामा झोल्या, लहगा या घाघरा कांचुली आदि

वर के वस्त्र—

केसरिया पाग, पोतियो, खीनवाव, वोलाबन्द जरीरो इलायचो, गोस पेच आदि।

समय की परिवर्तनशीलता के कारण, वस्त्रभूषण में विशेष परिवर्तन हो गया है। प्राचीन समय में राजस्थान में इसी प्रकार के वस्त्राभूषणों की साज सज्जा रहती थीं।

तोरण पर—

अगवानी की धूमधाम समाप्त होने पर वर को तोरण पर ले जाया जाता है। तोरण अथवा बाहर के द्वार का प्राचीन सभ्यता से ही तोरण पूजन का विचार शास्त्रों में मिलता है।

तोरण काष्ठ का बना होता है जो कन्या के घर में प्रवेश द्वार पर लटका हुआ रहता है। वर घोडे पर चढ कर शहनाई के मागलिक स्वरो के साथ तोरण के निकट पहुंचता है। तोरण को नीम की डाली या तलवार से छूकर ही विवाह की वेदी पर पहुँचना होता है। तोरण पर वर की सास आरती करती है और वही रस्म सास पूर्ण करती है जैसी वर की मां निकासी के अवसर पर करती है। नेत्र मे काजल लगाते समय चतुर सास वर की परीक्षा के लिये उसका नाक भी खींच लेती है। साथ ही गाती है—

सासू निरखै जवाई ऐ
पछै देसी ओलम्बा ऐ
म्हारो सरस जवाई ऐ
म्हारो हीरा रो व्यापारी
म्हारो हीरा रो व्यापारी

स्त्रियां बींद राजा और बारातियो को मधुर गीत प्रेम भरे रसीले गीत सुनाकर उनका स्वागत करती है। इस अवसर पर चुन २ कर बरातियो को गीत सुनाए जाते हैं—

सात सुपारी लाडा सिगाडा रो सटको
इस्या काई जानी आया घेड माया पटको।

इसमें बरातियो की काना, कुबडा, बूढा, बालक आदि विशेषण लगाकर आवभगत की जाती है। वे उनका विनोद करती हुई कहती हैं—

काला काला ही आया गोरा एक नही आया
तबला बजाओ रे भैया मगल गाओ रे भैया।

बरातियो और चतुर स्त्रियो मे प्रश्नोत्तर भी होते हैं। इस प्रकार वर लग्न मडप मे पहुँचता है और वधू की प्रतीक्षा करता है।

तोरण गीत--

तोरण द्वार पर वर के आने पर स्त्रियां अपनी मधुर स्वर लहरी से सम्पूर्ण वातावरण को गुजरित कर देती हैं। उस समय विशेष रूप से 'कामण' गाये जाते हैं। साथ ही वर को सुन्दरता, शोभा व प्रशंसा के गीत गाये जाते हैं--

काकड पर राईबर आयो अे वनी जोडी वता दे अे
ग्वाल्या बीद सरायो थारो राइवर आयो अे।
बागा मे राइवर आयो अे बनी थारी .. ..
माली को बीद सरायो अे।
पणिहारिया बीद सरायो अे।
तोरण पर राइव्र आयो अे। वनी . .
खाती को बीद सरायो ऐ।
माया पर राइवर आयो ऐ . . .
भुआ बाई बीद सरायो ऐ।
जोशी को बीद सरायो ऐ।
वनी थारी जोडो वता दे ऐ।. . . ..

कामण गीत—

काकड आया राईवर थरहर कण्या राज
बूझा सिरदार वनी ने कामण कून करया छै राज।
म्हे नही जाणा म्हारा गवाला कामणगारा राज
ग्वाला को नेग चुकास्या कामण ढीली छोडो राज।
छोड्या न छूटे राईवर करडा घुल्या छै राज।

कांकड़ के स्थान पर बांगा, शहर, तोरण, फेरा, थामे, महल आदि लगाकर गीत को पूरा किया जाता है। अन्य 'कामण' 'बनी' के साथ देखिये।

वर की परख--

वर की योग्यता और वाक-चातुर्य की पर क्षा लेने सालिया और वधू की अन्य सहेलियां वर के निकट पहुंचती हैं और वर से हास्य विनोद आदि चलते हैं। जब तक कन्या, विवाह वेदी के लिये स्नानादि द्वारा निवृत्त नही होती। इस समय फिर कन्या के तेल उतरता और पीठी का उबटन होता है। वर के भी पीठी का दस्तूर कन्या पक्ष की स्त्रियो द्वारा पूर्ण किया जाता है। नियत समय और शुभ मुहूर्त पर वर-वधू को माया मे लेजाकर पूजन आदि सम्पन्न करवा कर लग्न मडप पर लाया जाता है।

विवाह वेदिका--

विवाह-क्रिया के लिये एक मनोरम वेदिका बनाई जाती है। वेदी चारों ओर रखे हुये सुगन्धित पुष्प, मिट्टी के घड़े धूप, अर्घ्यं से भरे हुये पायो तथा रग विरगे वस्त्रो से अलकृत की जाती है। वेदिका के तीन ओर देवता के आसन प्रतिष्ठित किये जाते हैं, ब्रह्मा, नवग्रह, मात्रिका, कलश आदि। इनकी पूजा आचार्य पुरोहित करवाते हैं। फिर वेदिका पर अग्नि प्रज्वलित की जाती है और उसमे घृत से हवन किया जाता है फिर कन्या का पिता हाथ मे पचभूत जल लेकर वर को इस प्रकार सम्बोधन कर कहता है "यह मेरी कन्या है, तुम्हारी धर्म सहचरी है इसका पाणिग्रहण करो। यह पतिव्रता और यशस्विन है और छाया की भांति तुम्हारा अनुसरण करेगी।"

यह कहकर वह जल डाल देता है। वर और वधू प्रज्वलित अग्नि की तीन बार प्रदक्षिणा करते हैं और अन्त मे उसमे खील तथा खेजडी वृक्ष के पत्ते छोड देते हैं। इसके पश्चात् पुरोहित वधू से कहता है 'हे वत्से! यही अग्नि देव तुम्हारे विवाह के साक्षी हैं। तुम्हे अपने पति के साथ गृहस्थाश्रम के धार्मिक कृत्यो को पूर्ण करना है। इस समय वर वधू से ध्रुव तारा देखने के लिये कहता है और वे दोनो ध्रुव तारा देखकर कहते हैं—"मैंने ध्रुव तारा देख लिया।' इस तारे के दर्शन से वैवाहिक सम्बन्ध को स्थिरता को प्रतिष्ठा हो जाती है क्योकि यह तारा आकाश में स्थिर रहता है। फिर वधू वर के वाम भाग का स्थान ग्रहण करती है। इसी समय पंडित गोत्राचार का वाचन करते हैं। इस पर उपस्थित महिला मंडली पडित की विद्वत्ता पर व्यग करती हुई कहती है--

भलो पढयो रे पाड्या भलो पढयो
जजमाना री गोत पढयो।

तत्पश्चात् 'हस्तमेल' छोड दिया जाता है। अन्त मे सब वर-वधू को प्रणाम करते हैं। वे वधू को अखड सौभाग्यवती तथा वीरप्रसवा होने का अशीर्वाद देते हैं। विवाह के पश्चात् वधू-बान्धव और स्त्रियां आदि अक्षत से वर-वधू को बधायें देती हैं। विवाह हो जाने पर कन्या और वर के पिता यथा शक्ति अनेक प्रकार के दान देते हैं। लग्न मडप से उठते समय 'मेंडा' बरसाया जाता है। कही २ पर विशेष कर वैश्यो के एक वर्ग में वधू को फेरे के बाद चुनरी ओढायी जाती है। इस अवसर पर चुनरी गीत गाया जाता है।

माया के गेह में—

विवाह की वेदिका से उठकर वर वधू माया के गेह मे शीश नवाने जाते हैं वहां पर स्त्रिया वर से अनेक प्रकार के प्रश्न पूछती हैं और वर से हास्य विनोद प्रारम्भ कर देती हैं। वर चतुर हुआ तो बडी चतुराई से उनका प्रत्युत्तर दे देता है अन्यथा स्त्रियां उसकी पूरी खैर खबर वाग्जाल से ले लेती है।

गोद भरना—

कही २ पर वर अपनी वधूको लेकर जनवासे को जाता है। वहां पर वधू की गोद भरी जाती है और कही २ पर मार्ग मे स्त्रियां विदा गीत गाती हैं जिसमे कोयलडी प्रसिद्ध है। पर कन्या के घर पर ही गोद भरने की रस्मे वर के जीजा अथवा पिता के द्वारा पूरी की जाती है। इस प्रकार विवाह का प्रथम दिन धूमधाम और आनन्द वैभव से परिपूर्ण रहता है। दो जीवन एक सूत्र मे आबद्ध हो जाते हैं। कितना मार्मिक है जीवन का यह पक्ष ! एक नारी शैशव की समस्त किलकारियो को, जीवन की स्वच्छन्दता व उन्मुक्तता को छोडकर सदैव के लिये एक अनजान अपरिचित व्यक्ति के साथ सबको रोता विलखता छोडकर नई डगर पर चल देती है। जहा मिलता है उसे अपने सपनो का राजा जिसके प्रेमपूर्ण आलिगन मे उसके जीवन की समस्त अभिलाषाएँ साकार हो उठती हैं। जिन्दगी की घडियो मे मादकता का सचार होने लगता है। पारस्परिक आकर्षण-विकर्षण का यह रूप जीवन की सफलता का सूचक बन जाता है। सच है कि विवाह के द्वारा नारी-पुरुष अपने आत्मीय अभाव की पूर्ति करते हैं। प्रेम और पवित्रता का यह अनुपम रूप है।

विवाह का दूसरा दिन—

विवाह का दूसरा दिन वर वधू के लिये होता है। प्रातः काल वर को कंवर कलेवे के लिये वधू के घर मांढे में आमन्त्रित किया जाता है।

१. कवर कलेवे मे मीठे चावल बनाये जाते हैं।

२ आसन पर वर को बैठाया जाता है।

३. वर के सम्मुख बाजोट पर थाल मे चावल सजाये जाते हैं।

४. वर के साले आकर वर को रुपये के साथ मुंह मे ग्रास देते हैं।

५. कवर कलेवे के बाद वर वधू का गठबन्धन करके देवी देवताओं को पुजाया जाता है। कन्यापक्ष और वर पक्ष के कुल देवता तथा भैरूजी बालाजी आदि देवताओ की पूजा बाहर जाकर की जाती है।

१. पाच छै पत्थर के ढेले एकत्र किये जाते हैं।

२. उन पर सिन्दूर पन्ना लगा कर पूजा की जाती है।

३. धूप खेकर नारियल बधारते हैं।

इस प्रकार मध्याह्न तक देवी देवताओ का पूजन पूर्ण हो जाता है। फिर जुआ खेलने की प्रथा आरम्भ होती है।

१. एक बड़े बरतन मे जल और दूध भर दिया जाता है।

२. वर-वधू के सामने रख दिया जाता है।

३. कन्या पक्ष की चतुर स्त्री उसमें अंगूठी पैसा आदि डालती है।

४. वर-वधू अंगूठी को जीतना चाहते हैं। जिसके हाथ मे अंगूठी आ जाती है वही विजयी होता है। यह क्रम सात बार चलता है।

५. ककण डोरडे वर-वध परस्पर खोलते हैं और बाधते हैं।

६. सुवासिनी द्वारा रुई के चूखे दोनो की जघा पर रख दिये जाते हैं और दोनो को एक दूसरे अंग का स्पर्श करते हुए बैठा देते हैं।

इस प्रकार जुआ-जुई की लौकिक क्रिया समाप्त होती है आजकल शिक्षित वर्ग इससे दूर होता जा रहा है। पर हमारे गांवो में अब भी यह प्रथा विशेष चाव से अपना पार्ट अदा करती है।

भात न्यूतना--

मध्याह्न के बाद तीसरे पहर कन्यापक्ष की ओर से स्त्री पुरुप जनवासे जाते हैं और रात्रि को भात जीमण (बढार) के लिये उनको आमन्त्रित करते हैं। इस अवसर पर पुरुप वर्ग में वाग्युद्ध होता है। दोनों वर्ग एक दूसरे की प्रशंसा में श्लोक कविता आदि बोलते है। इत्र गुलाल छिडके जाते हे। पान सुपारी इलायची से कन्या वालो का स्वागत सत्कार वर पक्ष की ओर से होता है। स्त्रियां अपने कोमल सुरीले कंठ से गीतो की बौछार करती है। इस समय जलो नामक विशेष गीत गाया जाता है।

जलो गीत

जला जी मारु म्हें तो थारा डेरा निरखण आई हो
मृगनयनी रा जलाल
म्हें तो थारा डेरा निरखण आयी हो जलाल
जलाजी मारुजी देखा थारा डेरा री चतराई हो
म्हारा जोडी का जलाल
म्हें तो थारा डेरा निरखण आई हो जलाल
जलाजी मारु रात्यूं धण रो पेट लडो मल दुख्यो हो
मृगनयनी रा जलाल
थे तो धण री खबर न लीवो हो जलाल
जलाजी मारु रात्यू धण की आखडली ज फरूकी हो
म्हारी जोडी का जलाल
आखडली फरूकी जलो घर आयो हो जलाल
जलाजी मारु राजा मायलो राज भलो राठोडी हो
मृगनयनी रा जलाल
शहरा माहलो शहर भलो वीकाणो है जलाल
जलारी मारु पुरुसा मायलो पुरुस भलो राठोडो हो
मृगनयनी रा जलाल
राण्या मायली राणी भली भटियाणी हो जलाल
जलाजी मारु छोटा मायला छीट भली मुलतानी हो
मृगनयनी रा जलाल।
छीटा माहली छीट भली मुलतानी हो जलाल
जलाजी मारु रुपिया महिलो रुपियो भलो गगासाहि हो
म्हारी जोडी का जलाल
रुपिया मायलो रुपियो भलो गगासाहि हो जलाल
जलाजी मारु मै तो थारा डेरा निरखण आई हो

मृगनयनी रा जलाल
मै तो प्यारा डेरा निरखण आई हो जलाल

जवांई गीत

(१)

सुसरो जी बुलावे जी जवांई सासु बुलावे जी
थारा छोटा साला कर रह्या थारो चाव
एक वार आवो जी जवांई जी म्हारे घर पावणा
ऊंटा चढ आवो जवाई जी घुडला चढ आवोजी
आवो आवो बगिया मे वैठ
लाड जवाई जी एक वार आओ म्हारे घर पावणा
भाया ने लावो साथीडा ने साथ
लाड जवाई जी एक वार आओ म्हारे घर पावणा
घुडला ने देस्या जवाई जी दाणो उडद रो जी
थारे करला ने कारड घलाय
एक वार आज्यो जवांई जी म्हारे घर पावणा
साथीडा ने देस्या जी लूंग सुपारी जी
कोई थाने तो नागर पान
लाड जवाई जी एक वार आवो म्हारे पावणा
चावल रांधा जवाई जी उजला उजला जी
हरिया मूंगा की तो दाल
रुच रुच जीमो जवाई जी म्हारे घरे पावणा
साथीडा पोढे जवाई जी वाग वगीचा मे
वालकिया जवाई महला माय
एक वार आवो जवाई जी म्हारे घरे पावणा
साथीडा ने घलास्या जवाईजी पलग निवार को
कोई जवाई जी ने हिगलू ढोलियो
लाड जवाई जी एक वार आवो म्हारे घर पावणा

(२)

जी बाला इण सरवरिया री पाल,
जवाई धोवे धोवत्याजी माका राज
जुगबाला धोवे धोवत्याजी माका राज
जीओ बाला हाथ धोय कर्या ये बनाव,
कुणीसा रा प्यारा पावणा जी माका राज
वीरसिंह सा का प्यारा पावणा जी मांका राज
जीओ बाला कीजो वाका सुसरासा ने जाय,
सामा तो सांढया भेजजो जी माका राज
जीओ वाला कीजो वांका साला जीने जाय,
हथाया जाजम ढालजो जी माका राज
जीओ कीजो वाका सासुजी ने जाय,
उजला सा भात पसारजो जी माका राज
जीओ बाला कीजो वाका माला जी ने जाय,
बहिनोई मेला जीम जो जी माका राज
जीओ बाला कीजो वाका सालीजी ने जाय,
गालिया खूब गवावजो जी माका राज
जीओ बाला कीजो वाका सुसराजी ने जाय,
नौ खडा मेहल चुनावजो जी माका राज
जीओ बाला ऊंचा नीचा मेहल चुनाय,
चारो ही दिशा वारणाजी माका राज
जीओ बाला कीजो वारी दासी ने जाय,
महला मे दीवलो जोवजो जी माका राज
जीओ वाला कीजो वारी दासी ने जाय
महला मे सेज बिछवाजोजी माका राज
जीओ बाला कीजो वारी दासी ने जाय,

महला मे चोपड ढालजोजी मांका राज
जीओ वाला कीजो वाकी सहेल्या ने जाय,
मारुणी मेहला मोकलोजी माका राज
जीओ वाला खेल्या २ चारोली सी रात,
कुण हार्या कुण जीतियाजी माका राज
हार्या हार्या सजना रा जोध,
राया रा बाईसा जीतियाजी माका राज
जीओ वाला आई २ जवांयां ने रीस,
चाया पर वायो चामकोजी माका राज
जीओ वाला आई २ वादरा ने रीस,
मेहला सू हेटा उतर्याजी माका राज
जीओ वाला खोल्या छै सोलह सिंगार,
ओढा पीला फागण्या जी माका राज
जीओ गोरी अबके तो पाछे आव,
चाकर थाका बाप का जी माका राज
जीओ वाला चाकर रियो य न जाय,
हाकम माला जी वाका जी माका राज
जीओ वाला मैं छा प्रियतम की धीय,
रुस्या तो पाछा न मना जी माका राज

(३)

थाका डोराजी जवाई सा माकी कट्यां जी,
आपा दोनू वेच र तेल मगावा वडा करालाजी।
वडा करालाजी क सीरो पूडी करालाजी
दो दिन काढलो कडाका तडके वडा करालाजी।

इसी भाति गहनो के नाम लिये जाते है।

(४)

राज आप तो कठा का सुखवासी, कठ आयर उतर्या सा नन्दोई सा ।
राज आप तो अजमेर रा सुखवासी, विजयनगर डेरा दीदासा नन्दोई सा ।
राज म्हारे आगणिये फिर जाओ, आया कर मानू सा नन्दोई सा ।
राज म्हारा भाणा ने ठुकराओ, जीम्या कर मानू सा नन्दोई सा ।
राज म्हारा कवरा ने बतलाओ. राख्या कर मानू सा नन्दोई सा ।
राज आप तो साला रे बहनोई, भोजन मेला जीमोजी नन्दोई सा ।
राज मैं हरता ने फरता देखू, मोही प्यारा लावोजी जवाई सा ।
राज माकी बाई ने बतलावो, मोहे प्यारा लागोजी नन्दोई सा ।

(५)

जैस्या पेचा राजन बाधे वस्या ननदोई,
राजन के भोले भूल गई मैं नही जाण्या ननदोई ।
बाई सा गुनो माफ करो मैं नही जाण्या ननदोई ।
बाई सा गुनो माफ करो मैं अब जाण्या ननदोई ।

इसी तरह अन्य वस्तुओ के नाम लेकर गीत आगे बढाया जाता है ।

(६)

रतन कुआ क गेल्न होसा ननदोई,
मैं रखडी भूल र आई हो सा ननदोई ।
लादी हो तो दीजो हो सा ननदोई,
बाई सा न जाय मत कीजो हो सा ननदोई ।
बाई सा र घूत्यारा हो सा ननदोई,
मायड ने जाय सिखावे हो सा ननदोई ।
थाका माका सासु हो सा ननदोई,

गलियारे राड़ करावे हो सा ननदोई ।

थाका माका सासु होसा ननदोई,

पचा में न्याव चुकावे हो सा ननदोई ।

भात बढ़ार :-

बढार की रात को नाना प्रकार के मिष्ठान्न बनाकर बरातियो तथा अपने समाज के व्यक्तियो को आमन्त्रित किया जाता है । बढार जीमने का दृश्य भी बडा लुभावना होता है । पंक्तियो मे बराती सजधज आसनो पर बैठ जाते हैं मध्य में बींद राजा बैठ जाते हैं । मिठाइयाँ आदि विभिन्न प्रकार की भोजन सामग्री लाकर परोसी जाती है । जीमने के पूर्व देवी देवता की पत्तल निकाली जाती है । भात कन्यापक्ष की ओर से दिया जाता है । वर पक्ष का चतुर व्यक्ति भात छुडाता है । भात छूटने पर उनको भोजन जीमने की आज्ञा मिलती है । वर को इस प्रकार इस अवसर पर जो वह उचित मांग करे कन्या का पिता प्रदान करता है । इधर बराती जीमना प्रारम्भ करते हैं । उधर स्त्रिया सामूहिक रूप मे डटकर गीत गाल्यां बरातियों और वर के पिता तथा अन्य सम्बन्धियो के नाम लेकर गाना आरम्भ करती हैं । बरातियो को जी भरकर मनवार की जाती है ।

भात का बांधना

बाधू बावल बीज दसेरे

बाधू मायड गीगो जायो

बाधू दाई नालो मोड्यो

बाधू नायल नावण नवायो

वाघू जोणी नावण पूजायो
वांघू भूआ मगल गायो
वांघू मारग रस्ते ल्यायो
वाघू पातल टीप टीपाली
वाघू दूना पत्ता वाला
वाघू लाडू नुवती वाला
वाघू जलेबी घेरा वालो
वाघू सीरो माडल नस्यो
वाघू लपसी झरझर करती
वाघू खाजा खर खर करता
वाघू पापड़ पड पड करता
वाघू सागरी श्रोर केर
वाघू जानेत्या री बैर
वाघू रायतो श्रोर राई
वाघ वीद की भोजाई

भात को वर पक्ष की श्रोर से छुड़ाया जाना है। पश्चात वर तथा बराती 'जीमना' प्रारम्भ कर देते हैं। दूसरी श्रोर से कन्यापक्ष की स्त्रियां बरातियो के मनोरजनार्थ गीत गाल्यां गाती है। इन गीतो में व्यंग श्रोर मनोविनोद की सुषमा अतिरंजित है।

गीत गाल्यां

(१)

धोया धोया थाल परोस दिया भात जी।
आश्रो सीतारामजी बैठो म्हाके साथ जी।
बैठो म्हाके साथजी, बतास्रो थाकी जात जी।

बाप म्हाका राजा जी, माँय पटरानीजी
चारूँ भाई चौधरी, बहन सुजान जी
भुआ म्हाकी मोदरा रसोई क मायजी ।
आओ आओ गनपतलालजी थासू थानू हायजी
था स थानू हाथ, बताओ थाकी जात जी ।
बाप म्हाको कट-कम, माय छीनाल जी
चारूँ भाई चोरटा, बहन उदान जी
भुआ म्हाकी भगतन रसोई क माय जी

ये गीत गाली भी इसी प्रकार प्रश्नोत्तर रूप मे आगे चलते है।

(२)

म्हारा माथा मे मैमद ल्याय कटोरो पीले ओ दूध को।
म्हारे रमझी कोनी ओ घर नार कटोरो लेजा दूध को ।।
म्हारे किलफा धनी जी भरतार कटोरो पीले ओ दूध को।
तूँ तो कठा स ल्याई भूरी भैंस कटोरो लेजा दूध को ।।
म्हारा पिअर स ल्याई भूरी भैंस कटोरा पीले ओ दूध को।
ओ तो काचो है गोय घर नाम कटोरो लेजा दूध को ।।
मैं तो तातो कर ल्याई भरतार कटोरो पीले ओ दूध को।
इमैं माखी पड गई घर नार कटोरो लेजा दूध को।
मैं तो छानकर ल्याई भरतार कटोरो पीले ओ दूध को ।।
ओ तो फीको है गोय घर नार कटोरो लेजा दूध को।
मैं तो खाड गेर लाई जी भरतार कटोरो पीले ओ दूध को ।।
म्हारा माथो दुख यै घर नार कटोरो लेजा दूध को।
था को माथो दाबूँ जी भरतार कटोरो पीले ओ दूध को।
म्हारो पेट दुख यै घर नार कटोरो लेजा दूध को
थाने डाक्टर बुलाऊँ भरतार कटोरो पीले ओ दूध को ।।

म्हारा पग दुख यें घर नार कटोरो लेजा दूध को
थाने कुण जी भरमाय भरतार कटोरो पीले ओ दूध को ।।
म्हाने ब्याईजी वाली भरमाया घर वार कटोरो नेजा दूध को
थाने घनश्याम जी वाली परणाऊँ भरतार कटोरो पीले ओ दूध को
वा तो चोखी कोनी ये घर नार कटोरो लेजा दूध को ।
आपा दोनी पीवा ये घर मार कटोरो पी लेवा दूध को ।।

(३)

ब्याई जी वालो हो नखराली
तक तक नयना मारे तीर
यारा संग उतराई तस्वीर ।
बजाजी रो बेटो धणा रो अमल खायलो
साडी पहराय उतराई तस्वीर
तक तक नयना मारे तीर ।
हलवाई रो बेटो धणा रो अमल खायलो
घेवर खुवाय र उतराई तस्वीर
तक तक नयना मारो तीर ।

यह इसी प्रकार, दर्जी, कपडेवाले, मिनारती, चूडीवाला आदि के नाम के साथ आगे बढाया जाता है ।

(४)

एक पतीया जी, छोटा पिया जी
जिन म्हारी पीतम प्यारी
वा नार ब्याई जी वाली ।
एक दवात जी, दवात कलम मगवाई
जिम के मरवरती म्याही, वा नार ब्याई जी वाली ।
छोटो ननदल जी, चढ चौवारा म्हाई

थे काई करां भोजाई
वा नार व्याई जी वाली ।
बीरा थाका जी, पति म्हारा जी,
बसै शहर बम्बई, थाको खबर नई आई
भाभी म्हारी थे मन मे धीरज धारो
थाने बीर मिलावा म्हारो ।
वा नार व्याई जी वाली ॥
वीरा म्हाराजी आमर मे उग आई हिरनी
थाने याद करे जो थाकी परनी ।
वीरा म्हाराजी आमर में उग आया तारा ।
अब घर आओ वीरा म्हारा ॥

(५)

आज तो व्याई जी वाली न ले जावा ला ?
रग भाड जावा ला, जाता तो करता हेनो पाड जावा ला ।
पूनम तो म्हारे रानी, पूनम पडवा न लेजाया ला ।
पडवा तो म्हारे पहतो वार, दूज न ले जावा ला ।
दूज तो म्हारे भाई दूज,
तीज ने लेजावा ला ।
तीज तो म्हारे आग्या तीज,
चौथ न ले जावा ला ।
चौथ तो म्हारे करवा चौथ,
पाचम ने जावा ला ।
पाचम तो म्हारे वसन्त पाचे,
छठ न ले जावा ला ।
छठ तो म्हारे ऊब छठ,
सातम न ले जावा ला ।

साते तो म्हारे सील सातम,
आठम ने ले जावा ला ।
आठम तो म्हारे जनम आठ,
नोमी न ले जावा ला ।
नोमी तो म्हारे गोगा नवमी,
दसम न ले जावा ला ।
दसम तो म्हारे तेजा दसम
ग्यारस न ले जावा ला
ग्यारस तो म्हारे नीरजला ग्यारस,
बारस न ले जावा ला ।
बारस तो म्हारे बछ बारस,
तेरस न ले जावा ला ।
तेरस तो म्हारे धन तेरस
चौदस न ले जावा ला ।
चौदस तो म्हारे रूप चौदस
मावस न ले जावां ला ।
मावस न तो आई दिवाली,
ब्याई जी वाली न लेर आवां ला ।
रग माड जावांला,
जाता तो करता हेलो पाड जावां ला ॥

(६)

आ तो नाथूराम जी वालां री घोरडी ए
आ तो राम स्वामीयां रे जाय
जाति सुधार मन मोहनी ए ।
तू तो पाची तो गिर मारी घोरडी ए,
थारा टाबरिया विलखा होय ।

जाति सुधार मनमोहनी ए।
गौरी जी लड्डू सहारूँ सटवा सूंठरा ओ
गौरी जी आधो तो म्हानै ही चखाय,
जाति सुधार मनमोहनी ए।
पिवजी तोड्डूं तो दूखे म्हारी आंगली ओ,
पिवजी आखो मांसू दियो नहीं जाय।
जाति सुधार मनमोहनी ए।
गौरी जी पीलो वधाऊ नानी बूंद रो ओ
गोरी जी पीले रे लप्पो दिराय।
जाति सुधार मनमोहनी ए।
मैं तो पाछो तो नही आऊ सायब ओ,
मैं तो जाऊंला सगारी साथ।
जाति सुधार मनमोहनी ए।

(७)

ब्याईजी वाली ने लेग्यो रे मींडको
थयू बेटा बजाज का घरा ने जाता देखी हो
म्हारा तो सौगन म्हारी साड़ी चून्दड़ रा सौगन
घरा ने लेग्यो रे भींडको
क्यूं रे बेटा हलवाई का घरा ने जातो देखी हो
म्हारी तो सौगन घेवर री सौगन
घरा ने लेग्यो रे मींडको।

(८)

ब्याईजी वाली होय नखराली
तो आज री मौजमानी म्हारी मानिनी
नेह लगायर नट गई कामरणी।
मायो जी खोल र घरा मायो जी-नहायो

हा जी वा तो जडयो बोर गुथावणी
महलां मे आय नट गई कामणीं
पति जी पास र बा तो मांग सवारी है
वा तो जुल्फां जुलम करावणी
सेजा मे आयर नट गई कामणी
अतलस की घण अगिया जी परी
हा जी वा तो नौरग गैंद गुदावणी
सेजा मे आयर नट गई कामणी
हाथां जी मेहदी थारा जी सेंदी
हाँ जी वा तो झालो देर बुलावणी ।

(६)

ब्याईजी वाला ने अरज हमारी अग्रेजी आवे
पढ़ अग्रेजी रेजी नाख दीनी दूर
पहरो बढिया मलमल जोवन दीखे भरपूर
लाज सरम सब हटाई घर घर के माई । टेर ।
छाछ पीवो छोड़ दियो चाय प्याला माई
बगलबन्दी छिप गई अेन्ट पेन्ट माई
अब मफलर कालर वे लगाई उपर नेकटाई ।। टेर ।।
दाडी मूछ खोय दीनी बाल राख लीना
अचकन अगरखी दुपट्टा सारा नाख दिया
आ राम शरम दूर हटाई करता गुडबाई ।। टेर ।।
जन्टरमेनी सीख सारा हुआ अंगरेज
माथा ऊपर टोप टोपी रोवे रगरेज
अब चलने की शक्ति नही साइकिल मगवाई ।। टेर ।।

(१०)

थे तो सुणजो जी सरदार हेलो पाड जाऊ ला
मैं तो वजाजी रा हाट सगी जीन लैर बैठूंला
मैं तो साडी ये पेरायी सगी सग भाग जाऊ ला
मैं तो व्याइजी वाली ने लेर भाग जाऊंला
मैं तो हलवाई री हाट मे ले वैठ जाऊ ला
मैं तो घेवर ये खुवाय सगी सग भाग जाऊ ला

(११)

व्याईजी वाली होये नखराला
गोरी जघा की सिलवट चाल रह्यो विछुडो :
हाय मरी रे राम सगीजी ने खाय गयो विछुडो ।
काटा परो कीलफा परो शीशफूल पर चल रह्यो विछुडो ।
हाय मरी रे राम सगीजी ने खा गयो विछुडो ।

(१२)

थे तो ओढोनी सुहागिन, पतिव्रत धर्म की चूदडी ।
सुरमा शीलव्रत को सारो, मिश्री मीठा वचन उचारो ।
टीकी पर उपकार विचारो पति की सेवा करो हरवार—सुहाग की
चू पा चतुराई की पहरो, लाज रूपी नथ से मोहे चेहरो ।
लाज दया धर्म को पहनो, भेला झूंठ कभी मत वोलो—जीव
हृदय हार ज्ञान को पहनो, माला धीरजता को गहनो।
टूसी मान वटा को कहनो, तिगुनो सास ससुर को जानो
चूडो लुलताई को पहनो, पू जी दया धर्म पर देनो ।
घर मे मबसे हिलमिल रहनो, गजरो सवको मानो कहनों
कंठी कडवा वचन मत वोलो, पायल पॉव मे छोटो ।
सांकल्या शान्त सदा ही रहनो, कीर्ति रूपी विछुमा वाजे—सदा ही

वधू की विदा—

विवाह के तीसरे दिन (आजकल दूसरे दिन ही) वधू की 'सिरगूंथी' और पहरावणी सम्पन्न होती है। सिरगूंथी जनवासे में होती है। वधू को जनवासे मे ले जाकर उसकी चोटी गूंथकर बोर या टीका बाधा जाता है। वैश्य समाज मे इस समय वर आकर वधू की सिन्दूर से माग भरता है। साथ ही फिर वधू की गोद भरी जाती है तथा वर व वधू मन्दिर जाते हैं।

पहरावनी कन्यापक्ष के घर पर ही होती है। वर के पिता को भेंट पूजा दी जाती है। बरातियो को पहरावनी स्वरूप कुछ मुद्राये प्रदान की जाती हैं। उधर अन्त.पुर में स्त्रियाँ मगलाचार की प्रथा पूरी करती है।

१. वर-वधू को नवीन सजे हुये पलग पर विठाया जाता है।

२. उसके निकट डायजा (दहज) का मामान रखा जाता है।

३. कन्यापक्ष की स्त्रियाँ वर-वध को तिलक लगा कर उन्हे कुछ राशि प्रदान करती है।

४. पलग को जोडे सहित परिक्रमा करके भेंट प्रदान की जाती है।

५ सास श्वसुर का वर पल्ला पकड लेता है और किसी वस्तु की याचना करता है। जव तक वर उचित आश्वासन नही पाता पल्ला नही छोडता।

मंगलाचार की प्रथा समाप्त होने पर वर के साथ वधू को विदा कर दिया जाता है। स्त्रिया जनवासे तक वधू के साथ

जाती हैं। कन्या की विदा का दृश्य बड़ा ही करुणाजनक होता है। वधू अपने समस्त परिजनो को छोडकर, केवल शैशव की स्मृतियो को साथ लेकर जब अनजान घर में जाने लगती है तब वह दुविधा संकोच होता है तथा उसे स्नेहियो का वियोग अखरता है। वधू का करुण रुदन फूट पडता है। जब वह विदा गीत की पहली पंक्ति—'ए छोड वावा सा रो हेत कोयल वाई सिध चाली'

सुनती है, अन्य स्त्रियाँ सिसकिया भरे स्वरो मे गीत गाती हुई अपने-अपने आँचल से आँसुओ की प्रजल्य धारा को रोकती हुई आगे बढती रहती है। माँ अश्रुपूरित नयनो सहित पुत्री को आशीर्वाद और अनेक प्रकार की सीख देती है। इस प्रकार विदा का अन्तिम दृश्य उपस्थित होता है जब वधू किसी 'माँ की आँख का तारा' वर के साथ प्रस्थान कर जाती है हर्ष और विषाद, संयोग और वियोग की समन्वयात्मक भूमि पर वधू का हृदय वेग से धडकता रहता है। जीवन का यह संयोग भी कितना आकर्षक और अनुपम प्रभावशाली है जो अपने होते है वे छूट जाते हैं और पराये अपने बन जाते हैं। जीवन की गति विचित्र है और उससे भी विचित्र है जीवन की वह अनबूझ कहानी जो अपने नयन डोरो पर भावी के कटाक्षो को बाँधा करती है, समेटा और सँवारा करती है। जीवन मे मोह माया ममता नारी के स्नेह और विश्वास को पाकर चेतनता की भावभूमि पर सजीवन शक्ति की विशालता का बोधक बनता है। नारी और पुरुष का यह संयोग प्रकृति और पुरुष का मिलन है और सृष्टि सचालन का कर्मरत चक्र।

विदा गीत—

(१)

ओलूं

में थाने पूछा म्हारी जीवडी
म्हें थाने पूछा म्हारी बालकी
इतरो बाबाजी रो लाड छोड़कर बाई सिध चाल्या ।
म्हें रमती बाबासा री पोल
आयो सगैजी रो सूवटो, गायढमल ले चाल्यो ।
म्हें थाने पूछां म्हारी जीवड़ी
म्हें थाने पूछा म्हारा बालकी
इतरो मारुजी रो लाड छोड बाई सिध चाल्या ।
आयो सगैजी रो सूवटो
ओ लेग्यो टोली मा सू टाल फूटरमल ले चाल्यो ।
म्हें थाने पूछा म्हारी बेहणी
म्हें थाने पूछा म्हारा बाईसा
इतरो वीरो जी रो हेत छोड वाई सिध चाल्या ।
हे आयो परदेशी सूवटो
म्हे तो रमती सहेलिया रे साथ जोडी रा जालम ले चल्या ।

(२)

एक वार करला मारा मारूजी पाछा जी मोण ।
राजीदा ढोला ओलू आवे म्हारे बाबो सारी ।
सुन्दर गोरी ओलूं थारी पड़ी रे निवार
चम्पक वरणी वाबोसी री ओलूं सुसरोजी मागसी ।
एक वार ओ मारूजी करला जी पाछो मोट
राजीदा ढोला ओलूं घणी आवे म्हारे मायरी ।

सुन्दर गोरी ओलू थारी परी रे निवार ।
मृगानयनी मारूजी री ओलूं सासूजी मांगसी ।
एक वार ओ मारूजी करला जी पाछो मोड
राजीदा रा ढोला ओलू घणी आवे म्हारे वीर री ।
सुन्दर घण तू ओलूं थारी पडी रे निवार ।
चम्पक वरणी वीर तोरी ओलूं देवर मांगसी ।

(३)

वनखड की ए कोयल, वन खड छोड कठै चली
थारी आले-दीवाले गुडियाँ धरी
वन खड की ए कोयल, वन खण्ड छोड कठै चली
थारी सहेल्यां माय अनमनी
वन खड की ए कोयल वन खण्ड छोड कठै चली ।
थारी माऊजी थारे विन उनामणा
थारी छोटी वैनड रोवै अकेलड़ी
वन खड की ये कोयल, वनखड छोड़ कठै चली
थारो वीरो सा फिरे ये उदास
विलखत थारी भावजडी
वन खड की ये कोयल, वन खड छोड कठै चली
थारो वावो सा फिरै ये उदास
माऊजी थारी विलख रही
वन खड की ये कोयल, वन खण्ड छोड कठै चली ।

वधू का वर के घर पहुंचना—

नाई वर-वधू के आगमन का समाचार लेकर वर की माता के यहाँ वधाई देता हुआ सुनाता है । वारात आगमन के एक दिन पूर्व ही वर का घर माडणों से मंडित किया जाता

है। बान्दरवाल बांधी जाती है। पगल्या चित्रित किये जाते हैं। सब स्त्रियो के हाथो मे मेंहदी मॉडी जाती है। वर-वधू के आगमन पर समस्त स्त्रिया एकत्र होकर ढोल ढमाके के साथ बधावे गाती हुई नव दम्पति को सामे लेने जाती हैं और वर-वधू को लेकर घर पर आती हैं। यहा द्वार पर माता दोनो की आरती करती है तथा उन्हे 'पुखती' है। आगे बढ़ने पर वर की बहन व भुआ बारणा रुकाई लेती है। वे मार्ग रोककर खडी हो जाती हैं। तथा 'नेग लेकर फिर मार्ग देती हैं। उसी समय एक स्त्री विनायक के 'माया गेह' की देहरी तक 'पसरक' माडती है—

१ कासी की एक कटोरी मे।

२. सात कांसी की थाली, मेवा मू ग पैसा रख दिया जाता है।

३. वर को हाथ मे छडी दी जाती है जिससे वह थालियो को आगे पीछे कर देता है। वधू उन थालियो को उठाती है 'निःशब्द'।

४. वर की मा झोली फैलाकर बैठ जाती है वधू उसकी गोद मे सब रख देती है।

रात्रि को 'रातिजगा' और सुहागरात की अनुपम घडी आती है। नीचे स्त्रियाँ 'रातिजगा' मे बैठ जाती हैं। उधर वर वधू माया के गेह मे परिचय प्राप्त करते हैं और सुहाग रात की पावन घडी मे अपने जीवन को रसलिप्त करके सुख की प्राप्ति करते हैं। सुहागरात भारतीय वैवाहिक जीवन का अनुपम आनन्दमय अग है जिससे रात्रि मे ही दोनो हृदय मिलकर एक हो जाते हैं और जीवन क्षेत्र मे प्रवेश करके एक दूसरे के साथी

बन जाते हैं। सुहागरात वर के लिये प्रेम मिलन की मान मनवार की मजुल मन मोहक सुखरात्रि है।

सुहाग थाल—

सुहागरात के दूसरे दिन प्रातःकाल देवी देवताओं को पूज ककरण डोरडे आदि का परिवर्तन करके सुहाग थाल का आयोजन सम्पन्न किया जाता है।

१. वर-वधू को एक साथ पर बैठाया जाता है।

२ दोनों एक दूसरे के मुह मे ग्रास देते हैं।

३ स्त्रियों हाथ मे रुपया लेकर वर-वधू को ग्रास देती हैं।

४. सुहाग थाल मे मीठे चावल या लपसी चावल ही बनाये जाते हैं।

५. वधू की मुंह दिखाई होती है। मुंह देखकर उसे भेंट दी जाती है।

इस प्रकार सुहाग थाल की रस्म पूर्ण होने पर सब कार्य विधिवत् शनैः शनैः समाप्त हो जाते है। देवी देवताओं का विसर्जन माया के गेह में शुभ दिन पर किया जाता है। अतिथियों को सादर विदा किया जाता है। सब अभ्यागत अतिथि वर वधू को आशीर्वाद देकर भावी जीवन के प्रति शुभ मंगल कामनाएं समर्पित करते हुए विदा होते हैं।

परिशिष्ट

वैदिक वधू

सूर्या का विवाह हुआ पूरे सास्कृतिक वातावरण मे—रैभी नामक ऋचाएँ उसकी सखी बनी। नराशसी ऋचाएँ उसकी दासी हुईऔर उसका सुन्दर वस्त्र साम गान द्वारा परिष्कृत हुआ। वह पतिगृह मे जाने लगी तब चैतन्य स्वरूप उसका चादर था। नेत्रो की शोभा ही उसका उवनट था और द्यावा पृथिवी ही उसके कोश थे स्तोत्र ही उसके रथचक्र के डडे थे। कुरीर नामक छन्द रथ का भीतरी भाग था। सूर्या के वर अश्विनी कुमार थे और अग्नि अग्रगामी दूत। सूर्या मन ही नम पति की कामना कर रही थी। वह पति के गृह मे गई। उसका मन ही शकट था, आकाश ही ओढना था और सूर्य-चन्द्रमा उसके रथवाहक हुए। ऋक्साम द्वारा वर्णित दो वृषभ रूप सूर्य चन्द्रमा उसके शकट को यहाँ से वहाँ ले जाने वाले हुए। सूर्या के दोनो कान उसके दो रथचक्र हुए। रथ के चलने का मार्ग हुआ आकाश। जाने के समय रथ के पहिए अत्यन्त उज्ज्वल थे। रथ मे अक्ष (डडा) जुडा हुआ था। वह पतिगृह मे जाने के लिए मन रूपी शकट पर चढी। उस समय सूर्य ने उसे चाद दिरया था वह आगे आगे चला। माघनक्षत्र के उदयकाल मे चादर (उपढौकन) के रूप मे प्रदत्त गायो को डडे से हाका जाता है और फाल्गुनी नक्षत्र मे उस चादर को रथ से ले जाया जाता है। पलाश और शाल्मली वृक्ष से निर्मित सुन्दर रथ से सूर्या पतिगृह को चली। वह पिता सूर्य और वरुण के बधनो से मुक्त होकर चली और जहाँ सत्कर्म का निवास है उस स्थान पर पति के साथ प्रतिष्ठित हुई। वह पितृगृह से मुक्त होकर भर्तृगृह मे प्रतिष्ठित हुई। (ऋ १०।८५)

वैदिक वर

सूर्या के वर अश्विनी कुमार तीन पहिए के रथ पर चढ़कर विवाह करने पहुँचे। सारे देवों ने उनके इस निश्चय का समर्थन किया। सूर्या का वरण करते समय समयानुसार चलने वाले सूर्य-चन्द्र उनके रथचक्र थे एक तीसरा गोपनीय चक्र था जिसे विद्वान् जानते हैं। अश्विनीकुमार सूर्या तथा अन्य प्राणियों के शुभचिन्तक है। सूर्य प्रतिदिन उनके लिए यज्ञभाग की व्यवस्था करने लगा। चन्द्रमा उन्हे चिरजीवन देने वाला हुआ। वह मार्ग कटकविहीन था जिसमे इनके मित्र कन्या के पिता के पास (बारात के रूप मे) गये। अश्विनीकुमार रथ से सूर्या को अपने घर लाते हैं। घर मे उसे गृहिणी का पद देते है। उसे घर की व्यवस्था आदि का काम सौंपते है। वृद्धावस्था तक घर की प्रभुता करने का अधिकार देते है। वे पत्नी से मलिन वस्त्र त्यागने के लिए कहते हैं। वे ब्राह्मणों को धन देते हैं और सब प्रकार की आशकाओ या दुर्भावनाओं से मुक्त होकर सयुक्तरूप से दाम्पत्य जीवन बिताने का सकल्प करते हैं। वे कभी पत्नी के वस्त्रो से अपना शरीर ढकने की चेष्टा नही करते क्योकि इससे उनका उज्ज्वल शरीर भी श्रीभ्रष्ट हो जाता है। अश्विनी कुमार कहते हैं—

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः॥

(तुम्हारे सौभाग्य के लिए तुम्हारा हाथ पकड़ा है। मुझे पति रूप मे पाकर तुमको वृद्धावस्था तक पहुँचना है। भग, अर्यमा और पूषा ने तुम्हें गृहधर्म चलाने के लिए मुझको दिया है।)

वह प्रार्थना करता है—

समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ॥

(सारे देवता हम दोनों के हृदयों को मिलायें। जल, वायु, धर्ता और सरस्वती हम दोनों को संयुक्त करें।) (ऋ० १०।८५)

घर और व्यवहार

स्त्री को गृहिणी माना गया है। 'गृहिणी गृह उच्यते'। स्त्री और घर को एक रूप माना गया है। स्त्री तथा घर के सभी मनुष्य परस्पर किस प्रकार व्यवहार करते है यही दाम्पत्य जीवन का आधार है। दाम्पत्य जीवन के निर्वाह के लिए घर की महती आवश्यकता है घर को आदर्श रूप बनाने के लिए दम्पती का परस्पर व्यवहार भी आदर्श होना चाहिए। वेद मन्त्रो के आदेशानुसार घर बहुत ही सादे होने चाहिए—अथर्ववेद मे लिखा है कि--

ऊर्जस्वती पयस्वती पृथिव्या निमिता मिता ।
विश्वान्न बिभ्रती शाले मा हिंसी प्रतिगृह्णत.। (अथर्व ६।३।१६).
तृणैरावृत्ता पलदान् वसाना रात्रीव शाला जगतो निवेशनी।
मिता पृथिव्या तिष्ठसि हस्तिनीव पद्वती। अथर्व. ६/३/१७)

अथर्ववेद के मन्त्रो के अनुसार गृहस्थ को किसी से विरोध नही करना चाहिए। गृहस्थाश्रम मे रहकर पूर्ण आयु प्राप्त करे तथा पुत्र और पौत्रो के साथ खेलते हुए तथा आनन्द करते हुए अपने ही घर मे रहे और घर को आदर्श रूप बनाये।

अब यह देखना है कि घर कैसा हो? घर वही उत्तम है जिसमे सद्गृहिणिया निवास करती हो। जिसमे गृहिणियो को अपनी गृहस्थी चलाने के लिए समस्त खाद्य और पेय पदार्थों को तैयार करने की सामग्री उपलब्ध हो। अथर्ववेद के एक मन्त्र के अनुसार स्त्री को यह कहा गया है कि हे स्त्री! तू दूध और घी को घडो मे भरकर उनकी धारा से इन पीने वालो को तृप्त कर और वापी कूप तडाग तथा दान आदि सब प्रकारो से इनकी रक्षा कर।

वैदिक मन्त्रो के अनुसार घरो में देव, ऋषि और पितरो की तृप्ति के लिए घी, दूध और फलो का विशाल आयोजन होना चाहिए तथा गृहस्थ को अपने इष्टमित्रो, अतिथियो और क्षुधापीडित मनुष्यो को अन्न, जल और सेवा

से तृप्त करना चाहिए। वेदमन्त्रो में अतिथि सत्कार न करने वाले और क्षुधातुरो को अन्न न देने वाले गृहस्थो की निंदा की गई है।

घर को व्यवस्थित बनाये रखने के लिए गृहस्थ को चाहिए कि वह उतना ही खर्च करे जितनी उसकी आमदनी हो। स्त्री के विना घर को भूतो का डेरा कहा गया है। अत स्त्री ही घर को चलाने में सक्षम होती है। दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने के लिए घर और व्यवहार दोनो ही अच्छे होने चाहिएँ। गृहस्थ आयु, बल कीर्ति, विद्या, धन और मोक्ष आदि इच्छाओं की प्राप्ति तभी कर सकता है जबकि उसका व्यवहार उत्तम हो। ऋग्वेद में दाम्पत्य प्रेम का वर्णन करते हुए लिखा है कि—

या दम्पती समनसा सुनुत आ च धावत ।
देवासो नित्ययाशिरा ।। (ऋग्वेद ८।३१।५

स्योनाद्योनेरधि बुध्यमानो हसामुदौ महसा मोदमानौ ।
सुगु सुपुत्रो सुगृहो तराथो जीवावुषसो विभात्ती.।। (अथर्व १४।२।४३)

घर के सभी व्यक्ति परस्पर प्रेम और विनोद के साथ व्यवहार करें। कौटुबिक व्यवहार का निम्न मत्र में कैसा सुन्दर वर्णन है—

अनुव्रत. पितु पुत्रो मात्रा भवतु समना ।
जाया पत्ये मधुमती वाच वदतु शन्तिवाम् ।।
मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाच वदत भद्रया ।। (अथर्व. ३।३०)

घर से सम्बन्ध रखने वाले अन्य जाति-बन्धुओ के सुख के लिए गृहस्थी को किस प्रकार की कामना करनी चाहिए—इसका भी वेद में उपदेश किया है—माता, पिता, जाति वाले, नौकर, चाकर और कुत्ते आदि सब सुख से सोवे। आत्मीय जन, पिता, पुत्र, पौत्र, पितामह, स्त्री, पितामही, माता और जो स्नेही हैं, उनको मैं आदर से बुलाता हूँ। जाति से सम्बन्ध रख ने वालो के साथ,ही मित्रो के साथ भी गृहस्थ का व्यवहार अच्छा होना चाहिए।

मनुष्य को अपने सुहृद जनो व समस्त प्राणियो से प्रेम, दया, समता, सहानुभूति और मित्रता का व्यवहार करना चाहिए। घर को सुदृढ बनाने के लिए पति पत्नी को व्यवहार कुशल होना चाहिए।

दाम्पत्य जीवन के लिए मंगल कामनाएँ

'सुयममस्तु' अर्थात् पतिपत्नी मिलकर रहे—सब इष्टमित्र इस कामना के साथ विवाह मे सम्मिलित होते है। सब प्रार्थना करते हैं कि वधू सौभाग्यवती और सुपुत्रवती हो। एक वैदिक मन्त्र मे कल्याणी वधू को आशीर्वाद देने का उल्लेख है—

सुमगलीरिय वधूरिमा समेत पश्यत।
सौभाग्यमस्यै दत्त्वायाथास्त वि परेतन॥ (ऋ. १०/८५/३३)

(सब आवें और इस शोभन कल्याण वाली वधू को देखें तथा स्वामी की प्रियपात्री बनने का आशीर्वाद देकर अपने अपने घर लौट जायें)

सबकी कामना है कि अग्नि ने सौन्दर्य और परमायु के साथ पत्नी पति को दी है। इसका पति दीर्घायु होकर सौ वर्ष तक जीवित रहे। एक अन्य मन्त्र मे आशीर्वाद है—

इहैव स्त मा व योष्ट विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे॥

(वर-वधू! तुम दोनो इस घर में रहो। परस्पर पृथक् मत होना। नाना खाद्य भक्षण करना। अपने घर मे पुत्र-पौत्रो के साथ आमोद, आह्लाद और क्रीडा करना)।

प्राप्त पत्नी को ब्रह्मा या प्रजापति सन्तान प्रदान करते हैं और अर्यमा वृद्धावस्था तक उन्हे साथ रखता है। वधू को वेद का आदेश है कि वह मगलमयी होकर पतिगृह मे रहे तथा मनुष्यो और पशुओ के कल्याण की सृष्टि करे।

अदुर्मंगली पतिलोकमा विश शन्नो भव द्विप दश चतुष्पदे ।।

वेदमत्रो मे पति और पत्नी के दाम्पत्य जीवन को इन शब्दो में व्यक्त किया गया है—

पत्नी निर्दोष नेत्रवाली बने, पति के लिए मगलमयी होवे, पशुओं के लिए मगलकारिणी होवे। उसका मन प्रफुल्ल होवे और सौन्दर्य शुभ्र हो। वह वीरप्रसविनी और देवो की भक्त बने। सबके लिए कल्याण की सृष्टि करे। इन्द्र उसे उत्तम पुत्रवाली और सौभाग्यशालिनी बनाये। उसके गर्भ से पति के समान तेजस्वी पुत्र और दस पुत्रो के समान एक कन्या पैदा हो। यह भी कामना है कि वह सास, ससुर, ननद और देवरो की सम्राज्ञी बने—

सम्राज्ञी श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्र्वा भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु ।। (ऋ. १०/८५/४६)